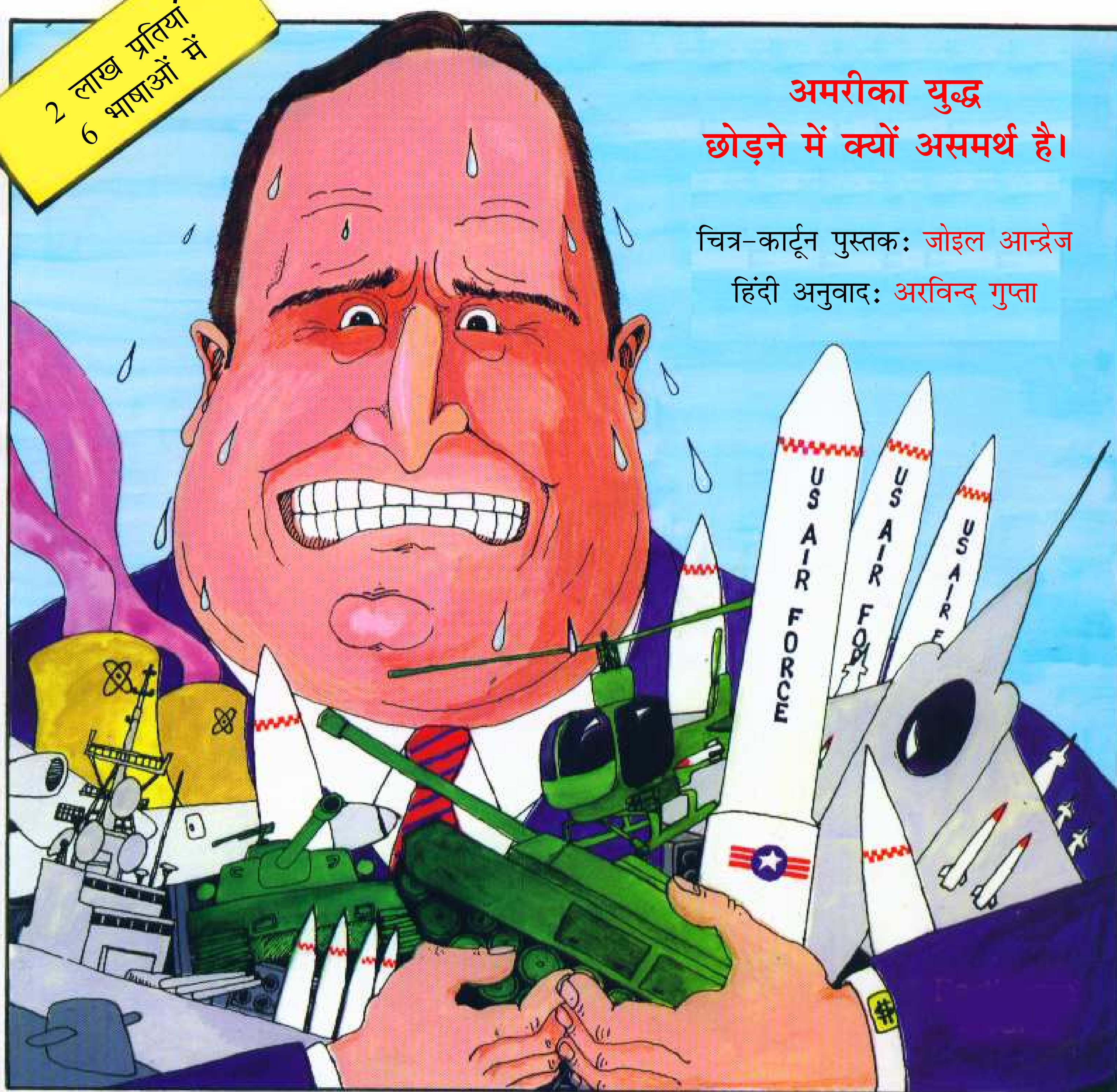
लड़ाई से लगाव


2 लाख प्रतियां
6 भाषाओं में
अमरीका युद्ध
छोड़ने में क्यों असमर्थ है।
चित्र-कार्टून पुस्तकः जोइल आन्द्रेज
हिंदी अनुवादः अरविन्द गुप्ता
US AIR FORCE
US AIR FORCE

***लड़ाईसेलगाव** पुस्तक दुनिया की सबसे बड़ी, ताकतवर और विनाशकारी सैनिक ताकत से टक्कर लेती है। पिछले कुछ सालों में अन्य देशों की तुलना में अमरीका बहुत ज्यादा युद्धों में उलझा रहा है। पैना-प्रहार करती और तथ्यों पर आधारित यह किताब अपने पक्ष में 145 सबूत पेश करती है। पुस्तक शुरू करने के बाद आप उसे पूरा पढ़े बिना रख नहीं पायेंगे। दो घंटों में खत्म होने वाली इस किताब को आप जल्दी भूल नहीं पायेंगे।*

'हमारे बच्चे इस सटीक और छोटी पुस्तक से युद्ध की जो सच्चाई सीखेंगे वो 12 साल की स्कूली पढ़ाई भी उन्हें नहीं सिखा पायेगी। इस प्रकार की जानकारी को बच्चों से छिपाना शिक्षक की मर्यादा पर एक कलंक है। इस पुस्तक का प्रचार करना चेतना-जागरण का एक जीवनदायी काम है।'

- ब्लेज बोनपने, निदेशक आफिस ऑफ द अमेरिकाज

'...एक अनूठा उपहार। मानवता की कद्र करने वाले हर इंसान को इस किताब को पढ़ना चाहिए। अगर विश्व में न्याय और शांति स्थापित करनी है तो इस पुस्तक के सत्य को समझना जरूरी है।'

- फादर रॉय बुरजुआ, संस्थापक स्कूल ऑफ अमेरिकाज वॉच

'**लड़ाई से लगाव** पुस्तक हमारी युद्ध पर आधारित अर्थव्यवस्था का एक मनोरंजक वर्णन है। मेनस्ट्रीम मीडिया ऐसा कभी कुछ पेश नहीं करता है। हमारे बच्चे मिलेट्री मशीन में पिसने से पहले इस किताब को जरूर पढ़ें।'

-सूजन सैंडरसन, अभिनेत्री

'अद्भुत! इस देश को सच में कौन चलाता है उसे समझने के लिए एक अव्वल दर्जे की प्राइमरी पुस्तक। चित्र इतने अनूठे हैं कि वो युद्ध जैसे भयावह विषय को भी रोचक बना देते हैं।'

-मिशेल रूपट, भूतपूर्व ड्रग्स आफिसर

'**लड़ाई से लगाव** पुस्तक एक बेहद महत्वपूर्ण और शक्तिशाली पुस्तक है।'

- रॉन कोविक, भूतपूर्व वियतनाम सैनिक और **बॉर्न ऑन फोर्थ जुलाई** के लेखक

'यह पुस्तक उन लोगों का विश्लेषण करती है जिन्हें मारकाट और लड़ाई से लगाव है। ऐटम-बम्ब के इस युग में युद्ध से पृथ्वी पर मानव जाति के साथ-साथ अन्य सभी जीवों का अंत हो सकता है।'

-हेलेन कैल्डीकाट, बाल विशेषज्ञ और **मिसाइल एन्वी** की लेखिका

'हथियारों की होड़ एक बहुत बड़ी मूर्खता है। मुझे उम्मीद है कि इस राजनैतिक कॉमिक-बुक का लोगों के दिलों-दिमागों पर जोरदार असर होगा।'

-एडवर्ड एस्नर, एक्टर

'**लड़ाई से लगाव** पुस्तक एक ऐसा जबरदस्त औजार है जिसमें देश को बदलने की ताकत है। इसकी लाखों-करोड़ों प्रतियां स्कूलों में पढ़ानी चाहिए।'

- रसल मीन्स, अमरीकी इंडियन पेट्रियाट

'हम खुद को **लड़ाई से लगाव** के कैसे बचायें? यह पुस्तक एक सुंदर शुरुआत है। इस पढ़कर लोग अवश्य सुधार का पथ अपनायेंगे।'

– कैथी कैली, संस्थापक वॉयसिस इन द विल्डरनेस

'जो लोग देश के राजनेताओं और सत्ताधारियों पर सवाल उठाने से डरते हैं यह पुस्तक उनके लिए सही इलाज होगी।'

– विलियम ब्लम, **किलिंग होप** एवं **रोग स्टेट** के लेखक

'यह शायद दुनिया की सबसे महत्वपूर्ण कॉमिक-बुक है। हर क्रांतिकारी और देशभक्त अमरीकी नागरिक को अपने देश की हिंसात्मक विदेश-नीति को समझना बेहद जरूरी है। मुझे आशा है कि आप इस पुस्तक को पढ़ने के बाद अन्य बहुत से लोगों को भी इसे जरूर पढ़वायेंगे।'

– वुडी हैरलसन, एक्टर

'अमरीकी विदेश-नीति की असली प्रकृति को समझने के लिए एक अनिवार्य पुस्तक।'

– मार्टिन शीन, एक्टर

'मैं इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि हमें धन और सत्ता से हटकर प्रेम और उदारता के मूल्य अपनाने चाहिए नहीं तो हम इसी शताब्दी में नष्ट हो जायेंगे। लोगों को जगाने के लिए और विनाश को रोकने के लिए हमें हर स्तर पर एक भूकम्प चाहिए। **लड़ाई से लगाव** एक ऐसा ही भूकम्प है।'

– पैच एडम्स, डाक्टर

'नई शताब्दी में प्रवेश करते समय सारी दुनिया हमें कैसे देखती है इसकी सच्ची झलक आपको **लड़ाई से लगाव** पुस्तक में मिलेगी।'

– क्रिस क्रिस्टोफरसन, संगीतज्ञ

'जब हमारे सैनिक इराक युद्ध के पीछे छिपी राजनीति और लालच को समझेंगे तो उन्हें भी उससे उतनी ही घृणा होगी जितनी की मुझे हुई थी। बहुत साल पहले कोरिया में काम करते हुए मुझे लगा था कि मैं एक अच्छे मिशन के लिए काम कर रहा था। पर जब असली सच्चाई ने मुझे झकझोरा तो मुझे बहुत गुस्सा आया – जैसे किसी ने मेरा अपमान किया हो। फिर मुझे कई भूतपूर्व सैनिक मिले जो अपने अनुभव, गुस्से और गम से लोगों को युद्ध की सच्चाईयों के बारे में शिक्षित कर रहे थे। उनसे मैं समझा कि मेरी नियत तो ठीक थी पर जिन नीतियों का मुझसे समर्थन करने को कहा गया था वे गलत थीं। हमने अपने अनुभवों के आधार पर युद्ध रोकने की शिक्षा देने की ठानी। इस मुहिम में **लड़ाई से लगाव** पुस्तक बहुत असरदार साबित होगी।'

– विल्सन वुडी पॉवेल, कार्यकारी निदेशक, वेटेरेन्स ऑफ पीस

'एक बात बिल्कुल स्पष्ट है। हम बम्बों से दुनिया को टुकड़ों में बांट सकते हैं पर शांति के लिए उनका उपयोग नहीं कर सकते।'

– मिशेल फ्रांटी, संगीतज्ञ (स्पीयर-हेड)

भारतीय संस्करण के लिए लेखक का आमुख

मैनें **लड़ाई से लगाव** पुस्तक को 1992 के अमरीका द्वारा इराकी हमले के बाद लिखा। अमरीका द्वारा छेड़े पिछले युद्धों की सच्चाई को लोगों से जानबूझ कर छिपाया गया था। मेरा उद्देश्य इस जानकारी को इकट्ठा करना था। इस काम से मेनस्ट्रीम मीडिया हमेशा कतराता है। अक्सर, युद्ध के समय मीडिया जंग का घोर समर्थक बन जाता है। मैं युद्ध के पीछे अमरीका की असली मंशा को भी उजागर करना चाहता था।

एक दशक के बाद की बदली हुई परिस्थितियों ने मुझे इस पुस्तक को दुबारा लिखने को मजबूर किया। बुश जूनियर के कार्यकाल में अमरीका के युद्ध से लगाव ने एक ऊंची छलांग लगाई। दिसम्बर 11, 2001 के हमले के बाद जार्ज बुश ने **आतंकवाद पर युद्ध** छेड़ने के बहाने एक कभी न खत्म होने वाली जंग की शुरुआत की।

लड़ाई से लगाव (*एडिक्टिड टू वार*) का दूसरा संस्करण 2002 में अफगानिस्तान पर अमरीकी हमले के बाद छपा। उसके बाद अमरीका ने इराक पर एक नया युद्ध छेड़ने की तैयारी शुरू की। ऊपरी तौर पर तो अमरीका आतंकवाद और विनाश के अस्त्रों पर बंदिश लगाने की दुहाई देता रहा। पर उसकी असली मंशा सबको एकदम स्पष्ट थी। वो खाड़ी में पिट्ठू सरकारें बनाकर अमरीकी हितों को सुरक्षित रखना और विश्व के दूसरे नम्बर के तेल भंडार पर अपना नियंत्रण कायम करना चाहता था।

इस भारतीय संस्करण के छपते समय अमरीकी सेना का इराक और अफगानिस्तान दोनों पर कब्जा है। इन देशों में सैनिक प्रतिरोध कुचलने के लिए वो लोगों के खिलाफ सख्ती अपना रहे हैं और उनके दिलों में डर भर रहे हैं। अमरीका के साथ-साथ पूरी दुनिया में इससे हिंसा और प्रतिहिंसा का एक दुश्चक्र शुरू हुआ है।

अमरीका के लड़ाई से लगाव की घरेलू कीमत को आम अमरीकी नागरिक अच्छी तरह समझ रहे हैं। सैनिकों और उनके परिवारजनों को इसकी सबसे ज्यादा कीमत चुकानी पड़ी है। पर इससे बाकी जनता भी प्रभावित हुई है। सुरक्षा पर बेइंतहा खर्च से सरकारी बजट लड़खड़ा रहा है। उससे शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास, परिवहन, और पर्यावरण संरक्षण जैसे महत्वपूर्ण मदों के खर्चे में कटौती हो रही है। साथ-साथ **आतंकवाद पर युद्ध** छेड़ने के बहाने सरकार पुलिस शिनाख्त कड़ी कर मानव अधिकारों का हनन करने पर तुली है।

अमरीका के लड़ाकू रवइये ने सारी दुनिया के लोगों को और अधिक खतरे में डाला है। इस खतरे को भारत सहित दक्षिण एशिया के तमाम मुल्कों में साफतौर पर महसूस किया जा सकता है। आतंकवाद और विनाश के शस्त्रों का अंत करने के नाम पर असल में अमरीका अपनी नीतियों से इन दोनों को बढ़ावा दे रहा है।

अमरीका द्वारा दो इस्लामी देशों पर कब्जा और साथ में फिलिस्तीन पर इजरायली कब्जे के समर्थन के कारण वहां हिंसा भड़क रही है।

रूस के पतन के बावजूद अमरीका आणविक हथियारों का विकास कर रहा है। उसने न्यूक्लियर मिसाइलों और परीक्षणों को रोकने वाली संधियों का बहिष्कार किया है। इसलिए अन्य देश भी अमरीका की नकल करने को मजबूर हैं। इस वजह से आज पूरे भारतीय महाद्वीप पर एक आणविक युद्ध का साया छाया है। आज पृथ्वी का कोई कोना सुरक्षित नहीं है। **लड़ाई से लगाव** पुस्तक मूलतः अमरीकी जनता के लिए लिखी गई थी। परंतु भारतीय पाठकों को भी उसे अवश्य पढ़ना चाहिए। अमरीका में ही नहीं पूरी दुनिया में ऐसे बहुत कम लोग हैं जिन्हें अमरीका के खूनी इतिहास की जानकारी हो। **लड़ाई से लगाव** पुस्तक में यह भी दिखाया गया है कि किस तरह अमरीकी नीतियां चंद ठेकेदारों और राजनेताओं को मालामाल कर रही हैं और आम जनता को कंगाल बना रही हैं।

भारत और अन्य देश अमरीका को एक जालिम और तानाशाह मुल्क जैसे देखते होंगे। वो सोचते होंगे कि अमरीकी जनता भी इस कुकर्म में शामिल होगी। पर अमरीका में युद्ध-विरोधी एक शानदार परम्परा है। यह युद्ध-विरोधी आंदोलन वर्तमान में मजबूती से उभर रहा है। इस किताब के जरिए हमारा प्रयास अमरीकी तानाशाहों के कुकर्मों पर बंदिश लगाना है। इस पुस्तक के प्रकाशन से भारत और अमरीकी जनता के संयुक्त युद्ध-विरोधी प्रयासों को बल मिलेगा और दोनों देश मिलकर दुनिया में अमन कायम करने की पहल करेंगे। क्योंकि अंततः हम सभी लोग 'एक ही नाव पर सवार हैं।'

इस पुस्तक में इतने लोगों का योगदान है कि सभी का धन्यवाद अदा करना सम्भव नहीं है। इसलिए मैं केवल

तीन व्यक्तियों का शुक्रिया अदा करूंगा। अपनी मां – कैरोल आन्द्रेज का जिन्होंने मुझ में युद्ध-विरोधी बीज बोये। अपने पिता कार्ल आन्द्रेज का जिन्होंने सर्वप्रथम मुझे इस पुस्तक को लिखने के लिए प्रोत्साहित किया और फ्रैंक डॉरैल का जिनके अथक प्रयासों के फलस्वरूप इस पुस्तक का 9/11 के बाद नया संस्करण लिखना सम्भव हो पाया।

मैं इस पुस्तक के भारतीय प्रकाशन के लिए *अर्थकेयर बुक्स* के भरत और विनीता मनसाटा का भी शुक्रिया अदा करना चाहता हूं।

जोल आन्द्रेज

बॉल्टीमोर, मेरीलैन्ड, अमरीका

दिसम्बर, 2003

भारतीय प्रकाशक का आमुख

बड़ी समस्याओं से दिमाग थक जाता है और कल्पनाशीलता बौनी हो जाती है। परंतु समस्याओं को नजरंदाज करके उनका कोई हल नहीं निकलता। जोल आन्द्रेज ने एक बहुत ही मुश्किल विषय चुना है और फिर उसे इतनी सरलता और खूबसूरती से पेश किया है कि कोई स्कूली छात्र भी आसानी से उसे समझ सके!

वर्तमान में युद्ध के विरोध के साथ-साथ सृजनशीलता भी जरूरी है। जिस तेजी से दुर्घटनाएं बढ़ रही हैं उनसे दुनिया का कोई भी कोना अछूता नहीं है। बड़ी-बड़ी संस्थाएं पगला गई हैं और उन्हें चुनौती देना जरूरी है। मात्र विरोध हमें जल्दी थका देगा। पर बेहतर भविष्य के लिए हम सभी को अपनी ऊर्जा के साथ अपने सृजनशील विचारों को संजो कर रखना होगा। तभी आशा की ज्योत जिंदा रहेगी। हमारी सृजना के लिए यह एक गहरी चुनौती है – एक ओर सामने खड़ी समस्या से जूझना और दूसरी ओर अपने बच्चों और नई पीढ़ी के लिए एक नई मानवीय दुनिया गढ़ना।

अगर मानवता का विकास होगा तो उसमें हर इंसान का विकास भी होगा। हमारी जिस चीज में निष्ठा होती है वो धीरे-धीरे सम्भव भी हो जाती है। जीवन का विकास एक अद्भुत प्रक्रिया है जो अपार मुश्किलों को लांघकर नई और बेहतर सम्भावनाएं खोलती है।

गांधीजी ने प्रसिद्ध अमरीकी दार्शनिक डेविड हेनरी थोरू के निबंध *सिविल डिसोबीडियेंस* (सविनय अवज्ञा) से प्रेरणा लेकर भारत में सत्याग्रह शुरू किया – जो सत्य और न्याय के पक्ष में एक जनआंदोलन था। बहुत साल पहले अमरीका में युद्ध-टैक्स न देने के इल्जाम में थोरू को अमरीकी सरकार ने गिरफ्तार कर जेल में बंद कर दिया था। थोरू अमरीका द्वारा मेक्सिको पर युद्ध छेड़ने और उसकी जमीन हड़पने का विरोध कर रहे थे। तभी अमरीका के नामी-गिरामी कवि रॉल्फ वॉल्डो इमरसन एक दिन थोरू से मिलने के लिए आए और उन्होंने मजाक में पूछा, 'तुम यहां जेल के अंदर क्या कर रहे हो?' थोरू ने तुरंत उत्तर दिया, 'तुम वहां बाहर क्या कर रहे हो?'

यह जरूरी है कि हम सब मिलकर एक बेहतर समाज की कल्पना करें और उसे रचें। इस कृत से शायद इस पुस्तक में एक नया अध्याय जुड़े, 'युद्ध से मुक्ति' या 'कैसे अमरीका और दुनिया ने युद्ध से नाता तोड़ा'।

यह सच है कि हमारी समस्याएं बहुत गम्भीर हैं और हमें एक चमत्कार की तलाश है। पर हमारे चारों ओर प्रकृति ऐसे चमत्कारों से भरी पड़ी है। हरेक फूल का खिलना, हर नवजात शिशु का आगमन इस बात का प्रमाण है कि उस अनदेखी, अनजान शक्ति ने अभी भी पृथ्वी से अपना नाता नहीं तोड़ा है और न ही इंसानियत में अपनी उम्मीद खोई है।

यही वक्त है कि हम सभी लोग मिलकर सोचें, मनन करें और अपनी सृजनशील प्रेरणा में गहरी डुबकी लगाकर इंसानियत के लिए सच्चा और नेक काम करें।

भरत मनसाटा

अमरीकी और अनुवादित संस्करणों पर एक नोट

मैंने **लड़ाई से लगाव** के मूल 1992 के संस्करण को तीन साल पहले पढ़ा। मुझे सचमुच किताब इतनी सुंदर लगी कि मैंने सबसे पहले पुस्तक की 100 प्रतियां खरीदने की ठानी। तब मुझे मालूम पड़ा कि पुस्तक की छपी प्रतियां अनउपलब्ध हैं। मैंने पुस्तक के लेखक जोल आन्द्रेज से सम्पर्क साधा और उनसे किताब को अपडेट करने का आग्रह किया। अप्रैल 2002 में, ए के प्रेस की मदद से मैंने पुस्तक का नया संस्करण प्रकाशित किया। किताब को जबरदस्त प्रतिक्रिया मिली और पाठकों ने बहुत सराहा। तब से अमरीका में ही इसकी एक लाख से अधिक प्रतियां बिकी हैं।

अमरीका में **एडिक्टिड टू वॉर** को बहुत से हाई स्कूल और कॉलेज शिक्षकों ने पाठ्य-पुस्तक जैसे उपयोग किया है। शांति के लिए कार्यरत संस्थाएं इसकी प्रतियों अपनी रैलियों और बैठकों में बेंच रही हैं। इस पुस्तक की प्रतियों को अब स्कूलों, चर्चों और स्थानीय लाइब्रेरियों में देखा जा सकता है। अब किताबें बेंचने वाली बहुत सी दुकानें, स्वतंत्र वितरक और नैशनल चेन्स और कॉमिक-बुक स्टोर्स इसे बेंच रहे हैं। बहुत से लोग इसकी ढेरों प्रतियां खरीद कर अपने मित्रों, रिश्तेदारों और सहकर्मियों को भेंट कर रहे हैं। मुझे अभी तक इस पुस्तक की प्रशंसा में हजारों लोगों ने टेलीफोन किया है, ई-मेल्स और पत्र लिखे हैं!

हमारा इरादा इस पुस्तक पर आधारित एक डाक्युमेंट्री, रेडियो प्ले और नाटक तैयार करना है। **एडिक्टिड टू वॉर** के जापानी अनुवाद की 70,000 प्रतियां बिक चुकी हैं। पुस्तक के कोरियन, जर्मन, स्पैनिश, डच और थाई संस्करण या तो छप चुके हैं या प्रकाशन के लिए लगभग तैयार हैं। अगर आपकी **एडिक्टिड टू वॉर** को अनुवाद कर छापने में रुचि है तो मुझसे सम्पर्क साधें।

फ्रैंक डोरेल

पी ओ बॉक्स 3261

कल्वर सिटी, सीए 90231-3261, अमरीका

310.838.8131

fdorrel@addictedtowar.com

www.addictedtowar.com

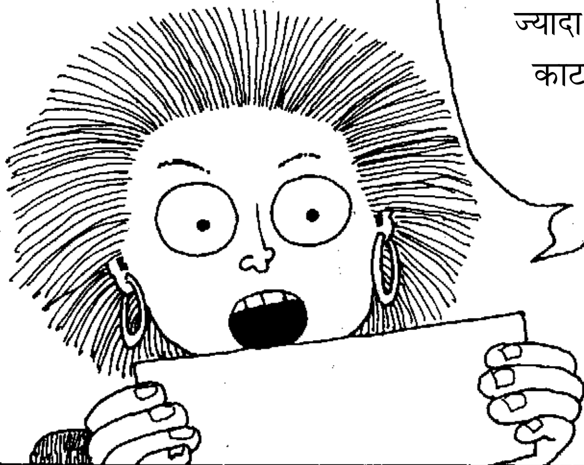
दिसम्बर 2003

.

ANYONE WISHING TO PUBLISH THE HINDI TRANSLATION SHOULD CONTACT:

Roam Agency (www.roamagency.com)

यह कहानी शुक्रवार की शाम को शुरु होती है।

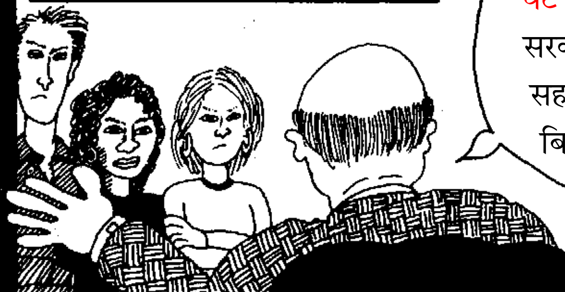


उस दिन शाम को:



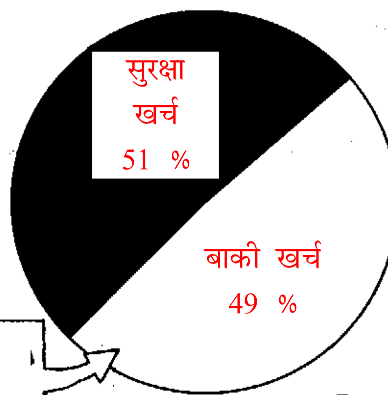


स्कूल के बोर्ड की अगली मीटिंग में:





हमारे टैक्स का बहुत बड़ा हिस्सा फौज को बनाये रखने में जाता है। हमारी सरकार अपनी आधी से ज्यादा आमदनी फौज पर खर्च करती है।

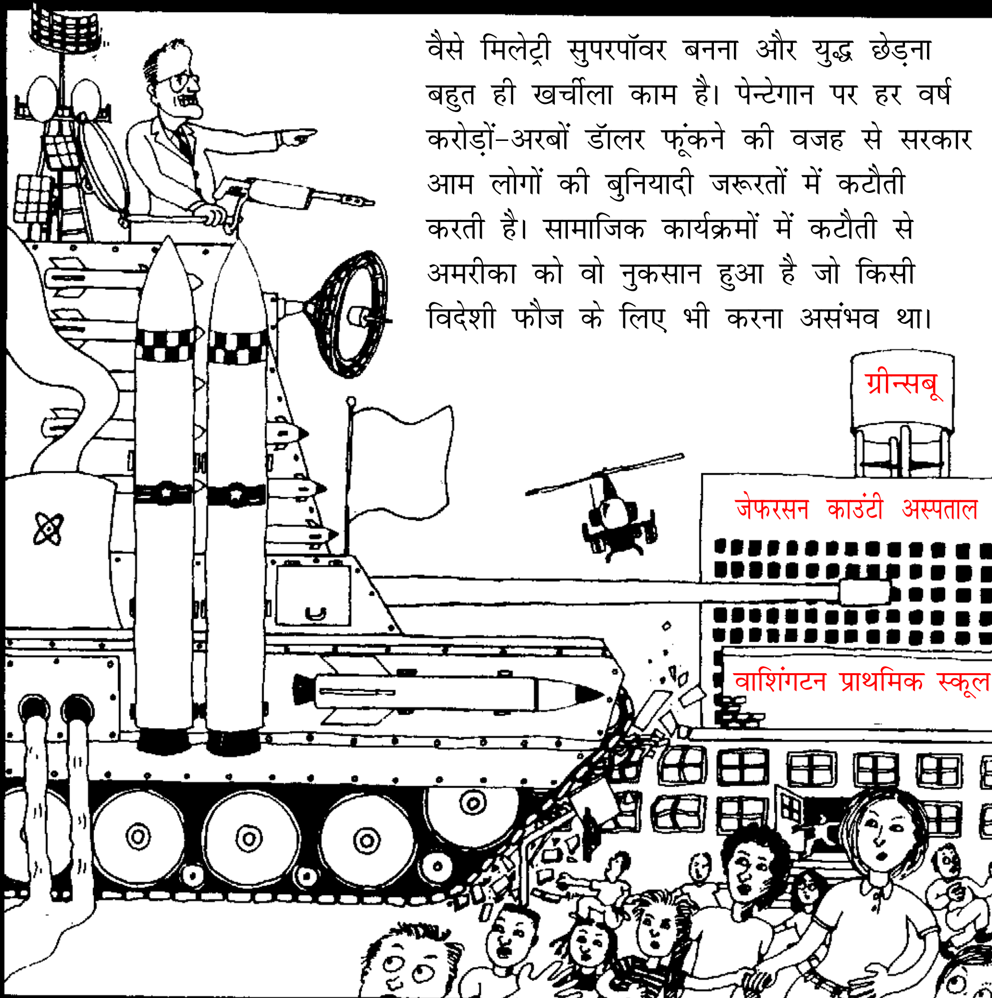




अमरीका के पास दुनिया की सबसे बड़ी और ताकतवर फौज है। अमरीकी युद्धपोतों का सभी महासागरों में दबदबा है। उसकी मिसाइलें दुनिया के किसी भी महाद्वीप पर मार कर सकती हैं और उसके सैकड़ों-हजारों सैनिक अन्य देशों में तैनात हैं। हर चंद सालों में अमरीका अपने सैनिकों, युद्धपोतों और बाम्बर वायुयानों को दूर-दराज के देशों में लड़ाई के लिए भेजता है। वैसे तो बहुत से देश युद्ध लड़ते हैं परंतु अमरीका इनमें सबसे अनूठा है - उसकी फौजी ताकत बेमिसाल है और वो उसका बेइंतहा इस्तेमाल करता है।



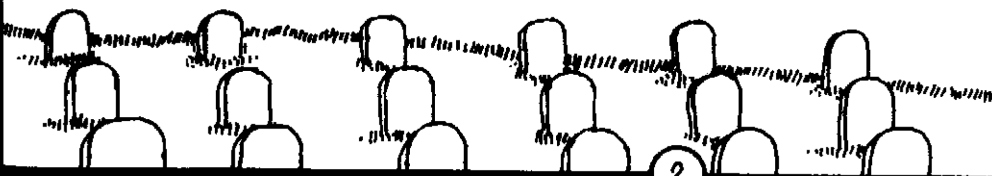
वैसे मिलेट्री सुपरपॉवर बनना और युद्ध छेड़ना बहुत ही खर्चीला काम है। पेन्टेगान पर हर वर्ष करोड़ों-अरबों डॉलर फूंकने की वजह से सरकार आम लोगों की बुनियादी जरूरतों में कटौती करती है। सामाजिक कार्यक्रमों में कटौती से अमरीका को वो नुकसान हुआ है जो किसी विदेशी फौज के लिए भी करना असंभव था।



विदेशों में लड़े युद्धों के कारण अमरीका को आतंकवादी हमले झेलने पड़ते हैं - जैसे कि **पेन्टेगान** और **वर्ल्ड ट्रेड सेंटर** पर हुए हमले।

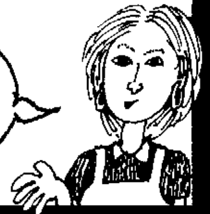


अमरीकी विदेशों युद्धों को सिर्फ पैसों में नहीं आंका जा सकता है। युद्ध में बहुत से लोग अपनी जान से भी साथ धोते हैं और वतन वापस नहीं लौटते।





दो शताब्दी पूर्व यूनाइटेड स्टेट्स अटलांटिक महासागर के तट पर तेरह छोटे गुटों का एक समूह था। पर आज उसका रुतबा पूरी दुनिया पर इस तरह छाया है जिसकी कल्पना अतीत का सबसे शक्तिशाली साम्राज्य भी कभी कर नहीं सकता था।





अध्याय एक
‘अलौकिक भविष्य’

1776 में अमरीकी क्रांतिकारियों ने सम्राट जार्ज का मुकाबला किया। इन क्रांतिकारियों ने हर देश से खुद अपना भविष्य तय करने का वादा किया।



थॉमस जेफरसन (1776 की आजादी के फरमान से)

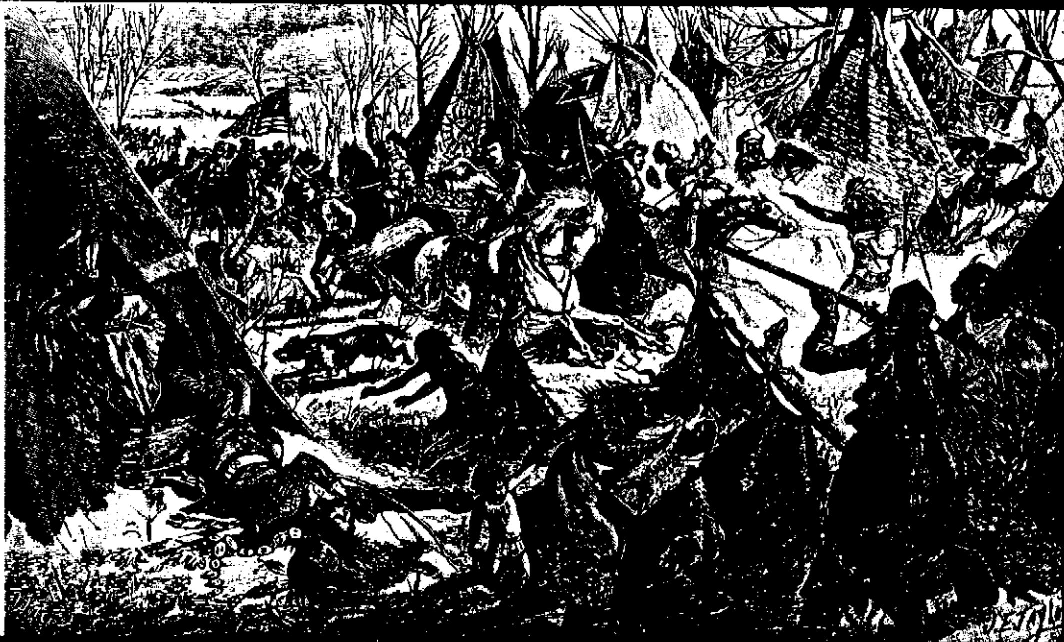


नई स्वतंत्र कालोनियों के नेताओं को लगा कि वो सम्पूर्ण उत्तरी अमरीका पर राज्य करने के लिए पैदा हुए थे। उनको यह बिल्कुल स्पष्ट था। उन्होंने इसे **‘अलौकिक भविष्य’** करार दिया।



मेरीलैन्ड के **गाइल्स**

इस **अलौकिक भविष्य** को पाने के लिए गोरों ने स्थानीय अमरीकी **आदिवासियों का खात्मा किया।** अमरीकी फौज ने उनकी जमीन हड़पी और उन्हें पश्चिम की ओर पलायन करने को मजबूर किया। विरोध करने वालों को तुरंत कत्ल कर दिया गया।



क्रांति के बाद की शताब्दी में अमरीका के मूल आदिवासियों की एक-एक करके हार हुई। उनकी जमीन हड़पने के बाद उन्हें **रिजर्वेशन्स** की सीमाओं में बांधा गया। उनमें से कितनों की बलि चढ़ी यह हिसाब किसी के पास नहीं है। परंतु यह दुख उनकी मौत तक सीमित नहीं रहा। उनकी सम्पूर्ण संस्कृति ही तहस-नहस हो गयी।

(3) (4)

'मुझे अब भी साफ याद है महिलाओं और बच्चों का कत्ल - लाशों के ढेर जिन्हें मैंने अपनी जवानी में देखा। परंतु लाशों के साथ-साथ खूनी मिट्टी में कुछ और दफन हो गया और तूफान में सदा के लिए खो गया। लोगों के सपने सदा के लिए मर गये। वो सुंदर सपने थे - अब देश का छल्ला टूट चुका है और सारे मोती बिखर चुके हैं।'

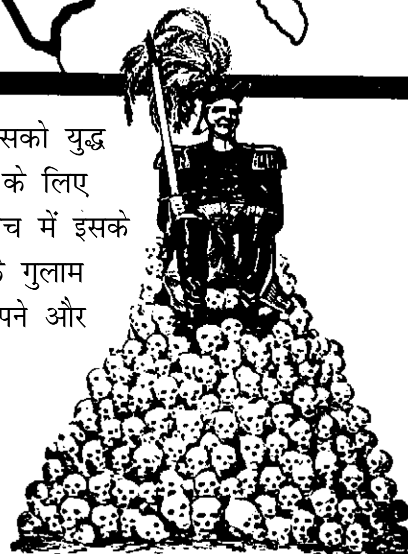


ब्लैक एल्क - अमरीकी **लकोटा** लोगों के धार्मिक गुरू और दक्षिण डकोटा स्थित **वून्डिड नी** के जानलेवा हमले में बचने वाले।

1848 तक अमरीका ने मेक्सिको की लगभग आधी भूमि हड़प ली थी।



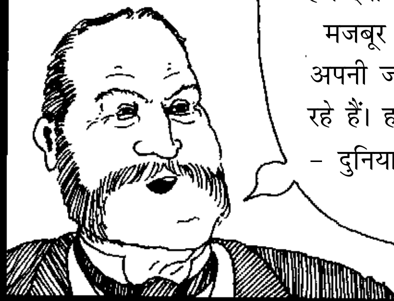
अमरीकी कांग्रेस ने मेक्सिको युद्ध को **प्रजातंत्र** के उत्थान के लिए सही करार दिया। पर सच में इसके पीछे दक्षिण अमरीका के गुलाम मालिकों की जमीन हड़पने और पश्चिम का सोना लूटने की ललक थी।



जनरल **जैकरी टेलर** ने मेक्सिको में लड़ने से मना (5) वाले सैकड़ों अमरीकी फौजियों का कत्ल करवाया।

जब उनका साम्राज्य एक तट से दूसरे तट तक फैल चुका तब **अलौकिक भविष्य** के सौदागरों ने समुद्र के उस पार अपना साम्राज्य स्थापित करने का सपना संजोया। सपने के पीछे स्पष्ट आर्थिक कारण थे। कर्नल **चार्ल्स डेनबी** इस साम्राज्यवादी फैलाव के पक्षधर थे और एक रेल कम्पनी के मालिक थे। उनके अनुसार:

'हमारे देश की आंतरिक परिस्थितियां हमें इस व्यावसायिक फैलाव के लिए मजबूर कर रही हैं। दिनों-दिन हम अपनी जरूरतों से ज्यादा उत्पादन कर रहे हैं। हमें अब बाजार की जरूरत है – दुनिया के सबसे बड़े बाजार की।'



6

साम्राज्य स्थापना की आवाज अब वाशिंगटन के गलियारों में भी गूंजने लगी।

'मेरा पूरी तरह मानना है कि जब कभी भी हमें अपनी सीमाओं से बाहर जमीन की जरूरत पड़े – चाहें वो सुरक्षा या फिर व्यावसायिक फैलाव के लिए हो, हमें बिना वक्त खोए ऐसी जमीन को तुरंत कब्जे में लेना चाहिए।'



कनेक्टीकट के सेनेटर **औरवेल प्लैट** (1894)

7

विश्व की प्रमुख शक्ति बनने के लिए अमरीका ने एक विश्वस्तरीय नौसेना स्थापित की। इस कार्य के लिए अतिउत्साही थेओडोर रूजावेल्ट को नियुक्त किया गया।

8

'मैं किसी भी युद्ध का स्वागत करूंगा। मेरे अनुसार इस देश को युद्ध की जरूरत है।'



टी रूजावेल्ट, 1897

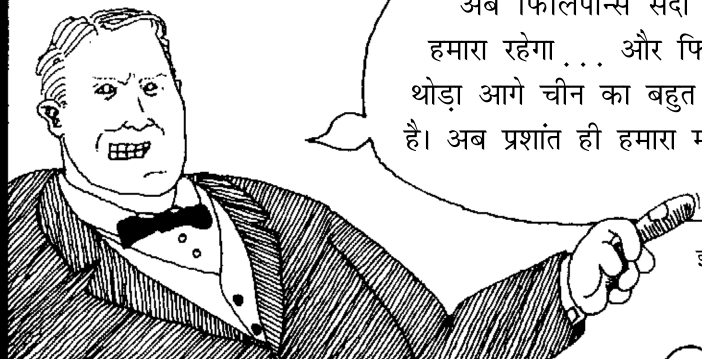
उन्हें ज्यादा इंतजार नहीं करना पड़ा।



अगले वर्ष कुछ स्पैनिश कालोनियों पर अमरीका की लार टपकी। इनमें क्यूबा और फिलिपीन्स शामिल थे। अमरीका ने स्पेन पर युद्ध छेड़ दिया। इन देशों में पहले से ही कुछ विद्रोही फौजें स्वतंत्रता के लिए लड़ रही थीं जिससे स्पेन वैसे ही हार की कगार पर था। मौके का फायदा उठाते हुए वाशिंगटन ने तुरंत विद्रोहियों का दामन पकड़ा जिससे स्पेन तुरंत हार गया। परंतु अमरीका ने अपना उद्देश्य स्पष्ट जाहिर कर दिया – वो वहां से जल्दी हटने वाला नहीं था।

9

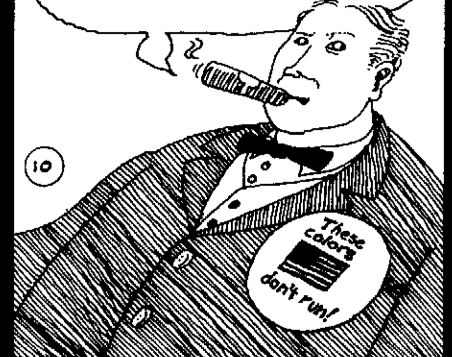
'अब फिलिपीन्स सदा के लिए हमारा रहेगा . . . और फिलिपीन्स के थोड़ा आगे चीन का बहुत बड़ा बाजार है। अब प्रशांत ही हमारा महासागर है।'



इन्डियाना के सेनेटर **अल्बर्ट बेवरिज** (1900)

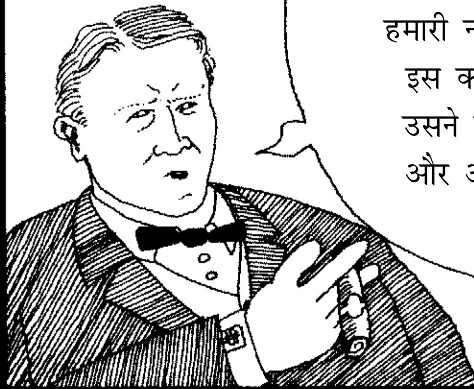
और सेनेटर बेवरिज के लिए प्रशांत तो बस एक शुरुआत भर थी:

'जो ताकत प्रशांत महासागर पर राज्य करेगी उसका प्रभुत्व पूरे विश्व में छायेगा। अब उस सत्ता की लगाम हमेशा अमरीका के हाथ में रहेगी।'



10

औपनिवेशवाद को सही करार देने के लिए **रंगभेद** और **नस्ल** की तमाम अवधारणाएं रची गयीं। वाशिंगटन ने इन्हें तुरंत स्वीकार किया।



'हमारी नस्ल दुनिया पर शासन करने वाली नस्ल हैं। भगवान द्वारा सौंपे इस मिशन को हमारी नस्ल कभी नहीं भूलेगी। भगवान ने हमें इस काम को अंजाम देने के लिए चुना है। उसने हमें सरकार चलाने के गुर सिखाए हैं और अब हम वहशी और पागल लोगों को काबू रखने में भी सक्षम हैं।'

11

इन्डियाना के सेनेटर **अल्बर्ट बेवरिज**



पर फिलिपीन्स के लोग सेनेटर अल्बर्ट बेवरिज और उनके शार्गिदों की बातों से सहमत नहीं थे।

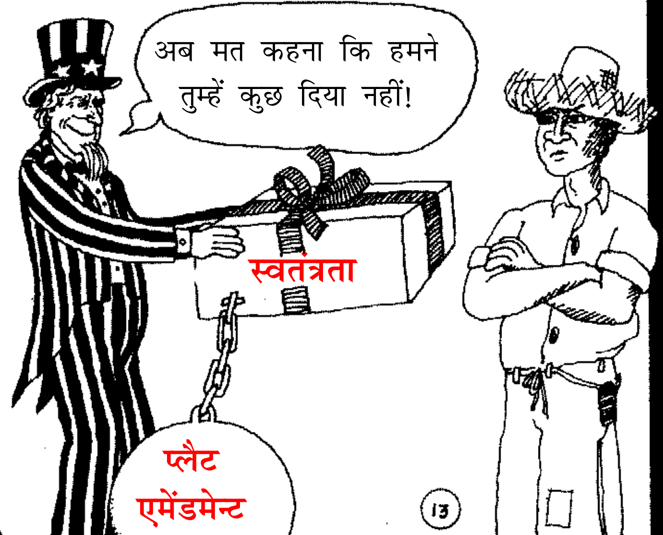
उन्होंने आक्रमणकारियों के साथ वैसे ही लड़ाई की जैसी उन्होंने स्पेन के साथ की थी। अमरीका ने फिलिपीन्स को अपने सैनिक बल से बुरी तरह कुचला। अमरीकी सैनिकों को आदेश था **सब को जलाओ, सब को मार डालो** और उन्होंने उसे बखूबी निभाया। हार से पहले करीब 6 लाख फिलिपीनो मारे गए।

12



मारे गए फिलिपीनोज की हड्डियों पर खड़े हुए अमरीकी सैनिक।

1898 में फिलिपीन्स, पुअरटो रिको और गुआम अमरीकी कालोनी बने। क्यूबा को औपचारिक तौर पर स्वतंत्रता दी गई पर साथ में शर्त थी – **प्लैट एमेंडमेन्ट** जिसके अनुसार क्यूबा में अमरीकी नौसेना हमेशा के लिए अपना अड्डा बनाए रख सकेगी। साथ में अमरीकी फौज जब चाहे हस्ताक्षेप कर सकेगी और वाशिंगटन का क्यूबा की विदेशी और आर्थिक नीतियां तय करने का हक होगा।



13

उसी काल में अमरीका ने हवाई द्वीप की रानी लिलीवोकालानी का तख्ता पलटा और प्रशांत सागर में बसे इन सुंदर द्वीपों को अपने नौसेना अड्डे में बदला। 1903 में राष्ट्रपति बनने के बाद थियोडोर रूजावेल्ट ने नौसेना भेज कर पनामा को कोलम्बिया से अलग किया। कारण? कोलम्बिया सरकार ने रूजावेल्ट द्वारा कैनाल बनाने के प्रस्ताव को ठुकरा जो दिया था।

अगर वो न बेंचें तो छीन लो!



उसके बाद से अंकल सैम अपनी फौज को सभी दिशाओं में भेजने लगे।



(14)

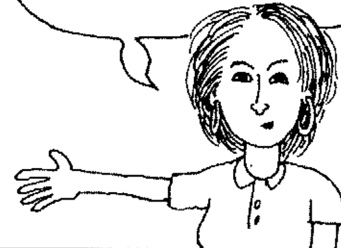
जल्द ही अमरीकी फौज चीन, रूस, उत्तरी अफ्रीका, मेक्सिको, मध्य अमरीका और कैरिबियन में पहुंची।

(15)



1918 में रूस पर छेड़े युद्ध के दौरान साईबेरिया में अमरीकी फौज

1898 और 1934 के बीच अमरीकी सेना के हमलों का लेखाजोखा: क्यूबा पर 4 बार, निकारागुआ पर 5 बार, होंडुरस पर 5 बार, डोमनिकन रिपब्लिक पर 4 बार, हेयटी दो बार, गुआटामाला एक बार, पनामा दो बार, मेक्सिको 3 बार, और कोलम्बिया पर 4 बार!

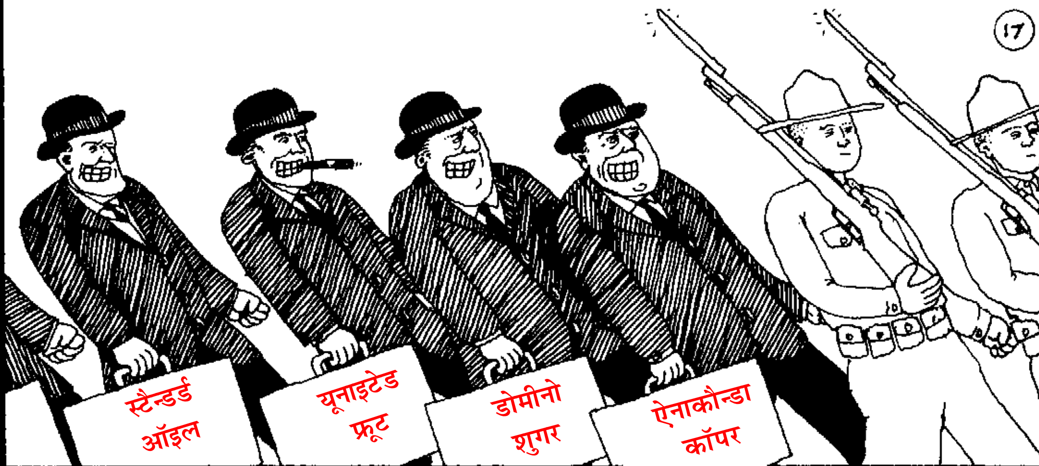


(16)

बहुत से देशों पर आक्रमण करके अमरीकी फौज उन्हीं देशों में कई दशकों तक टिकी रही। इन देशों को छोड़ने से पहले अमरीकी फौज ने वहां की सत्ता **दोस्त तानाशाहों** के हाथों में सौंपी। फौज ने तानाशाहों को किसी भी **जनआंदोलन को कुचलने** के लिए हथियारों से लैस किया गया।



इन देशों में अमरीकी फौज के पीछे-पीछे कौन आये? अमरीकी व्यापारी और उद्योगपति। वो न केवल अपनी चीजें बेंचने आये, वो वहां खेती, तेल के कुएं और खदाने खरीदने और चलाने आये। उद्योगों में मजदूर गुलामों जैसे पिसें इसे मनवाने के लिए अमरीकी फौज तत्परता से तैयार थी। कोई भी मजदूर आंदोलन सम्भव ही नहीं था।



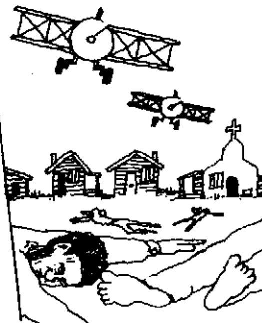
'अमरीकी पूंजीपतियों को अच्छे मुनाफे का मौका मिले इसके लिए सही परिस्थितियों के निर्माण के लिए मैंने कोई कसर बाकी नहीं छोड़ी।'



राष्ट्रपति विलियम हॉवर्ड टाफ्ट (1910)

अमरीकी फौज ने 1915 में हेयटी में एक किसान आंदोलन को जब कुचला तब एक रिपोर्टर ने उसका इस तरह वर्णन किया:

'अमरीकी वायुसेना ने हवाईजहाजों से निहत्थे हेटियन्स पर मशीन-गनों से गोलियां बरसायीं। उन्होंने अपने शौक के लिए खुले बाजार में ग्रामीण मर्दों, महिलाओं और बच्चों को गोलियों से भूना।'



50,000 हेयटी निवासियों की मौत हुई

19 20

जनरल स्मेडली बटलर इन आक्रमणों की अगुवाई के लिए प्रसिद्ध हुए। रियाटर होने के बाद उन्होंने अपनी अनूठी जिंदगी को इन शब्दों में बयां किया:

'मैंने कुल 33 साल और 4 महीने मिलेट्री सर्विस में गुजारे। इस दौरान मैंने वॉल-स्ट्रीट के बड़े उद्योगपतियों और बैंकों के लिए एक उच्च-कोटि के **गुंडे** का काम किया। असल में मैं पूंजिपतियों का प्रमुख हितैशी और गुंडा था।'



'अपने कारनामों से मैंने 1914 में मेक्सिको को, विशेषकर टैम्पिको को अमरीकी ऑयल हितों के लिए सुरक्षित बनाया। मैंने हेयटी और क्यूबा में नैशनल सिटी बैंक को सुरक्षा दी जिससे वहां के अफसर धन वसूल सकें। मैंने आधा दर्जन मध्य अमरीकी देशों का बलात्कार किया जिससे कि वॉल-स्ट्रीट के पूंजीपति वहां अपना झंडा गाढ़ सकें।'



‘1902 से 1912 के बीच मैंने निकरागुआ को ठिकाने लगाया जिससे कि ब्राउन ब्रदर्स का बैंक वहां अच्छी तरह चले। 1916 में अमरीकी चीनी उद्योगपतियों के हितों के लिए मैंने डोमनिकन रिपब्लिक में बिजली का उत्पादन शुरू करवाया। 1903 में होन्डुरस को अमरीकी फ्रूट कम्पनी के लिए फिट किया। 1913 में चीन में स्टैन्डर्ड आयॅल के व्यापार को बिना रोकटोक चलने दिया।’



21



चित्र में एक अमरीकी फौजी अपने हाथ में निकरागुआ विद्रोही सिल्वीनो हेरेरा की मुंडी पकड़े है। सिल्वीनो, 1930 में ऑगस्टो सैन्डीनो की विद्रोही फौज के नेता थे।

पहला महायुद्ध दरअसल यूरोपीय औपनिवेशिक ताकतों द्वारा सारी दुनिया को आपस में बांटने की हविश का नतीजा था। राष्ट्रपति **वुडरो विल्सन** ने इस युद्ध में भाग लेने से पहले अमरीकी नागरिकों को साफ बताया कि वो अमरीकी फौज को इसलिए भेज रहे हैं जिससे कि **दुनिया प्रजातंत्र के लिए एक सुरक्षित जगह बन सके।**



The Chicago Daily Tribune

FINAL EDITION

U.S. AT WAR: WILSON

U-BOAT SINKS AZTEC, ARMED U.S. STEAMER

NOW FOR THE DEEDS

WARNINGS TO GERMANY!

BOTH HOUSES HASTEN WORK ON PROGRAM

"WE MUST FIGHT FOR JUSTICE AND RIGHTS"

पर विल्सन का मकसद कुछ और ही था। वो यूरोपीय **बंदर-बांट** में अमरीका का हिस्सा खोज रहे थे।



विल्सन के इंग्लैन्ड स्थित राजदूत ने जर्मनी पर अमरीकी हमले को साफ शब्दों में व्यक्त किया:

22

‘अमरीका के व्यापारिक वर्चस्व को बरकरार रखने के लिए यही एक मात्र विकल्प है।’



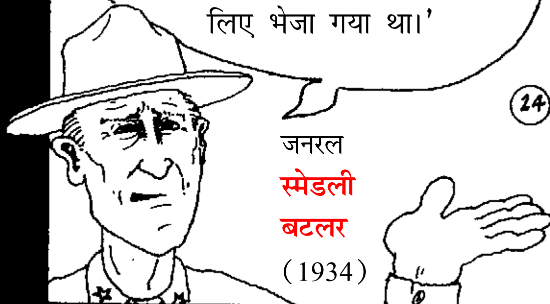
डब्लू एच पेज – राजदूत (1917)



इसके लिए 130, 274 अमरीकी सैनिकों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा।

23

‘हम सैनिकों को दूर-देशों में सुंदर आदर्शों के लिए मरने भेजते थे। उन्हें कोई यह नहीं बताता था कि असल में पूंजीपतियों द्वारा डॉलर और सेंट कमाने के लिए उन्हें मारने और मरने के लिए भेजा गया था।’



प्रथम महायुद्ध का मकसद था, ‘बाकी सारे युद्धों को खत्म करना’।



द्वितीय महायुद्ध में लाखों युवा अमरीकी जर्मन फासीवाद और जापानी औपनिवेशिकवाद से लड़ने के लिए सेना में भर्ती हुए। परंतु वाशिंगटन में बैठे उस्ताद योजनाकारों का उद्देश्य काफी कुटिल था।



अक्टूबर 1940 में जब जर्मनी और जापान की सेनाएं यूरोप और एशिया में प्रवेश कर रही थीं तब अमरीकी सरकार ने अपने उच्च अफसरों, नौकरशाहों, व्यापारियों, पूंजीपतियों और बैंकर्स द्वारा अमरीकी रणनीति निर्धारित करने के लिए एक मीटिंग बुलाई। वो अमरीकी **प्रभुत्व के दायरे** को बरकरार रखने के इच्छुक थे। इसमें ब्रिटिश साम्रज्यवाद के पश्चिम अर्धगोल के कुछ देश भी शामिल थे। मीटिंग में निर्णय लिया गया कि अमरीका को युद्ध के लिए तैयार रहना चाहिए और...

‘..साथ-साथ अमरीकी सैनिक और आर्थिक प्रभुत्व को कायम रखने के लिए एक संपूर्ण योजना तैयार करनी चाहिए।’





अगर युद्ध का उद्देश्य महज अमरीकी औपनिवेशिकवाद तक सीमित रखा गया तो उसमें दुनिया के लोगों की बहुत कम रुचि होगी। इसलिए अन्य लोगों के हितों पर अधिक जोर दिया जाए। प्रचार-प्रसार की नजर से इसका बहुत अच्छा प्रभाव होगा।

26



स्टेट डिपार्टमेंट और विदेश विभाग के बीच पत्र व्यवहार से।

युद्ध एक भीषण आक्रमण से शुरु हुआ जिसमें दो लाख लोग तत्काल मारे गये। अमरीका ने जापान के दो शहरों **हिरोशिमा** और **नागासाकी** पर **ऍटम-बम्ब** गिराये। रेडियेशन के प्रभाव से बाद में हजारों लोगों की और मृत्यु हुई।

27

'भगवान से प्रार्थना है कि ऍटम-बम्ब के सही उपयोग में वो हमारी सहायता करे।'

राष्ट्रपति **हैरी ट्रूमैन**
(1945)

28



ऍटम-बम्ब के गिरने से पहले ही जापान की हार सुनिश्चित हो चुकी थी। बम्ब गिराने का असली मकसद कुछ अलग था। अमरीका अपने ऍटम-बम्ब की भयानक शक्ति से दुनिया को अवगत कराना चाहता था।

29

द्वितीय महायुद्ध ने अमरीका के राजनैतिक, आर्थिक और सैनिक वर्चस्व में चार चांद लगाये।

'हमें विकास की गति निर्धारित करके विश्व नामक कम्पनी में 'बहुसंख्यक स्टॉकहोल्डर' का रोल निभाना चाहिये।'

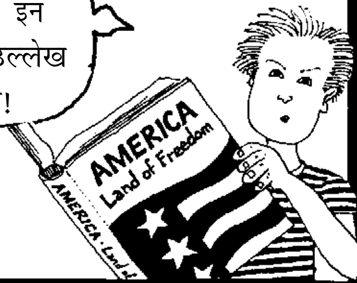
लियो वेल्च, स्टैन्डर्ड ऑइल कम्पनी (वर्तमान में एक्सान) के भूतपूर्व चेयरमैन
(1946)



30

अमरीका ने अपने कंधों पर ली जिम्मेदारी को बखूबी निभाया। उसने विश्व कारपोरेशन की छोटी कम्पनियों की आर्थिक योजना और मैनेजमेंट तय किया।
परंतु बहुत से देशों में - विशेषकर स्वतंत्र देशों में इसका काफी विरोध भी हुआ।



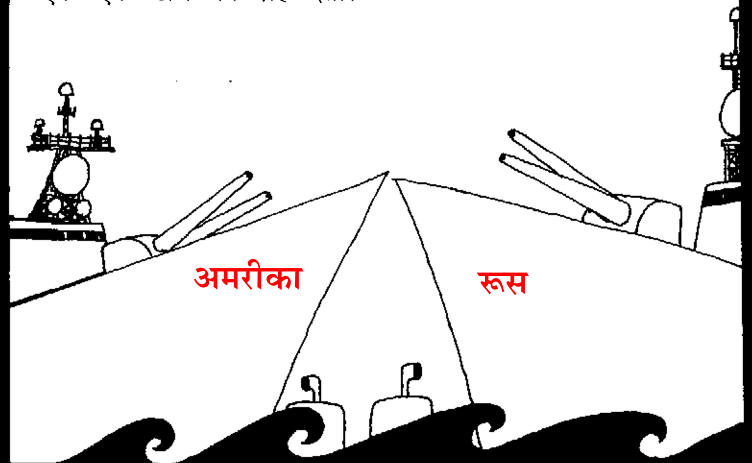


अध्याय दो

‘शीत युद्ध’ और ‘दुनिया के पुलिसमैन’ के नाम से जाने वाले देश के कारनामे



अमरीका को अपने सपनों को साकार करने के लिए रूस के साथ मुकाबला करना था। रूस भी द्वितीय महायुद्ध के बाद एक विश्व-शक्ति के रूप में उभरा था। अगले 45 सालों तक सारी दुनिया **दो महाशक्तियों** के बीच युद्ध में फंसी रही। वैसे सैन्य शक्ति के मामले में अमरीका रूस की तुलना में ज्यादा ताकतवर था। दोनों महाशक्तियों ने अपने **प्रभुत्व के दायरे** को बरकरार और बढ़ाने के लिए भारी सैन्य बल एकत्रित किए। दोनों महाशक्तियों के बीच की इस लड़ाई को **शीत युद्ध** इसलिए कहा जाता है क्योंकि दोनों देश एक-दूसरे से आपस में सीधे-सीधे कभी नहीं भिड़े। परंतु **शीत युद्ध** के दौरान दुनिया के अन्य देशों में अनेकों युद्ध हुए। जहां कहीं भी युद्ध होता वहां दोनों महाशक्तियां एक-एक खेमे को शह देतीं।



अमरीका अपने **प्रभुत्व के दायरे** को प्रशांत से आगे बढ़ा कर ब्रिटिश, फ्रेंच और जापानी औपनिवेशिक कालोनियों में ले जाने को तत्पर था। यह मुल्क एशिया और और अफ्रीका में स्थित थे। इसमें सफल होने के लिए उसे स्थानीय आकांक्षाओं से टक्कर लेनी पड़ती जो अक्सर अमरीका के खिलाफ थीं। इसलिए स्थानीय विद्रोह और समस्याओं से निपटने के लिए अमरीका ने **मुख्य स्टॉकहोल्डर** की हैसियत से अपने आपको **दुनिया का पुलिसमैन** घोषित किया। **शीत युद्ध** के दौरान अमरीका की सेना ने 200 से ज्यादा बार अन्य देशों में दखल दी।



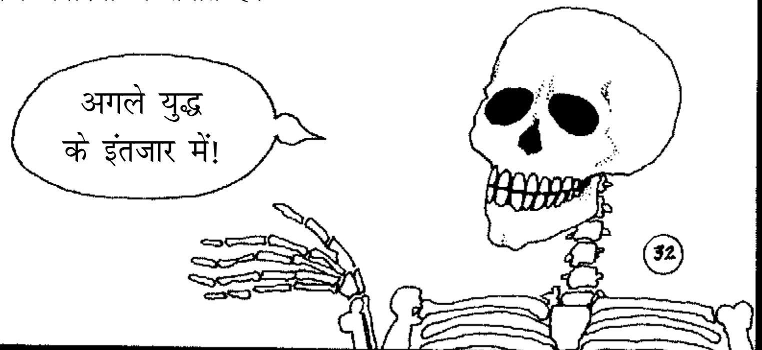
कोरिया, 1950–1953

द्वितीय महायुद्ध के बाद अमरीका ने एशिया और प्रशांत के देशों के लिए एक योजना बनायी। पर चीन और मलेशिया में क्रांतिकारी आंदोलनों के कारण इस पर पानी फिर गया। साथ-साथ कोरिया में एक बड़ी जंग छिड़ गयी। वाशिंगटन ने इसमें जमकर भाग लिया यह दिखाने के लिए कि पश्चिम की सैन्य शक्ति किसी एशियाई देश को हरा सकती है।





अमरीका के युद्धपोतों, बाम्बरों और टैंकों ने कोरिया को पूरी तरह ध्वस्त कर दिया। इस युद्ध में लगभग पैंतालीस लाख कोरियाई लोगों की मौत हुई। मरने वालों में अगर एक फौजी था तो तीन सामान्य नागरिक थे। इस जंग में चौवन हजार अमरीकी सैनिक भी मारे गये। अमरीका की बेहतरीन सैन्य शक्ति भी इस युद्ध में बहुत कामयाब नहीं साबित हुई। तीन साल तक भयंकर जंग के बाद युद्ध विराम हुआ। उसके बाद से कोरिया दो हिस्सों में बंट गया। इसके फलस्वरूप आज भी कोई चालीस हजार अमरीकी सैनिक दक्षिण कोरिया में तैनात हैं।



डोमनिकन रिपब्लिक, 1965

अमरीका द्वारा तख्ता पलटने के बाद डोमनिकन रिपब्लिक की जनता ने हटाये गए राष्ट्रपति (जो लोकप्रिय वोट द्वारा चुने गये थे) को दुबारा बहाल किए जाने की मांग की। प्रजातांत्रिक मानकों को ताक पर रखते हुए वाशिंगटन वहां अपने चहेते लोगों को प्रस्थापित करना चाहता था। अमरीका ने वहां आंदोलन को कुचलने के लिए 22,000 सैनिक भेजे। इन सैनिकों ने सैन्टो डोमिन्गो की सड़कों पर 3,000 लोगों को भून डाला।

33

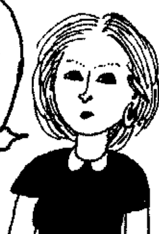


वियतनाम 1964-1973

दस साल तक अमरीका ने अपने संपूर्ण सैन्यबल से वियतनाम को रौंदने की कोशिश की। अमरीका ने भ्रष्ट वियतनामी सरकार को बनाये रखा। यह भ्रष्ट सरकार फ्रेंच उपनिवेश की वसीयत थी। अमरीका ने इंडो-चायना (वियतनाम, लाओस और कम्बोडिया) में इतना गोला-बारूद उपयोग किया जितना मानव इतिहास के सब युद्धों में मिलाकर भी कभी इस्तेमाल नहीं हुआ।



अमरीकी वायुयान के बाम्बरों ने वियतनाम पर सत्तर लाख टन बम्ब बरसाये।



अमरीकी आक्रमण की बर्बरता के बावजूद उसे एक बहादुर, कम शस्त्रों वाली ग्रामीण फौज ने शिकस्त दी।

34

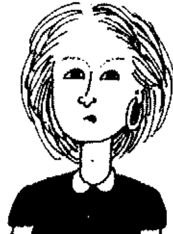
इस छोटे से देश में अमरीका ने 4 लाख टन **नापाल्म** की बारिश की। **एजेंट आरेंज** और अन्य विषैले रासायनों ने करोड़ों एकड़ उपजाऊ भूमि और जंगलों को तबाह किया। हजारों गांवों को जलाया और उनके वाशिंदों को कत्ल किया। इंडो-चायना के इस युद्ध में जो 20 लाख लोग मरे उनमें में अधिकांश सामान्य नागरिक थे। इस लड़ाई में लगभग 60,000 अमरीकी सैनिक मरे और तीन लाख घायल हुए।





लेबनान, 1982-83

इजरायल ने जब लेबनान पर युद्ध छेड़ा तब अमरीकी सेना ने लेबनान के गृहयुद्ध में सीधा हस्ताक्षेप करके इजरायल और फासीवादी **फलांग मिलेशिया** की सहायता की।





अमरीकी सैनिक बेरूट में (1983)

अमरीकी सैनिकों के रिहायशी बैरक को एक ट्रक बम्ब ने ध्वस्त किया जिसमें 241 सैनिकों की जानें गयीं।

(35)

ग्रेनाडा, 1983

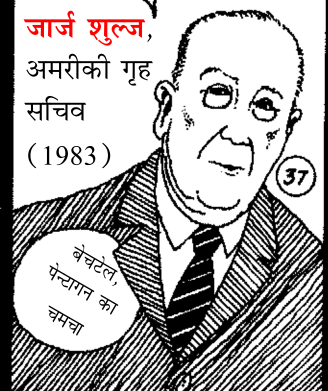
कैरेबियन स्थित द्वीप ग्रेनाडा में लगभग 111,000 लोग रहते हैं।





पर रेनोल्ड रीगन को ग्रेनाडा जैसा छोटा देश भी अमरीकी सुरक्षा के लिए खतरा लगा। इसलिए उन्होंने पेन्टागन को आदेश देकर इस छोटे द्वीप पर कब्जा किया और फिर वहां अपनी मनपसंद सरकार स्थापित की।

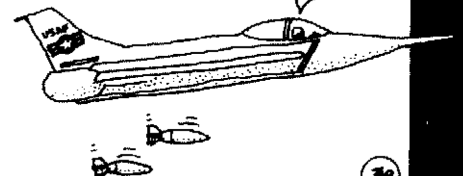
(36)



(37)

लिबिया, 1986

वाशिंगटन को लिबिया के सम्राट इदरीस से इसलिए प्यार था क्योंकि उसने अपने देश की संपूर्ण तेल सम्पदा लगभग मुफ्त में स्टैन्डर्ड ऑइल को सौंप दी थी। इदरीस का तख्ता पलटने के लिए कर्नल गदाफी से वाशिंगटन को सख्त नफरत थी। 1986 में रेगन ने लिबिया की राजधानी ट्रिपोली पर बम्ब बरसाने के आदेश दिए। कारण? क्योंकि गदाफी ने एक जर्मन डिस्को पर हमला किया जिसमें दो अमरीकी सैनिक मारे गए। अमरीकी आक्रमण में मरे सैकड़ों लिबियन सैनिक इस तथाकथित जर्मन हमले से बिल्कुल वाकिफ नहीं थे।



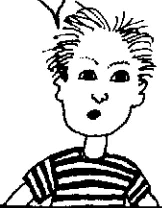
(38)

अभी हमने केवल उन्हीं युद्धों का जिक्र किया है जिनमे अमरीका सीधे-सीधे शरीक था।

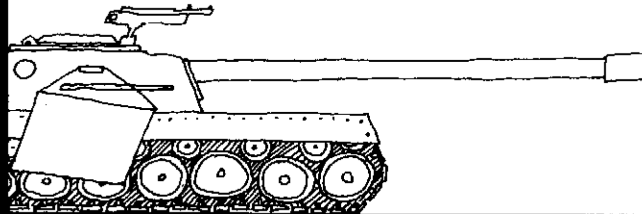
द्वितीय महायुद्ध के बाद ब्रिटेन को मध्य एशिया स्थित अपना औपनिवेशिक साम्राज्य बांटना पड़ा। उसने जमीन के एक बड़े टुकड़े - फिलिस्तीन को, हिटलर की मार से बिखरे **यूरोपीय यहूदियों** को सौंप दिया।

क्योंकि वहां पहले से ही लोग बसे थे इसलिए बड़ी मुश्किल खड़ी हुई। वहां पर पचास साल बाद अभी भी मारकाट और लड़ाई जारी है। **इजरायल** जहां बसा है वहां पर सैकड़ों-हजारों **फिलिस्तीनियों** को अपने घरों से बदखल किया गया। इसलिए **वेस्ट बैंक** और **गाजा** आज भी लड़ाई के केंद्र हैं। यहां के फिलिस्तीनी लोग सदियों से इजरायली कब्जे में रहने को मजबूर हैं।





अमरीका राजनैतिक संरक्षण के साथ-साथ हर वर्ष इजरायल को खरबों डालर की आर्थिक मदद भी देता है। तीस साल के इजरायली कब्जे के कारण वेस्ट बैंक और गाजा में इजरायल के खिलाफ ही नहीं बल्कि अमरीका के खिलाफ भी जनआक्रोश बढ़ा है। जैसे-जैसे फिलिस्तीनी युवा इजरायली फौज द्वारा मारे जाते हैं वैसे-वैसे यह रोष भी बढ़ता जाता है।



39

40

अमरीका मित्र देशों और तानाशाह सत्ताओं द्वारा जनता को दबाने में मदद करता है। 1970-80 में तमाम लोकप्रिय जनआंदोलनों ने मध्य अमरीकी भ्रष्ट सत्ताओं को चुनौती दी। तब पेन्टागन ने तुरंत इन देशों के सैनिकों को ट्रेनिंग दी। बाद में इन सैनिक दस्तों ने **निकरागुआ, एल-सैल्वाडोर** और **ग्वाटेमाला** में सैकड़ों-हजारों निहत्थे किसानों को कत्ल किया।



41

मध्य अमरीका में सबसे अधिक जुल्म ढाने वाले सभी सैन्य अधिकारियों ने पेन्टागन द्वारा, जार्जिया के **स्कूल ऑफ अमरीकाज** में ट्रेनिंग पायी। यह स्कूल दक्षिण अमरीका के सैन्य अधिकारियों को ट्रेनिंग देता है। ट्रेनिंग के दौरान दुश्मन को प्रताड़ित कर कत्ल करना सिखाया जाता है। वहां के छात्रों ने ट्रेनिंग पाकर खुद अपने देश में सैनिक शासन स्थापित किया और अपनी ही जनता का गला घोंटा है।



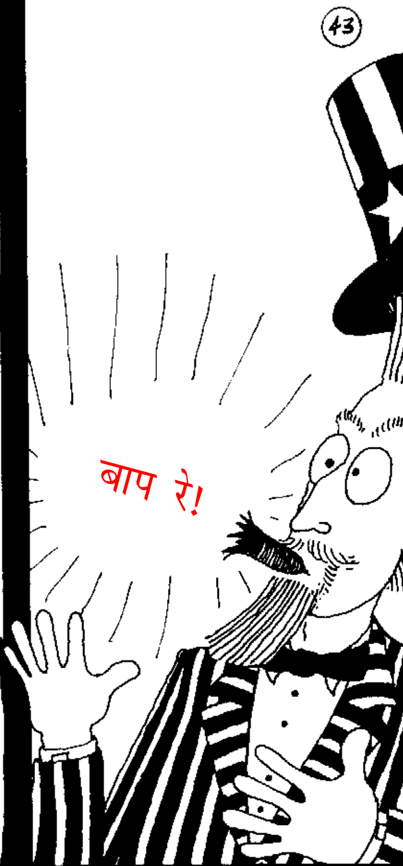
अमरीका का शह पर जनता को कुचलने वाले युद्ध आज भी **कोलम्बिया, मेक्सिको, पेरू और फिलिपीन्स** समेत कई देशों में जारी हैं। कोलम्बिया में तो अमरीकी टट्टू भ्रष्ट सैनिक शासन ने सैकड़ों विपक्षी राजनेताओं, मजदूर नेताओं समेत हजारों ग्रामीणों को कत्ल किया। **ड्रग माफिया** से लड़ने की आड़ में अमरीका इस लड़ाई में और गहराई से फंस रहा है। इस हिंसात्मक कत्लेआम के लिए वो करोड़ों-खरबों डॉलर के आधुनिक शस्त्र उपलब्ध करा रहा है।

42

सीआईए और पेन्टागन ने वाशिंगटन द्वारा नापसंद सरकारों का तख्ता पलटने के लिए वैकल्पिक सरकारों का गठन किया है। उदाहरण के लिए 1961 में क्यूबन क्रांति को खत्म करने के लिए उन्होंने एक निजी फौज को क्यूबा भेजा। यह फौज युद्धपोत द्वारा **बे-ऑफ-पिग्स** में पहुंची।



बीसवीं शताब्दी में क्यूबा पर अमरीका का यह पांचवा हमला था। पर इस बार अमरीका की हार हुई।



1970 और 80 में **सीआईए** ने दुनिया भर में गुरिल्ला सेनाओं को खासतौर पर धन, शस्त्र और ट्रेनिंग दी।



सालों तक अमरीका ने पुर्तगाल को दक्षिण अफ्रीका स्थित उसकी कालोनियों पर कब्जा बरकरार रखने में मदद दी और साथ में अंगोला और मोजाम्बीक में स्वतंत्रता आंदोलनों को कुचला।

1975 में प्रजातांत्रिक क्रांति के बाद पुर्तगाल ने अमरीका से अपना पल्ला झाड़ा।



उसने **दक्षिण अफ्रीका** की **रंगभेद** वाली सरकार की मदद से एक निजी सेना अंगोला की स्वतंत्र सरकार को पलटने के लिए भेजी। उच्च स्तरीय अमरीकी और दक्षिण अफ्रीकी नेताओं ने एक निजी फौज द्वारा हजारों निहत्थे किसानों का मोजाम्बीक में कत्ल कराया।





निकरागुआ की जनता ने 1974 में अमरीकी समर्थित तानाशाह समोजा परिवार को उखाड़ फेंका। तब सीआईए ने समोजा के वहशी नैशनल गार्ड को बंटोरा और उन्हें सभी हथियारों से लैस कर निकरागुआ को लूटने, जलाने और कत्लेआम के लिए वापस भेजा।



रोनल्ड रीगन (1985)

45

1979 में सोवियत संघ ने अफगानिस्तान पर आक्रमण कर अपनी मित्र सरकार स्थापित की। सोवियत आक्रमण का पुरजोर विरोध हुआ। तभी सीआईए जंग में कूदी। सीआईए ने अफगान मुजाहिदीन गुरल्लों को हथियारों, पैसों और ट्रेनिंग से लैंस किया। इसमें सीआईए ने पाकिस्तानी और साऊदी सरकारों की भी मदद ली। वाशिंगटन और उसके मित्रों के खुले समर्थन से मुजाहदीनों ने दस साल की घमासान लड़ाई के बाद रूस को हराया।

46



उस समय सीआईए के समर्थकों में एक साऊदी – ओसामा बिन लादेन भी शामिल था। सीआईए के साथ मिलकर बिन लादेन ने अफगान मुजाहिदीनों को रूसियों से लड़ने के लिए धन और शस्त्रों से लैंस किया। अफगान युद्ध से अंतर्राष्ट्रीय इस्लामिक आंदोलन को बल मिला और मुस्लिम देशों को फिरंगी दासता से मुक्त करने की बात उठी। अंत में इस आंदोलन ने अमरीका को भी रूस जैसा ही दुश्मन ठहराया। पर उस समय बिन लादेन और मुजाहिदीनों के अमरीकी समर्थकों को इसके असर का सही अंदाज नहीं था।

47





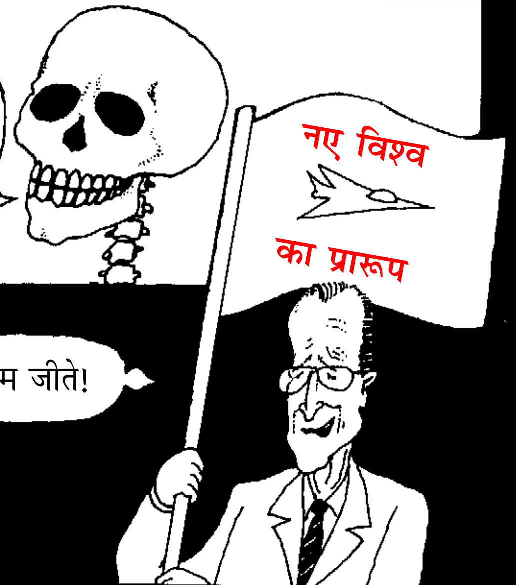
1980 में रीगन ने शस्त्रों की होड़ शुरू की और फौज की बजट बेइंतहा बढ़ाया। रूस की छोटी अर्थव्यवस्था के लिए इस खर्च को झेलना मुश्किल हुआ।



इस खर्च का रूस की अर्थव्यवस्था पर इतना बुरा प्रभाव पड़ा कि वो डूब गयी। अंतत: अमरीका शस्त्रों की होड़ और **शीत-युद्ध** की रेस जीत गया।

शीत-युद्ध के समाप्त होने के बाद कुछ लोग **विश्व शांति** और **शांति-पुरुस्कार** की बातें करने लगे। परंतु तब व्हाईट हॉऊस और पेन्टागन के बंद कमरों में कुछ अलग ही हलचल थी।

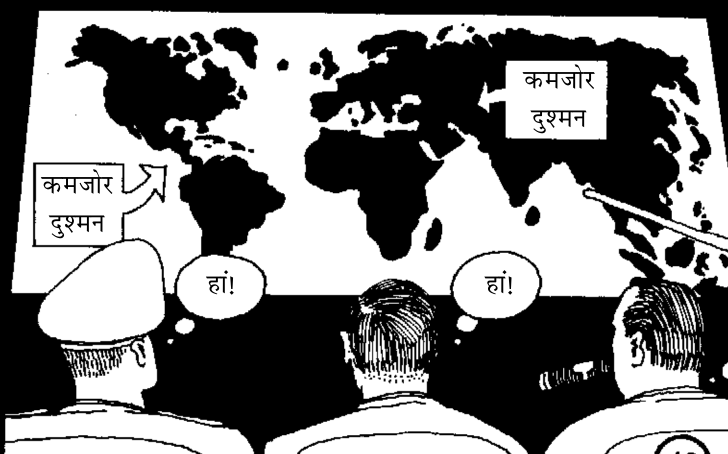
वो युद्ध के एक नए युग की योजना बना रहे थे।



अध्याय 3

'नए विश्व का प्रारूप'

1989 में जब **पूर्वी ब्लाक** टूटने लगा तब जार्ज बुश ने अपने राष्ट्रीय सुरक्षा अधिकारियों से विश्व परिस्थिति पर चर्चा की। वो खुश थे कि अब रूस अन्य देशों में हो रहे युद्धों में अमरीका को चुनौती देने की स्थिति में नहीं था। इसलिए अपनी सैनिक शक्ति को सारी दुनिया में स्थापित करने का यह सही समय था। व्हाईट हॉऊस कुछ निर्णायक जीतें चाहता था।



'जहां भी अमरीका का पाला कमजोर दुश्मनों से पड़ेगा वहां हम उन्हें सिर्फ हरायेंगे नहीं परंतु उन्हें फटाफट और **निर्णायक शिकस्त** देंगे।'

राष्ट्रीय सुरक्षा काऊंसिल के दस्तावेजों से (1989) [48]

पनामा, 1989



पनामा **बहुत कमजोर दुश्मन** करार दिया जाने वाला पहला देश था।

जब से अमरीकी युद्धपोतों ने पनामा का नाम रोशन किया तब से वाशिंगटन के इशारों पर अमरीकी सैनिकों ने इस छोटे से देश में दखलंदाजी दी है।



डृग का आरोप तो बस एक बहाना था। असल मकसद था **पनामा कैनाल** पर नियंत्रण स्थापित करना और उस देश में अमरीकी सैनिक अड्डों को बढ़ाना। आक्रमण से कुछ क्षण पहले अमरीकी हवाई बेस पर पनामा के नए राष्ट्रपति को शपथ दिलाई गयी। इस कार्य के लिए अमरीका ने जिस व्यक्ति – **गुलिरमो एनडारा** को चुना वो एक बैंक चलाता था और फर्जी काले-धन का व्यापारी था।

49



इस धंधे में ऐसा नहीं कि केवल पनामा के बैंक शरीक हैं। इसके लिए सभी बड़े अमरीकी बैंकों ने पनामा शहर में अपनी आफिस खोले हैं।



50

इससे पनामा में **काले-धन** और **ड्रग्स** (कोकेन) का धंधा चमका है।

51



पनामा के **मानव अधिकार संगठनों** के अनुसार अमरीकी आक्रमण में हजारों लोगों की मौत हुई। उनमें केवल 26 अमरीकी और 50 पनामा के सैनिक थे। बाकी सभी सामान्य लोग थे जो पनामा और कोलोन शहरों की भीड़ वाली बस्तियों में रहते थे। वो अमरीकी बंदूकों और बारूद का निशाना बने।



इराक, 1991

पनामा पर आक्रमण के 13 महीने बाद अमरीका ने उस पर फिर बड़े पैमाने पर लड़ाई छेड़ी। पहले की तरह सरकार ने प्रचार शुरू किया कि यह जंग आजादी और न्याय के लिए है। परंतु हरेक को सच्चाई का पता है।



बुश के सलाहकार
(टाईम पत्रिका, 1990)

बहुत पहले ही अमरीकी गृह विभाग ने मध्य एशियाई तेल पर टिप्पणी की थी:



दुनिया में तेल के लगभग 65 प्रतिशत भंडार मिडिल-ईस्ट में हैं। इन पर अमरीकी कंपनियों का नियंत्रण है। इससे जापान, यूरोप और अन्य विकासशील देशों पर अमरीका अपना राजनैतिक दबदबा कायम रख सकता है। वाशिंगटन मिडिल-ईस्ट के तेल को अपनी बपौती मानता है और उन्हें अपना **महत्वपूर्ण** हिस्सा समझता है।



55

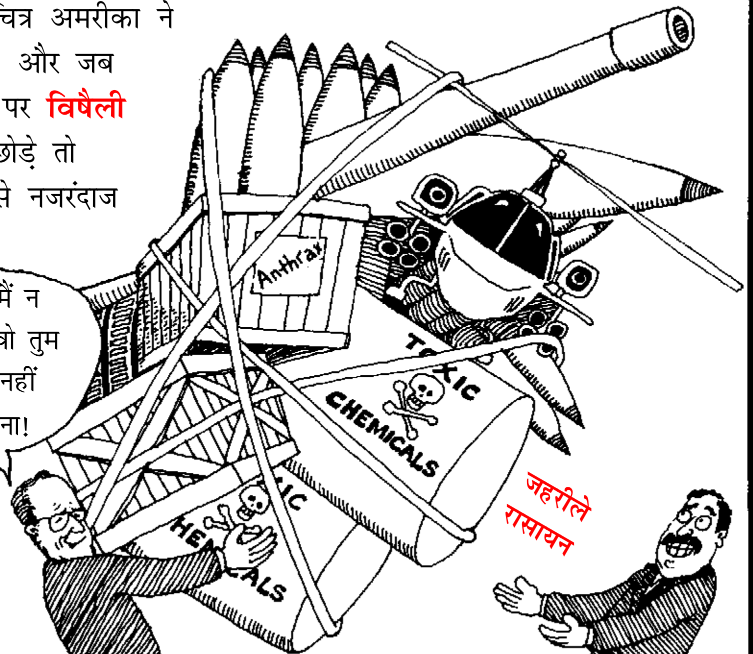
हेनरी किसिंजर



असल में 1979 से ही अमरीकी सरकार फरास की खाड़ी में युद्ध की योजना बना रही थी। इसके लिए राष्ट्रपति कॉर्टर ने **रैपिड एक्शन फोर्स** स्थापित की और कहा, 'खाड़ी में तेल को लेकर किसी भी धमकी ....



1980 की शुरुआत में ईरान को अमरीकी हितों का सबसे बड़ा दुश्मन माना जाता था। ईरान को काबू में रखने के लिए अमरीका और उसके सहयोगी मित्रों ने इराक द्वारा ईरान पर आक्रमण को पूरा सहयोग दिया और इसके लिए इराक को नवीनतम हाई-टेक शस्त्र उपलब्ध कराए। ईरान को पूर्णतः ध्वस्त करने के लिए अमरीकी कंपनियों ने इराक को रासायनिक और जैविक शस्त्र जैसे **एंथरैक्स** बनाने की टेक्नालोजी भी बेंची। ईरान की फौजें कहां स्थित हैं इसके उपग्रह-चित्र अमरीका ने इराक को दिए। और जब इराक ने ईरान पर **विषैली गैस** के बम्ब छोड़े तो अमरीका ने उसे नजरंदाज किया।

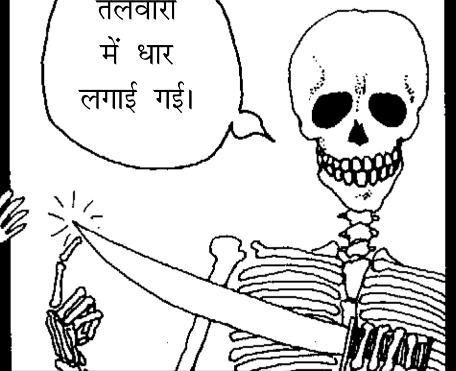


1987 में रीगन ने सीधे ईरान-इराक युद्ध में भाग लिया और इराक का साथ दिया। इसके लिए अमरीका ने खाड़ी में नौपोत भेज कर इराक के हितैषी देश कुवैत में तेल-टंकियों की सुरक्षा की। साथ में नवीनतम शस्त्रों का उपयोग कर अमरीकी नौसेना ने ईरान के तेल भंडारों और छोटी नौकाओं को ध्वस्त किया। अमरीका ने इराक के एक सिविलयन हवाईजहाज को भी मार गिराया जिसमें 290 मुसाफिरों की मृत्यु हुई।





1988 में इराक-ईरान युद्ध खत्म हुआ। अमरीका ने इराक में इसके लिए एक बड़ी फौज खड़ी की थी। यह फौज मिडिल-ईस्ट में अमरीकी आधिपत्य को चुनौती दे सकती थी। इसलिए अब अमरीका ने इराक को निशस्त्र करने का इरादा बनाया।

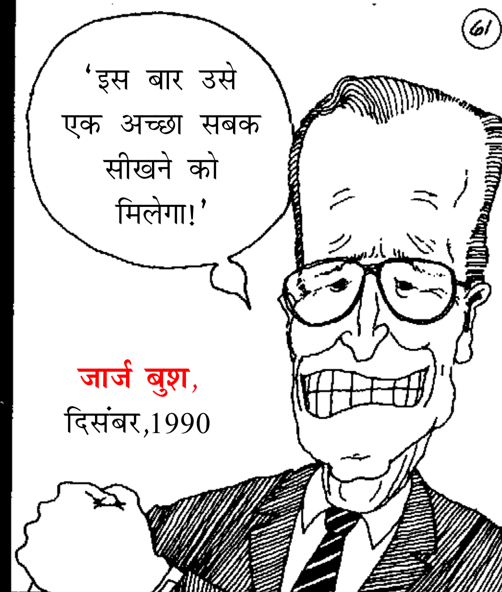


इस बात से साफ सबूत मौजूद हैं कि अमरीका ने पहले इराक को उत्तेजित किया और उसके बाद उसे कुवैत पर आक्रमण करने के लिए ललचाया। अमरीका, सऊदी अरब और कुवैत ने इराक पर कठोर आर्थिक प्रतिबंध लगाए। इसके कारण ही इराक ने कुवैत पर आक्रमण करने की योजना बनायी। सद्दाम हुसैन की इस योजना को अमरीका ने तुरंत हरी झंडी दिखायी।



जुलाई 1990 में अमरीकी राजदूत **ग्लैसपी**, सद्दाम हुसैन के साथ बातचीत के दौरान। यह सुनिश्चित करने के लिए कि कोई भ्रम न हो ग्लैसपी ने कहा, 'जेम्स बेकर ने हमारे आधिकारिक प्रवक्ता को इस बात पर विशेष बल देने को कहा है।'

आक्रमण के बाद बुश एक बड़े युद्ध की तैयारी में लग गये। उन्होंने किसी भी प्रकार की समझौता वार्ता को नकार दिया। मिडिल-ईस्ट शांति समझौते के लिए इराक, कुवैत से अपनी सेना हटाने के लिए तैयार था। परंतु बुश ने इसे भी ठुकरा दिया।



जार्ज बुश,
दिसंबर,1990

बुश को मालूम था कि समस्या को आपसी समझौते द्वारा सुलझाया जा सकता था। परंतु उन्हें कोई समझौता वार्ता स्वीकार नहीं थी। उन्हें जल्द-से-जल्द एक निर्णायक विजय चाहिए थी। इसके लिए इराक को बम्बों से ध्वस्त कर उसे पाषाण युग में पहुंचाना था। हजारों इराकी फौजियों को युद्ध की आग में झोंकना था। इस युद्ध में सारी दुनिया के लिए एक संदेश छिपा था।

बुश ने इतिहास का सबसे खौफनाक युद्ध शुरू किया। इसमें उसने सामान्य बम्बों के साथ-साथ **क्लस्टर बम्ब** (जो शरीर के टुकड़े-टुकड़े करते हैं) **नापाल्म** और **फॉस्फोरस बम्ब** (जो त्वचा से चिपककर उसे जलाते हैं) और **फ्यूल एॅअर विस्फोटक** (जो छोटे एॅटम-बम्ब होते हैं) का भी उपयोग किया। बाद में अमरीका ने 'यूरेनियम' से लैंस शस्त्रों का इस्तेमाल किया जिनसे आज भी इराकी और अमरीकी सैनिकों को **कैंसर** हो रहा है और बच्चों में जन्म के समय अनेकों दोष पाए जा रहे हैं।





बगदाद और बसरा शहरों को लगातार बम्ब बरसा कर तबाह किया गया। इसमें हजारों नागरिकों की मृत्यु हुई। 63

इराक जब कुवैत से अपनी सेना को वापस निकाल रहा था तभी बुश ने एक भयंकर युद्ध छेड़ा। इस युद्ध का मकसद एकदम साफ था – इराक अपनी सेना को कुवैत से सुरक्षित बाहर नहीं निकाल सके। इराकी सैनिकों के बाहर निकलने के **दरवाजे** बंद कर दिए गए और घर वापस जा रहे हजारों सैनिक को व्यवस्थित तरीके से बलि चढ़ाया गया। अन्य स्थानों पर भी अमरीकी टैंकों और बुलडोजरों ने जानबूझ कर हजारों इराकी सैनिकों को खाईयों में जिंदा दफनाया। इस रणनीति से इराक की रक्षक क्षमता पूरी तरह नष्ट हो गई। 64







'कभी-कभी देश के जीवनकाल में वो घड़ी आती है जब उसे खुद को परिभाषित करना पड़ता है – हम कौन हैं और हम किन चीजों में विश्वास रखते हैं।'

जार्ज एच बुश (जनवरी 1991) 65

एक अनुमान के अनुसार खाड़ी युद्ध में करीब डेढ़ लाख लोग मरे। परंतु इराक के लोगों की त्रासदी युद्ध खत्म होने के बाद भी जारी है। वहां दूषित और कीटाणु युक्त पानी के कारण युद्ध से कहीं अधिक लोग मरे। अमरीका ने व्यवस्थित तरीके से इराक की बुनियादी सुविधाओं के ताने-बाने को ध्वस्त किया। इनमें बिजली, सीवर और पानी शुद्धिकरण के प्लांट शामिल थे। अमरीका ने दस साल तक इराक पर सख्त आर्थिक प्रतिबंध लगाए। उससे इराक की अर्थव्यवस्था चरमरा गयी और जनता को उसके भयानक परिणाम भुगतने पड़े। 66

यूनिसेफ के अनुसार 1999 में इराक में शिशु मृत्यु दर युद्ध शुरू होने से दुगनी हो गई। युद्ध के कारण बच्चों में कुपोषण बढ़ा। युद्ध पर लगे प्रतिबंधों के कारण कम-से-कम पांच लाख बच्चों की मृत्यु हुई। यानी हर महीने 5200 बच्चे मरे।

(67)



अभी भी अमरीका इराक पर लगातार बम्ब बरसा रहा है।



कुछ लोगों ने युद्ध की महान जीत का जश्न भी मनाया। कुछ के लिए यह वाकई में सच भी था।



इसमें कौन जीता?



... जिन्होंने तेल के सट्टे में भक्कम मुनाफा कमाया। तेल की ऊंची कीमतों से भी मुनाफा बढ़ा।

(68)

एमोको का नफा 69% बढ़ा।

ऍक्सान का मुनाफा 75% बढ़ा

युद्ध भय से तेल में भारी उछाल!

मा मोबिल का नफा 46% बढ़ा

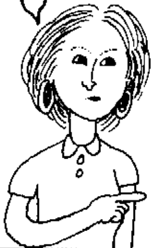
टेक्सैको का नफा 26% बढ़ा

शेवरॉन का नफा 26% बढ़ा

युद्ध के बाद तेल कम्पनियों की खाड़ी में गिरफ्त बढ़ी। युद्ध के कारण, कम-से-कम कुछ समय के लिए तेल कम्पनियों और कुवैत, साऊदी अरब और गल्फ एमिरेट्स (ब्रिटिश इम्पायर द्वारा स्थापित) के शाही परिवारों के बीचे मधुर रिश्ते कायम रहे। इन रिश्तों की वजह से तेल कम्पनियों के मालिकों और शाही परिवारों ने भक्कम मुनाफा लूटा जबकि ज्यादातर अरब लोग गरीबी में पिसते रहे। खाड़ी युद्ध के बाद, आम अरब लोगों के घोर विरोध के बावजूद अब अमरीकी सेना स्थाई रूप से साऊदी अरब में टिकी हुई है।



(69)



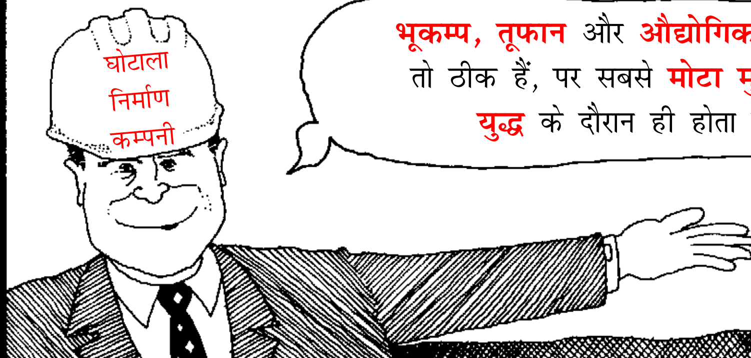
... जिनकी शाही परिवारों और तेल कम्पनियों के साथ साझीदारी थी। खाड़ी के देशों को विकसित करने की बजाए शाही परिवारों ने अपनी अधिकांश लूट पश्चिम देशों के बैंकों में सुरक्षित रखी है। सिटी बैंक, जेपी मार्गन चेज और अमरीका, यूरोप एवं जापान स्थित अन्य बैंकों में खाड़ी देशों का 900 बिलियन डालर तेल मुनाफा जमा है। इसीलिए यह बैंक वाले कुवैत के अमीर और उनके मित्रों की सुरक्षा के बारे में बहुत चिंतित हैं।

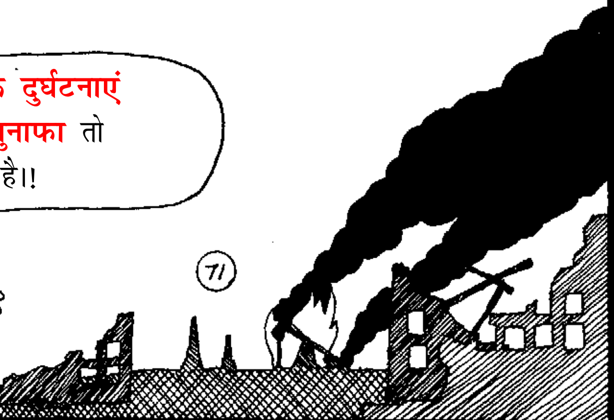


फिर ठेकेदार भी तो हैं....



युद्ध के बाद पुन:निर्माण के 100 बिलियन डालर के ठेकों के लिए निर्माण कम्पनियां, तेल कम्पनियां और बड़े ठेकेदार दौड़े। पर ज्यादातर ठेके **अमरीकी** ठेकेदारों – **बेचटेल, हैलीबर्टन, मौटरोला** और **कैटरपिलर** को ही मिले।





साथ में अन्य छुटभइया ठेकेदार भी थे – **जनरल डायनामिक्स, जीई, बोइंग** भी जो सभी युद्ध के उद्योग से जुड़े थे।



फरास की खाड़ी पर बम्ब बरसने और मिसाइलों के उड़ने से युद्ध उद्योग की तो चांदी ही हो गई। इन कम्पनियों के मालिक **अंधाधुंध मुनाफा** देखकर बौखला गए।



खाड़ी युद्ध में नवीनतम शस्त्रों को अपनाने के बाद इन मौत के सौदागरों ने अपने हथियारों की तबाही की क्षमता को स्थापित किया। उसके बाद उन्होंने पूरा जोर लगाकर न केवल इन शस्त्रों को अमरीकी कांग्रेस और पेन्टागन को बेंचा बल्कि दुनिया भर में फौजी जनरलों, नौकरशाहों और राजनैतिकों को भी बेंचा।

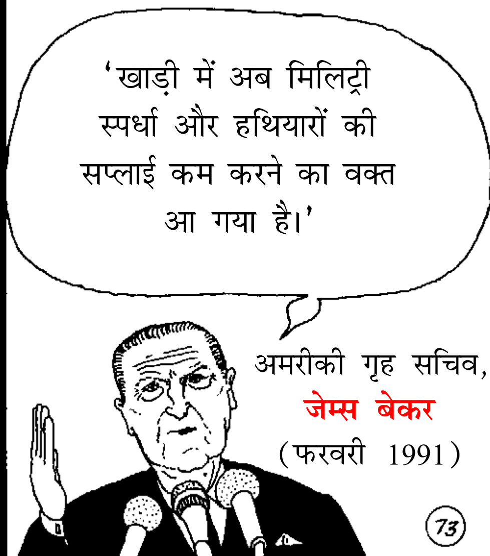


1989 में अमरीकी हथियारों की बिक्री मात्र 8 बिलियन डालर थी। 1991 में यह बढ़कर 40 बिलियन डालर हो गई। अमरीका दुनिया में हथियारों का सबसे बड़ा व्यापारी बन गया। इसमें कोई अन्य देश उसका मुकाबला नहीं कर सकता था। अमरीकी सरकार ने मार्टिन लॉकहीड को मिलिट्री सहायता और कर्ज दिया जिससे कि वो अपने लड़ाकू जहाज गरीब देशों को बेंच सकें। उन सरकारों को जहाज बेंचे जो अपने लोगों को अन्न तक उपलब्ध कराने में असमर्थ हैं। 72





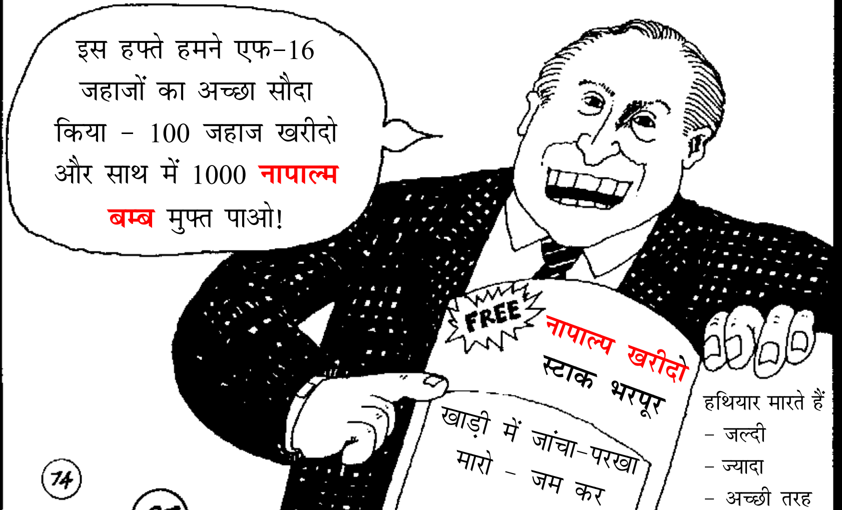
अंतर्राष्ट्रीय हथियारों की होड़ कम करने और खाड़ी में युद्ध बंद करने के बारे में लोग थोक के भाव में बयान देते रहे।



अमरीकी गृह सचिव, **जेम्स बेकर** (फरवरी 1991)

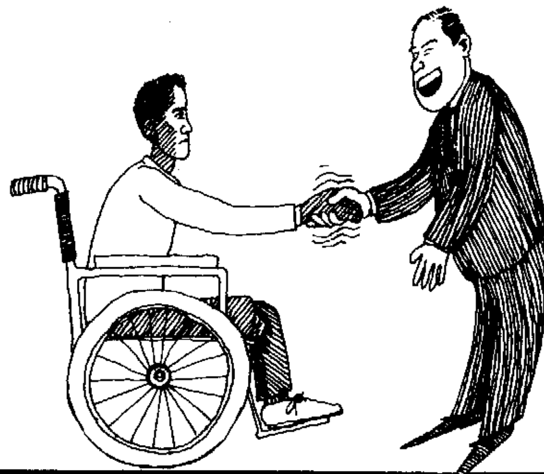
73

जहां एक ओर वाशिंगटन शांति चालीसा पढ़ रहा था वहीं दूसरी ओर पेन्टागन के नुमाइंदे खाड़ी में इजरायल, शाही सम्राटों, मिस्त्र और तुर्की को **लड़ाकू जहाज, टैंक, हेलीकाप्टर** और **क्लस्टर बम्ब** बेंचने में व्यस्त थे।



74

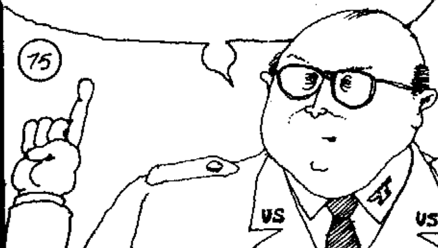
खाड़ी के देशों में बेइंतहा मुनाफा कमाने के बाद बड़े कारपोरेशंस ने पूरे देश भर में **विजय परेड** आयोजित कीं। इसमें किसी को कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए।



कोसोवो, 1999

अल्बेनियन लोगों ने सालों तक सर्बियाई लोगों का अत्याचार सहा। 1990 में **अल्बेनियन विद्रोहियों** ने यूगोस्लाविया से अलग होने के लिए युद्ध शुरू किया। आमतौर पर अमरीका अल्पसंख्यक आंदोलनों का सहयोग नहीं करता है। यह अक्सर इस बात पर निर्भर करता है कि उस देश की सरकार अमरीका की चहेती है अथवा नहीं। मिसाल के लिए इराक और ईरान में अमरीका **कुर्द विद्रोहियों** का सहयोग करती है। वही अमरीकी सरकार तुर्की की मित्र सरकार को कुर्द विद्रोहियों को कुचलने के लिए ढेरों शस्त्र सप्लाई करती है। अमरीकी मदद से हजारों कुर्द विद्रोही मारे गए हैं।

हमारी नीति साफ है। हम स्वतंत्रता संग्रामियों का सहयोग करते हैं और आतंकवादियों का विरोध करते हैं।



यूगोस्लाविया के सशक्त राष्ट्रपति **स्लोबोडॉन मिलोसविच** ने यूरोपीय विस्तार में अमरीका का सहयोग नहीं दिया। इसलिए अमरीका यूगोस्लाविया के विभाजन के लिए तैयार हो गया। क्लिंटन की सरकार ने **कोसोवो लिबरेशन ऑर्मी** का दामन थामा। यह संस्था ड्रग्स और अल्पसंख्यकों पर अत्याचार के लिए मशहूर थी। अपने खास अंदाज में अमरीकी शासन ने एक अंतिम मांग की जिसे यूगोस्लाविया के लिए स्वीकार करना असंभव था।



नैटो द्वारा बम्ब बरसाने के कार्यक्रम ने एक छोटी सी लड़ाई को एक बड़े पैमाने के जातीय दंगों में बदल दिया। बम्ब गिरने के बाद सर्बिआई सैनिकों ने अल्बेनियाई मूल के लोगों को मारना और देश से निकालना शुरू कर दिया। जब अल्बानिया के लोग नैटो के संरक्षण में वापस लौटे तो उन्होंने **सर्बिआई** और **जिप्सियों** को हकाला और मारा गया। अंततः इस युद्ध में अमरीकी राजनैतिक हितों को लाभ पहुंचा। दूसरी ओर बाकी सभी पक्षों को भारी नुकसान पहुंचा और जातीय दंगे भड़के।

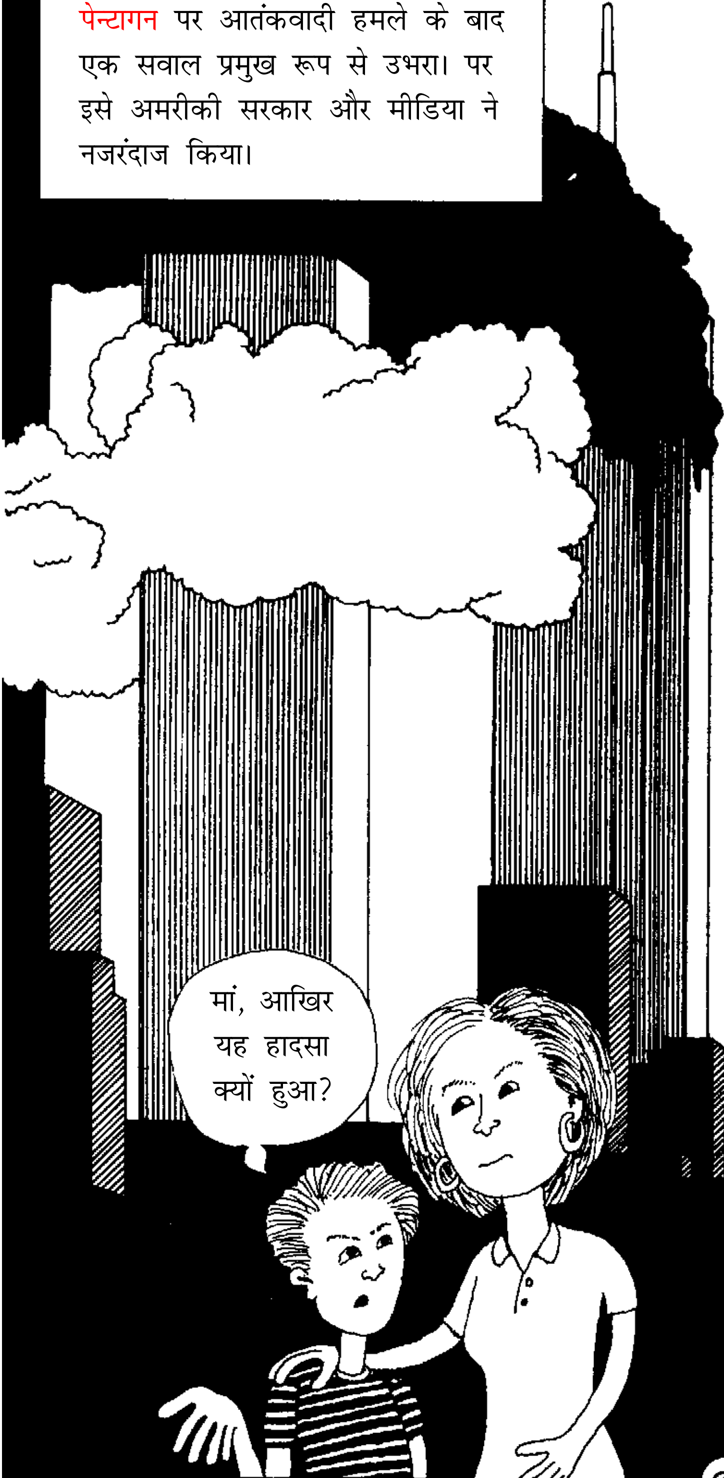
77



अध्याय 4

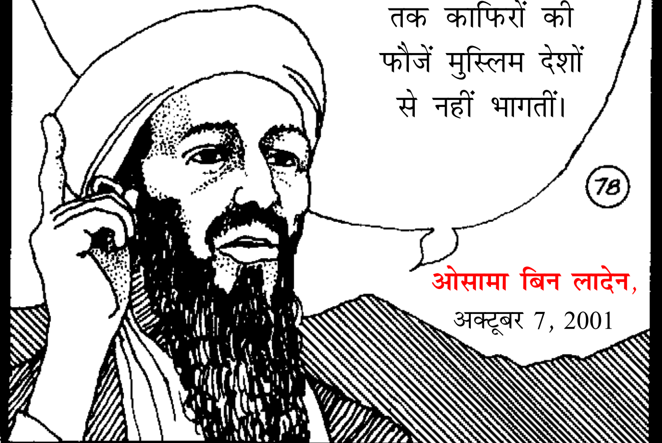
'आतंकवाद पर युद्ध'

सितम्बर 11 के वर्ल्ड ट्रेड सेंटर और पेन्टागन पर आतंकवादी हमले के बाद एक सवाल प्रमुख रूप से उभरा। पर इसे अमरीकी सरकार और मीडिया ने नजरंदाज किया।



सही उत्तर पाने के लिए दोषियों से पूछना ही उपयुक्त होगा। जब अमरीकी लड़ाकू जहाजों ने अफगानिस्तान पर बम्ब बरसाना शुरू किए तब ओसामा बिन लादेन ने एक विडियो-टेप जारी किया। उसने 11 सितम्बर के आक्रमण की प्रशंसा की और अमरीकी पर और आक्रमणों की अपील की। उसने अपनी मंशा इन शब्दों में स्पष्ट की:

'आज अमरीका ने जो कुछ चखा है वो एक छोटा नमूना है उस हिंसा का जिसे हमने बरसों से भुगता है। इस्लामी देशों ने यह निरादर और अपमान अस्सी सालों से भुगता है। इसमें उसके लोग मरे हैं और खून बहा है, उसके अभयारण्यों पर आक्रमण हुआ है और दुनिया में किसी ने उसकी कोई परवाह नहीं की। अभी भी इराक में लाखों बेगुनाह बच्चे कत्ल हो रहे हैं। अमरीका से मैं सिर्फ यह कहना चाहता हूं। मैं उस खुदा की कसम खाकर कहता हूं जिसने आसमान को बिना खम्भों के उठाया है। अमरीका और उसके लोग तब तक सुरक्षित और शांति से नहीं जी पायेंगे जब तक फिलिस्तीन में अमन कायम नहीं होता और जब तक काफिरों की फौजें मुस्लिम देशों से नहीं भागतीं। (78)



ओसामा बिन लादेन, अक्टूबर 7, 2001

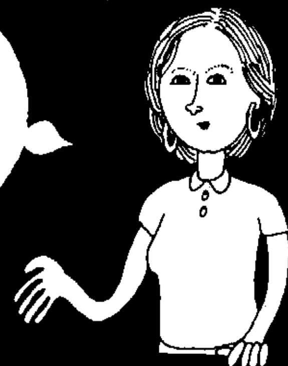
दुनिया में बहुत कम लोग हैं और उनमें खाड़ी के लोग भी शामिल हैं जो बिन लादेन के आतंकवादी तरीकों का समर्थन करते हैं। पर खाड़ी के अधिकांश लोग अमरीका के प्रति बिन लादेन के रोष के समर्थक हैं। खाड़ी में अमरीका द्वारा भ्रष्ट और तानाशाह सरकारों के समर्थन से लोगों में भारी गुस्सा है। अमरीका फिलिस्तीन का दमन कर इजरायल का पक्ष ले रहा है। वो अपनी सैनिक ताकत के बलबूते पर खाड़ी में आर्थिक पाबंदियां लगा रहा है और अपनी बात मनावा रहा है।



बुश सरकार ने तुरंत अमरीकी टेलिविजन चैनल्स को बिन लादेन के विडियो-टेप के प्रसार में सावधानी बरतने का आदेश दिया। इसका शासकीय कारण?



पर क्या छिपे संदेश अमरीकी गृहविभाग की चिंता का मुख्य विषय थे? दरअसल उन्हें बिद लादेन के संदेश के प्रसारण से डर था - 11 सितम्बर का आक्रमण अमरीकी विदेश नीति और खाड़ी में उसके द्वारा की जा रही सैनिक कार्यवाही पर एक तमाचा था।

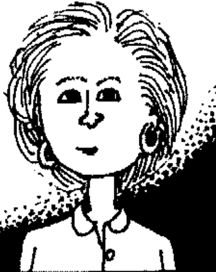




पेन्टागन ने बार-बार यह करके दिखाया है कि उसके नवीनतम शस्त्र अन्य देशों को पूरी तरह ध्वस्त कर सकते हैं। वो विदेशों में हजारों-लाखों लोगों को कत्ल कर सकते हैं और वहां जीवन का पूरा ताना-बाना तबाह कर सकते हैं।



पिछले कई दशकों में अमरीका द्वारा विदेशों में छेड़े गए युद्धों की असली कीमत को छिपाया गया है। हमें इसके लिए खरबों डॉलर की कीमत चुकानी पड़ी है पर इनमें कम ही अमरीकी सैनिक मरे हैं। ज्यादातर तबाही और कत्लेआम दूसरे देशों में हुआ है। पर सितम्बर 11 को यह तस्वीर पूरी तरह बदल गयी।



सितम्बर 11 का आक्रमण मात्र एक बदला नहीं था। उससे अमरीका को भड़काने का भी प्रयास था। बिन लादेन उम्मीद लगाये था कि अब अमरीका प्रतिकार में बड़े पैमाने पर नरसिंहार करेगा और उसके फलस्वरूप बिन लादेन और फिदायीनों को भर्ती कर पायेगा। इस प्रकार अमरीका के खिलाफ **धर्म-युद्ध** में वो सभी मुस्लिम देशों का समर्थन जुटा पायेगा।



बुश सरकार बिन लादेन के बुने जाल में फंसी। जार्ज बुश ने **आतंकवाद पर युद्ध** छेड़ा। बुश ने बिन लादेन की **पुण्य और पाप** की रणनीति को दोहराया। बुश और उसके सहायक न केवल बिन लादेन द्वारा सुझाए युद्ध के लिए तैयार थे बल्कि तत्पर थे। सितम्बर 11 के आक्रमण का हवाला देते हुए बुश अब अमरीका का रक्षा खर्च बेइंतहा बढ़ा कर देश की सैनिक ताकत का प्रदर्शन कर सकते थे।

(79)

'यह **पुण्य और पाप** के बीच एक महान संघर्ष होगा। आतंकवाद के खिलाफ इस युद्ध और मुहिम में अभी कुछ और समय लगेगा।'



जार्ज डब्लू बुश, सितम्बर 12, 2001

आतंकवाद पर युद्ध में बुश ने शुरू में अफगानिस्तान पर बम्ब बरसाए। बुश सरकार बस युद्ध पर आमादा थी। उसने बातचीत द्वारा सुलह की हर पेशकश को ठुकराया। जब अफगान सरकार ने बिन लादेन के खिलाफ सबूत मांगे – जो एक वाजिब मांग थी और वार्तालाप की दिशा में सही कदम था, तब बुश ने जवाब दिया:



'मैंने कहा न कि बातचीत से समझौता नहीं होगा। तुम या बिन लादेन को जिंदा सौंपो या फिर उसके साथ मरो!'

अक्टूबर 2001 को अमरीकी हवाई हमले में चार छोटे अफगान बच्चे मारे गये। यहां रिश्तेदार उनकी लाशें दफनाने के लिए ले जा रहे हैं।

(80)



अफगानिस्तान के लोगों ने अमरीकी बमबारी से हुई तबाही को झेला। इसमें हजारों आम नागरिक मरे और साथ में भूख से मर रहे लोगों को राहत सामग्री भी मिलना बंद हो गयी। कुल कितने लोग मरे इसका कुछ पता नहीं। पर यह पक्का है कि अफगानिस्तान में वर्ल्ड ट्रेड सेंटर की तुलना में कहीं अधिक लोग मारे गये।

जैसे-जैसे दुनिया के सबसे सम्पन्न और ताकतवर मुल्क ने दुनिया के सबसे गरीब देश पर बम्ब बरसाये वैसे-वैसे पूरे मुस्लिम जगत में लोगों का गुस्सा भड़का और वे सड़कों पर उतर आये। केवल धार्मिक लोगों ने ही नहीं बल्कि आम लोगों ने भी इस युद्ध का जमकर विरोध किया।



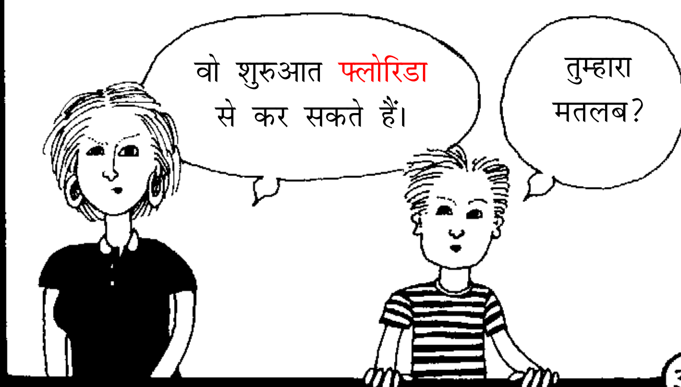
युद्ध से खाड़ी के देशों में अमरीका विरोधी भावना भड़कीं और उबलने लगी। मुस्लिम देशों पर आक्रमण करने और बम्ब बरसाने से अमरीका के खिलाफ नफरत बढ़ी। इससे अमरीका के ऊपर आक्रमण की भी सम्भावना बढ़ी है। बुश को यह सब पता था, फिर भी उसने लोगों को इस खतरे में ढकेला!



आतंकवाद पर युद्ध छेड़ने से आतंकवाद कभी खत्म नहीं होगा। अगर बिन लादेन मारा भी गया तो उसके चेले जंग में कूदेंगे और अमरीका को खाड़ी से बाहर खदेड़ेंगे। अत्याचार का सिलसिला लगातार बढ़ेगा।



आतंकवाद के खिलाफ **पुण्य और पाप** की दलील ने अमरीकी शासन द्वारा चलाये सरकारी आतंकवाद की कलई खोली। राष्ट्रपति बुश अब दुनिया में आतंकवादियों को शरण देने वाले देशों को खोज रहे हैं।



चालीस सालों से मियामी स्थित अड्डों से अप्रवासी क्यूबन नागरिकों ने अपने देश क्यूबा पर वहशी आतंकवादी हमला छेड़ा है।



सरकार के लिए इन आतंकवादी गुटों के खिलाफ सबूत जुटाना मुश्किल होगा क्योंकि इन गुटों को असल में सीआईए और पेन्टागन ने ही ट्रेनिंग दी है। लुई पोसाडा और औरलैन्डो बॉश इसके जीते-जागते उदाहरण हैं। इन दोनों ने क्यूबा के एक नागरिक हवाई जहाज को बम्ब से मार गिराया। इसमें 73 लोगों की जानें गयीं।



क्यूबा के नागरिक विमान को गिराने की पक्ष में औरलैन्डो बॉश का बयान (1987)

इससे पहले कि पोसाडा कैरैलिस को वायुयान मार गिराने के जुर्म में आरोपी ठहराया जाता, वो वेनिजुआला की जेल से फरार हो गया। उसे जल्द ही सीआईए समर्थित निकरागुआ-कोन्ट्राज को हथियार सप्लाई करने का ठेका मिला।



पोसाडा के साथी औरलैन्डो बॉश का देश से निष्कासन रद्द करने में अमरीकी सरकार ने पूरी मदद की। बुश के पिता जार्ज एच बुश ने अपने भाई जेब को पत्र लिखकर औरलैन्डो का निष्कासन रद्द कराया। उन्होंने कोर्ट के आदेश द्वारा औरलैन्डो को माफी दिलवाई और उसे फ्लोरिडा में सुरक्षा प्रदान की। बॉश ने कसम खाई:





अगर नौजवान बुश सच में सभी राज्यों के आतंकवादियों को पकड़ना चाहते हैं तो उन्हें सबसे पहले यह चेतावनी अपने भाई को देनी चाहिए जो फ्लोरिडा के गवर्नर हैं।



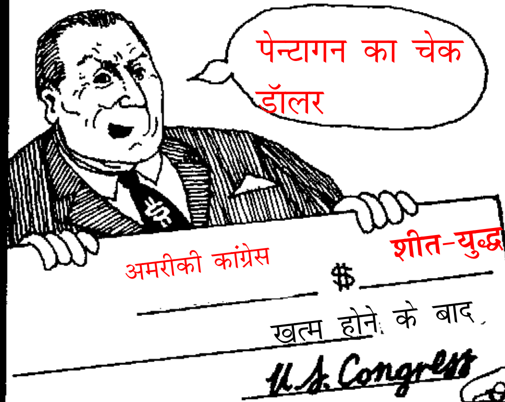
पोसाडा, बॉश और उनकी अंतर्राष्ट्रीय गुंडा मित्रमंडली को सीआईए फंड करता है। सीआईए के तमाम **खुफिया कामों** में बम्ब बरसाना, हत्या, कत्लेआम – यह सभी आतंकवादी कार्य शामिल हैं। दुनिया भर में ऐसे तमाम बर्बर गुंडे सीआईए की छत्रछाया में काम करते हैं। इनमें से कुछ – **ओसामा बिल लादेन** जैसे लोगों ने बाद में अपने आका बदल दिए।

85



आतंकवाद पर युद्ध सच में सफेद झूठ था और उसके बहुत दुष्परिणाम भी हुए। परंतु बुश सरकार को उसकी बदौलत बहुत फायदा हुआ। इनमें सबसे बड़ा लाभ था कि अब वो बेलगाम होकर रक्षा खर्च को मनमानी तरह से बढ़ा सकते थे।

चाहें कितना भी खर्च हो ...

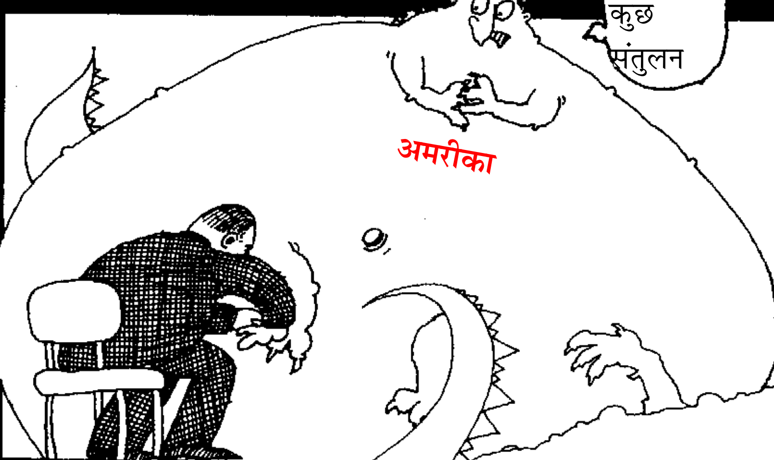


वाशिंगटन में कुछ लोग रक्षा बजट में कटौती की बात सोच रहे थे। इस बेफजूल खर्च ने अमरीका को दुनिया के सबसे बड़े धनी देश से गिराकर सबसे कंगाल देश बना दिया।

अमरीका

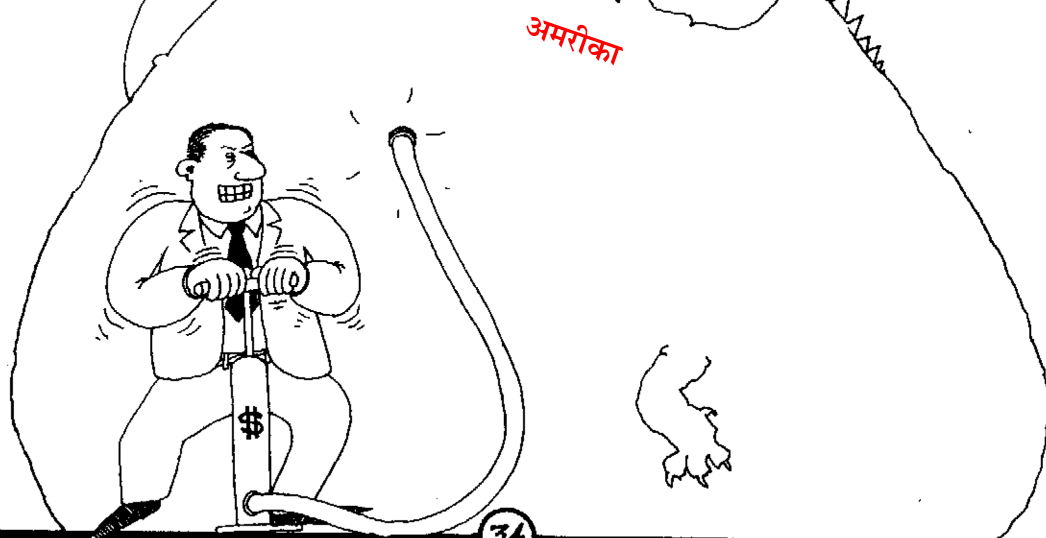
बैंक-बॉन्ड्स?





लाने के लिए राजनेताओं ने पेन्टागन के खर्च में कुछ कटौती की।

परंतु सितम्बर 11 के बाद यह पूरी तस्वीर बदल गयी। बुश और कांग्रेस अब पेन्टागन के बजट को बेलगाम बढ़ाने लगे।



सितम्बर 11, 2001 के बाद अमरीका ने विदेशी युद्धों का एक नया अध्याय शुरू किया। इससे दुनिया भर में अत्याचार फैला और बढ़ा। पर अब उसका कुछ असर अमरीका में भी होगा। इसलिए अमरीकी पुलिस एजेंसियां और **एफबीआई** अब **मानव अधिकार संगठनों** पर लगाम लगे रहे हैं।



पेन्टागन और **सीआईए** पूरी दुनिया में युद्ध और **खुफिया आपरेशंस** चलाने के लिए मुक्त छूट चाहते हैं।

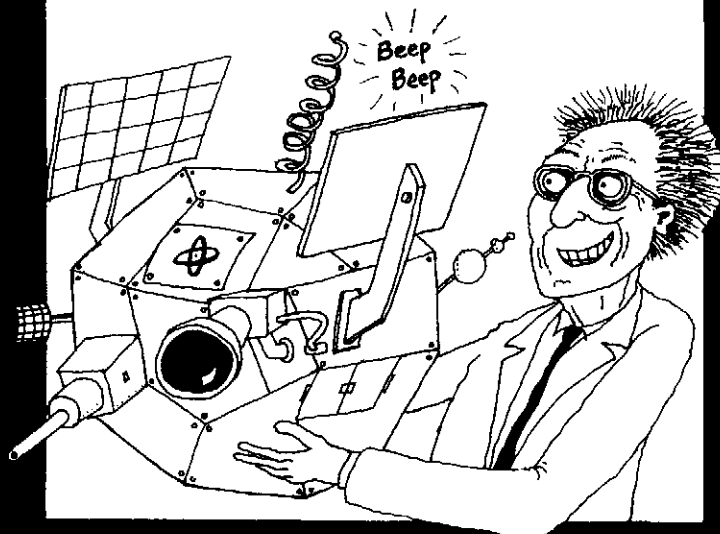




नये युद्ध के फंड के लिए कांग्रेस ने बजट घाटे की दलील देकर सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रमों में कटौती की। फौज, नौसेना और वायुसेना अब मंहगे नए हथियारों के लिए शोर मचा रहे हैं। इन अस्त्रों को **आतंकवाद पर युद्ध** के लिए अतिआवश्यक माना जा रहा है।



कांग्रेस द्वारा **मिसाइल सुरक्षा कार्यक्रम** का विरोध भी ठंडा पड़ गया।



मिसाइल सुरक्षा कार्यक्रम बिल्कुल **आतंकवाद पर युद्ध** जैसा ही प्रोग्राम था। इस अमरीकी सुरक्षा के झमेले से पूरी दुनिया को खतरा बढ़ जाता। अगर दूसरे देशों की मिसाइलों से अमरीका खुद को सुरक्षित कर भी लेता तो यह देश खुद को अधिक असुरक्षित महसूस करते। चीन नवीनतम और बेहतर मिसाइल डिजायन कर रहा है। इससे अमरीकी **मिसाइल कवच** बेकार हो जाने की संभावना है। पर इससे निश्चित तौर पर एशिया में अणु-शस्त्रों की होड़ बढ़ेगी।



87

1972 में अमरीका और रूस ने शस्त्रों की होड़ से बचने के लिए **एंटी बैलिस्टिक मिसाइल** (एबीएम) संधि पर हस्ताक्षर करे थे। अपने मिसाइल कवच को सुरक्षित रखने के लिए अमरीका ने एकतरफा रूप से इस संधि को नकार दिया। पर मिसाइल सुरक्षा के हिमायतियों को इससे कुछ फर्क नहीं पड़ा।

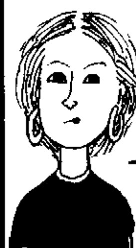
अमरीका ने एक ओर जमीन से मार करने वाली मिसाइलों की संख्या कम की पर दूसरी ओर उसने खरबों डॉलर खर्च कर पनडुब्बियों में ऍटामिक मिसाइलें फिट की हैं। **ऍटामिक टेस्टिंग** पर पाबंदी लगाने वाली संधि पर जहां 164 देशों से हस्ताक्षर किए हैं वहीं अमरीका ने उसे नकारा है।



88

अमरीका के पास इतने अधिक ऍटामिक शस्त्र हैं कि वो पूरे विश्व का सर्वनाश कर सकता है।

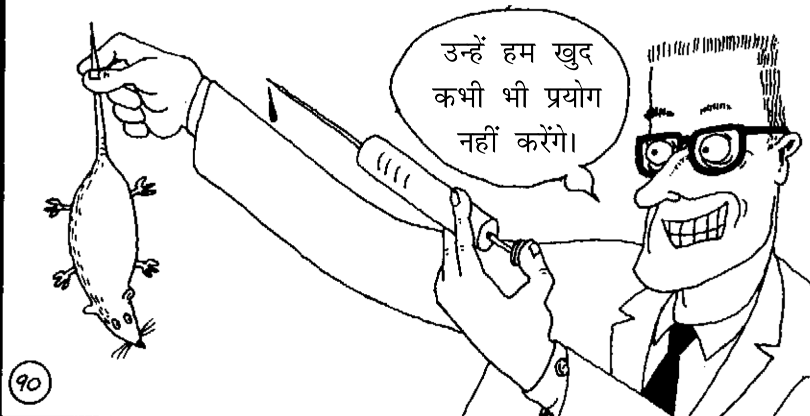




रूस में ऍटामिक निशाने कम होने के बाद से अब पेन्टागन हर सम्भावित दुश्मन की ओर अपनी मिसाइलें साध रहा है।

89

शीत-युद्ध खत्म होने के बाद युद्ध-बंदी सभी संधियों से अमरीका ने अपना नाता तोड़ लिया। 1972 में उसने **जैविक हथियारों** की संधि पर हस्ताक्षर करने से मना कर दिया - क्योंकि उससे अमरीका में जैविक हथियार बनाने वाली संस्थाओं का **अंतर्राष्ट्रीय इंस्पेक्शन** जरूरी हो जाता। अमरीका जैविक हथियारों की रेस में काफी आगे है। उसने विषैला **एंथरैक्स** पाउडर भी इजाद किया है। अमरीकी प्रवक्ता के अनुसार उसका देश **कीटाणु-हथियार** इसलिए विकसित कर रहा है जिससे वो उनसे बचाव के तरीके खोज पाये।



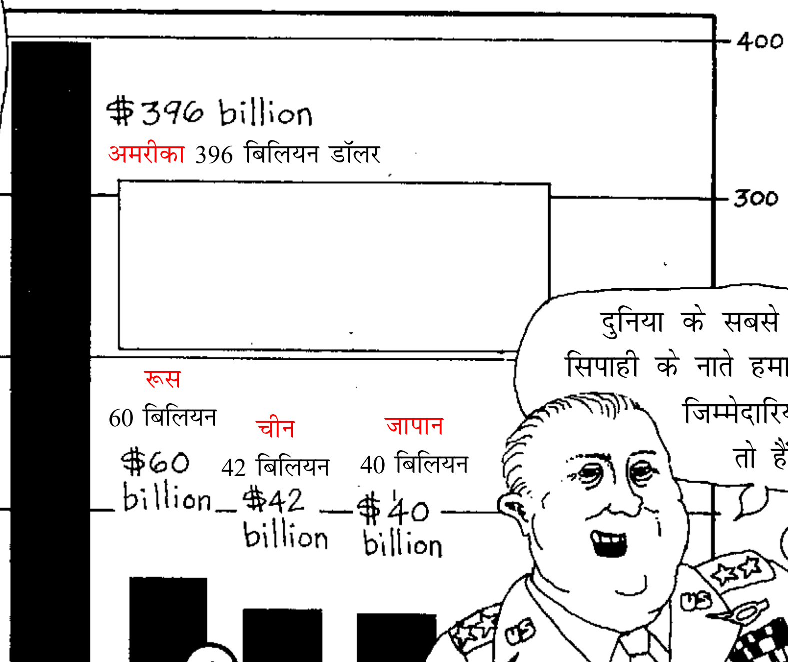
पर कौन सा मुल्क ऐसी सरकार पर यकीन करेगा जिसने हिरोशिमा और नागासाकी पर एॅटम-बम्ब बरसाये और जिसने वियतनाम और क्यूबा पर **चेचक** और **जीवाणु हथियारों** के प्रयोग की योजना बनाई?



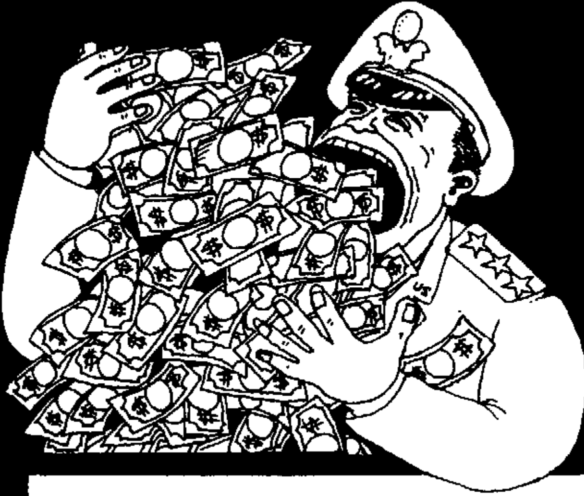
अमरीका के **कीटाणु-हथियार** दुनिया भर के लोगों के लिए एक खतरा हैं।



शीत-युद्ध के दौरान अमरीका के साथ स्पर्धा में रूस था। अब तो कोई कम्पटीशन नहीं है। फिर अमरीका इतना बड़ा युद्ध तंत्र क्यों खड़ा कर रहा है? अमरीका का सुरक्षा बजट इतना विशाल है कि अगले पच्चीस सबसे ज्यादा खर्चीले देश कुल मिलाकर भी अपनी सुरक्षा पर इतना खर्च नहीं करते। दुनिया के कुल सुरक्षा बजट का 36 प्रतिशत केवल अमरीका खर्च करता है।







अध्याय पांच

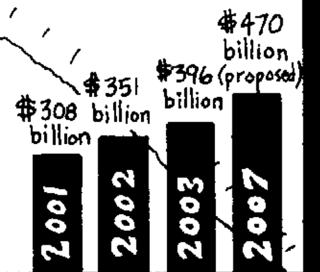
युद्ध की ऊंची कीमत

एक बड़ी सेना मुफ्त में तैयार नहीं होती। हर साल अमरीका अपनी फौज पर सैकड़ों बिलियन डॉलर खर्च करता है।

$396,100,000,000

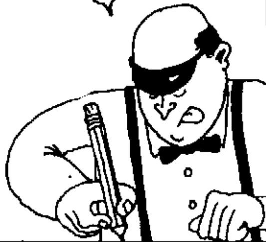
डॉलर 396,100,000,000

सुरक्षा बजट (वर्ष 2003)



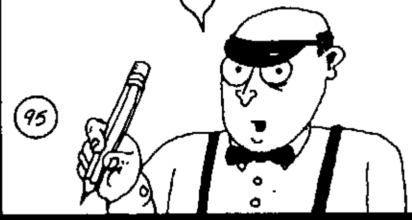
93

अपना मिलिट्री साम्राज्य गढ़ने में 1948 से अमरीका ने 15 ट्रिलियन डॉलर खर्च किए हैं। असल में यह रकम कितनी बड़ी है?



94





95

इसका मतलब हुआ कि अमरीकी सरकार ने पिछले चार दशकों में फौज पर जितना खर्च किया है वो उसकी सारी फैक्ट्रियों, मशीनों, सड़कों, पुलों, पानी और सीवर की लाइनों, ऐंअरपोर्ट, रेलगाड़ियों, बिजलीघरों, आफिस बिल्डिंगों, शॉपिंग सेंटर, स्कूल, अस्पताल, होटल, घर आदि की कुल कीमत से ज्यादा है!



वर्तमान में अमरीका पेन्टागन के बजट, ऍटामिक-शस्त्रों, नासा, विदेशी सैनिक सहायता, सैनिक वेल्फेयर, सूद, और अन्य सैन्य खर्चों पर हर साल 776 बिलियन डॉलर खर्च करता है।



96

हर अमरीकी परिवार औसतन हर साल 4400 डॉलर का टैक्स चुकाता है जिससे की दुनिया की सबसे ताकतवर सेना कायम रह सके।

अंब समझ में आया कि घर खर्च चलाने में मुझे दिक्कत क्यों आती है।



97

अगर तुम्हें और कुछ चाहिए तो बस आवाज देना!



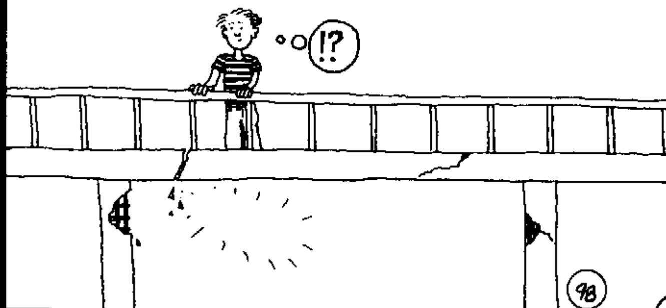
क्योंकि कांग्रेस तो पेन्टागन को दिल खोल कर पैसे देने को तैयार है।

इससे सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रमों में कटौती होती है।

हम तो छोटे लोग है – हम तो बजट नहीं बनाते!



पुल, सड़कों, सीवर और पानी की लाइनों की हालत खस्ता है क्योंकि सरकार उनके सही रख-रखाव के लिए खर्च नहीं करती।



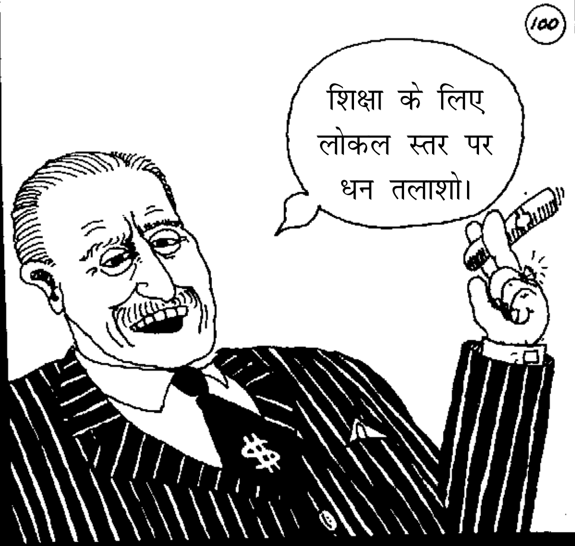
98

बसों के किराए बढ़ रहे हैं और सरकार पब्लिक ट्रांस्पोर्ट के बजट में कटौती कर रही है।

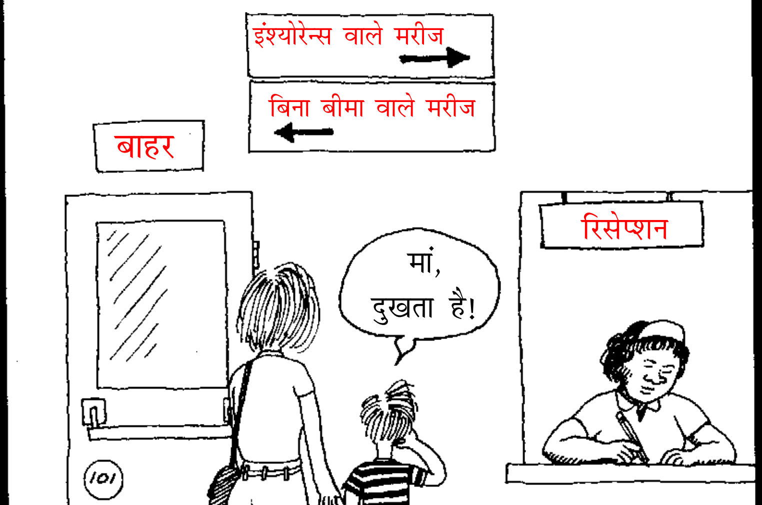


99

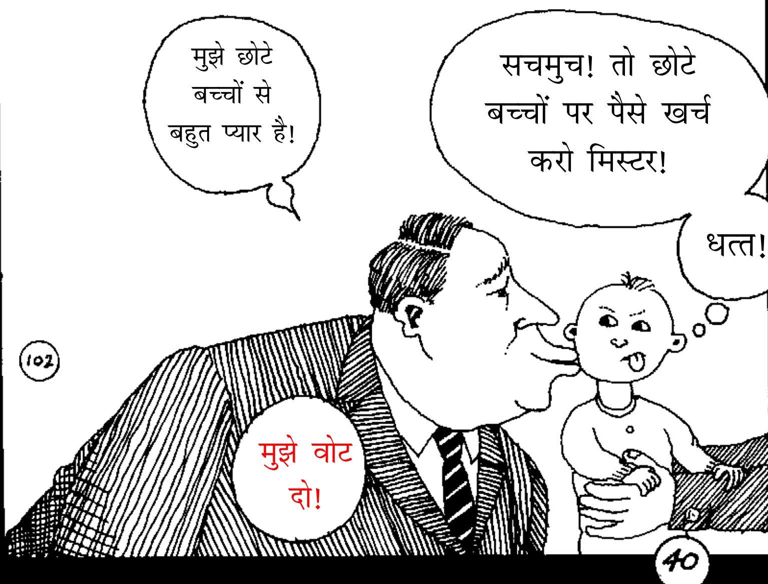
स्कूलों में बहुत भीड़ है और उनकी हालत खस्ता है। शहरों की बस्तियों में स्थित कई हाई स्कूलों में 80 प्रतिशत छात्र पढ़ाई छोड़ देते हैं। 20 प्रतिशत व्यस्क न तो अर्जी पढ़ सकते हैं और न ही इश्तहार। पिछले दो दशकों में प्रति छात्र शिक्षा बजट घटा है।



ऊंची दरों के कारण स्वास्थ्य सेवाएं भी चरमरा रही हैं। 430 लाख लोगों के पास कोई इंश्योरेन्स नहीं है। करोड़ों लोगों के पास बहुत कम बीमा है। अधिकांश गरीब लोगों को सही मेडिकल सुविधाएं उपलब्ध नहीं हैं। इसके बावजूद सरकारी अस्पतालों को बंद करा जा रहा है। सरकार ने स्वास्थ्य सेवाओं को बदलने के लिए कोई ठोस कदम नहीं उठाया है।



20 प्रतिशत गर्भवती महिलाओं को गर्भ-पूर्व की सुविधाएं नहीं मिलती हैं। इस कारण विकसित देशों में अमरीका की शिशु मृत्यु दर सबसे अधिक है (जापान से दुगनी)। हरेक पचास मिनट में अमरीका में एक बच्चा गरीबी और भुखमरी से मरता है। उसके बावजूद कांग्रेस गर्भवती महिलओं और शिशु स्वास्थ्य कार्यक्रमों में कटौती करती है।



बढ़ते किराए और घटते वेतन के कारण करोड़ों लोग बस किसी तरह जिंदा हैं। लाखों लोग सड़कों पर रहने को मजबूर हैं। परंतु जब गरीबों के लिए घर बनाने की बात उठती है पर वाशिंगटन, राष्ट्रपति रीगन का रवइया अख्तियार करता है।

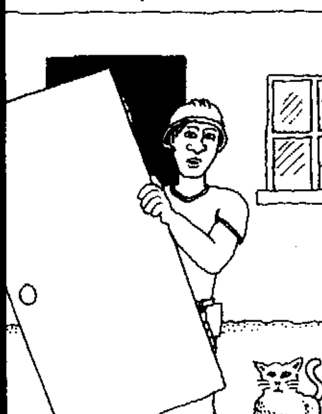


ड्रग्स और दारू ने लाखों लोगों, परिवारों और समुदायों को तबाह किया है। उसके बावजूद उनके इलाज के लिए सरकारी केंद्रों की बेहद कमी है। जो हैं भी वे भी आर्थिक सहायता के अभाव में बंद हो रहे हैं।





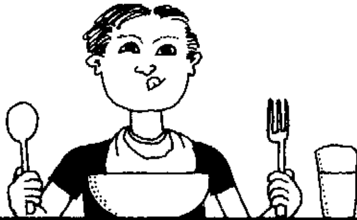






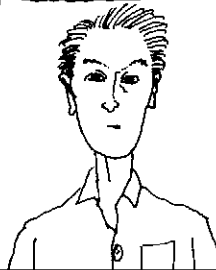


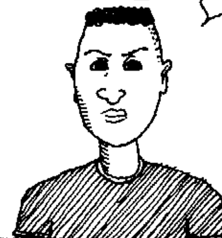




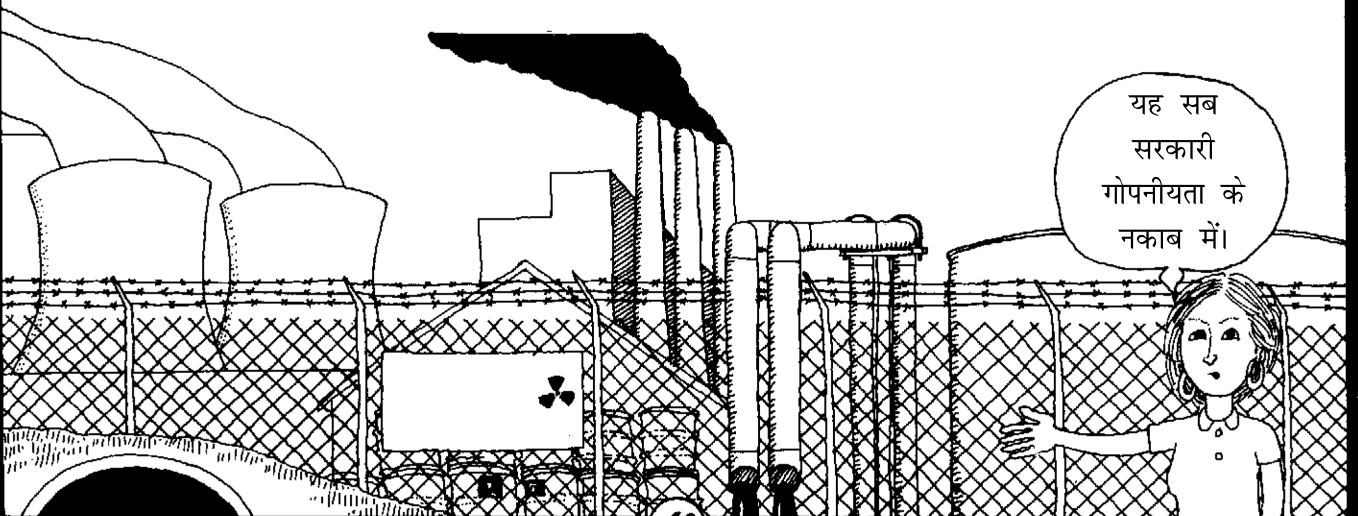


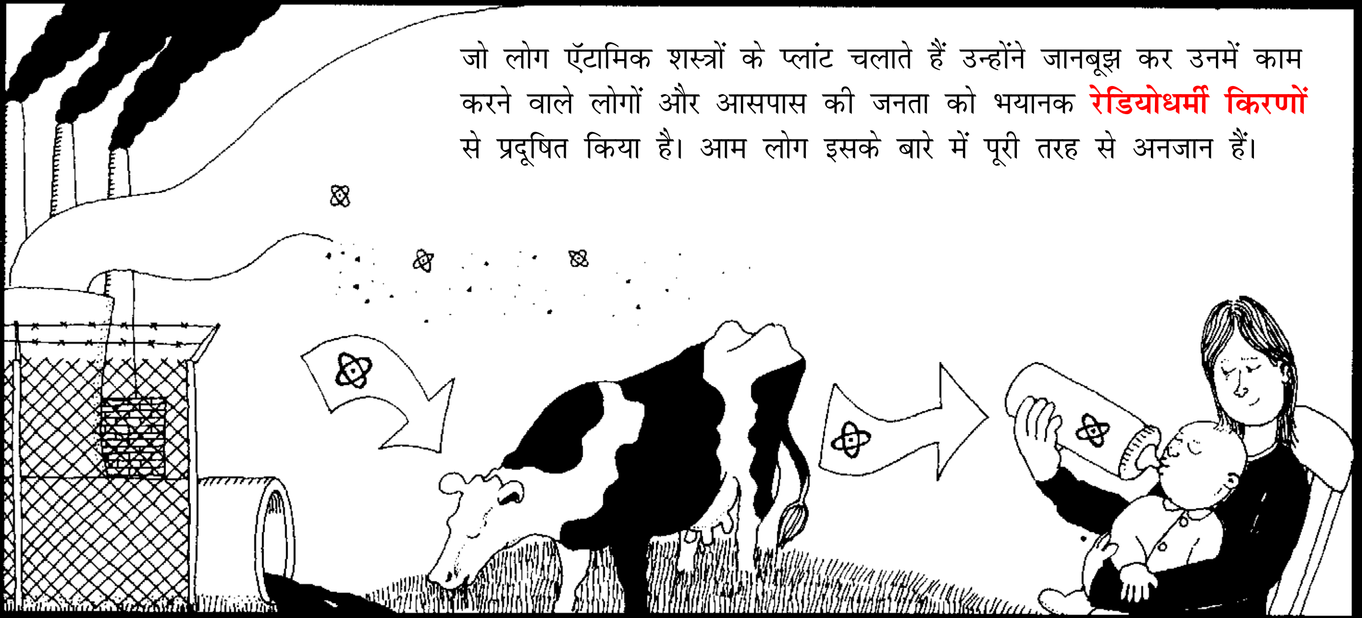




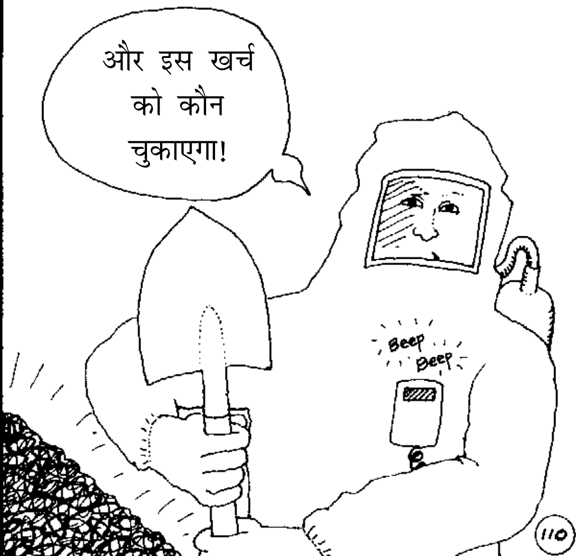


ऊंचे रक्षा बजट से लोगों पर टैक्स का भार बढ़ता है और सरकार सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रमों में कटौती करती है। ऍटामिक-शस्त्रों के निर्माण ने इस देश के पर्यावरण की सबसे ज्यादा तबाही की है। ऊर्जा विभाग के 100 से अधिक ऍटामिक-शस्त्र प्लांट नदियों, हवा और जमीन में रेडियोधर्मी कचरा फेंक रहे हैं। इससे मिट्टी और भूमिगत पानी प्रदूषित हो रहा है।





एक सरकारी अनुमान के अनुसार इन **रेडियोधर्मी प्लांट्स** की सफाई में 25,000 कर्मचारियों को 30 साल लगेंगे और उसकी कीमत 300 बिलियन डॉलर होगी।



इससे भी ज्यादा **ऍटामिक-शस्त्रों** के परीक्षण ने पश्चिम के बहुत बड़े इलाके में भयानक प्लूटोनियम फैलाया है। जिन 458,000 सैनिकों ने इन ऍटामिक परीक्षणों में भाग लिया उनमें से बहुत लोग अब **कैंसर** से मर रहे हैं।

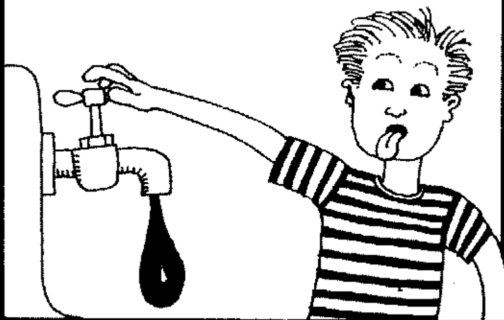


पर **कैंसर** इन सैनिकों तक ही सीमित नहीं है। ऍटामिक परीक्षण के पूरे इलाके में बसे लोगों में कैंसर का प्रकोप बहुत ज्यादा है। एक शोध के अनुसार इस शताब्दी के अंत तक सिर्फ ऍटामिक परीक्षण द्वारा लगभग 430,000 लोगों की मौत होगी।



112

इस दौरान पूरे देश की मिलेट्री बेसों पर हजारों-लाखों टन जहरीला कचरा फेंका गया है। इनमें युद्ध के रासायन, नापाल्म, विस्फोटक, पीसीबी, और भारी धातुएं शामिल हैं। यह कचरा वहां गंदे गड्ढों में कैद है और आसपास के भूमिगत जल को प्रदूषित कर रहा है।



इस तरह के लगभग 11,000 मिलेट्री स्टेशन हैं जिनकी सफाई की सख्त जरूरत है। इसका खर्च 100 से 200 बिलियन डॉलर के बीच आएगा।

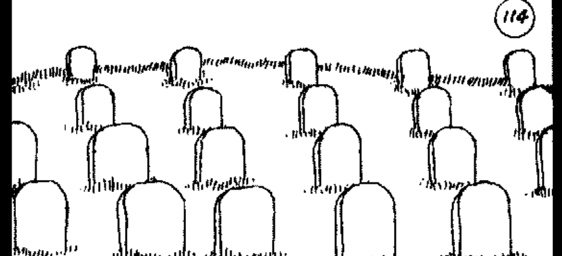




इस देश में लगभग हरेक व्यक्ति को इस अनैतिक सुरक्षा की कीमत अदा करनी पड़ी है। पर इनकी सबसे ज्यादा कीमत उन लाखों अमरीकी सैनिकों ने चुकाई है जिन्हें विदेशों में लड़ने के लिए भेजा गया है।



1950 में पहली दफा कोरिया में फौज भेजे जाने के बाद से अब तक करीब एक लाख अमरीकी सैनिक विदेशी युद्धों में मारे गये हैं।



सैकड़ों-हजारों सैनिक घायल हुए हैं और जिंदगी भर के लिए अपंग हुए हैं। खाड़ी में जिन अमरीकी सैनिकों ने हिस्सा लिया था वे **'खाड़ी युद्ध सिंड्रोम'** से पीड़ित हैं।

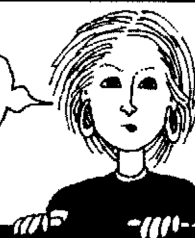


जिंदा बचे सैनिक खुद लड़ाई के खौफ से पीड़ित हैं। वियतनाम में लड़ने वाले करीब 5 लाख अनुभवी सैनिक युद्ध के **मानसिक तनावों** से ग्रसित हैं। वियतनाम युद्ध समाप्त होने के बाद जिन सैनिकों ने शुदकशी की है उनकी संख्या युद्ध में मरने वाले सैनिकों से अधिक है।

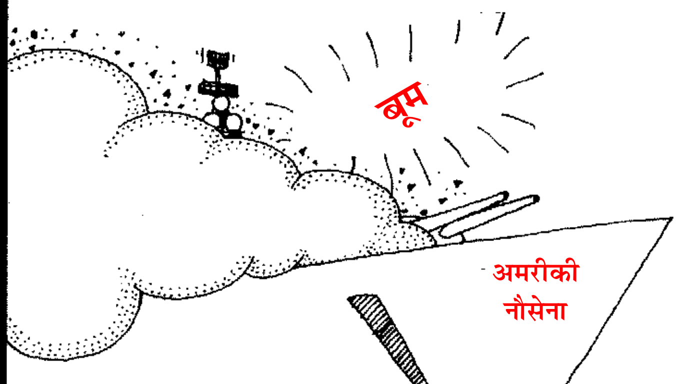


बहुत से अनुभवी और बूढ़े फौजी अब सड़कों पर बसर करने को मजबूर हैं।

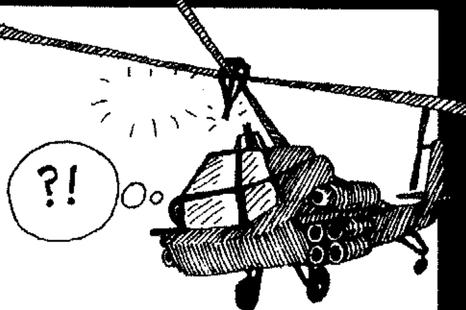
116



हर साल एक हजार से ज्यादा सैनिक और नौसेना अफसर **मिलेट्री दुर्घटनाओं** में मरते हैं। वो समुद्री आग में झुलसते हैं, टैंकों द्वारा कुचले जाते हैं या फिर बंदूकों द्वारा मारे जाते हैं।

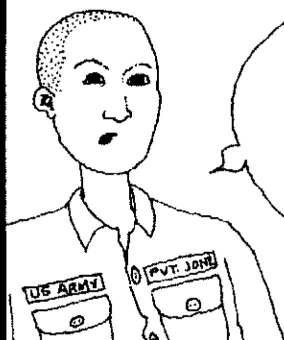


हवाई जहाजों से तेज रफ्तार हवा में असुरक्षित हेलिकाप्टरों में कूदते समय सैनिकों की गर्दन टूट जाती है।

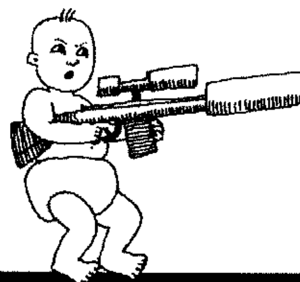


117

यह सब लोग हमारे लड़ाई के प्रति लगाव के शिकार हैं। यही नहीं, और भी बहुत लोग हैं...



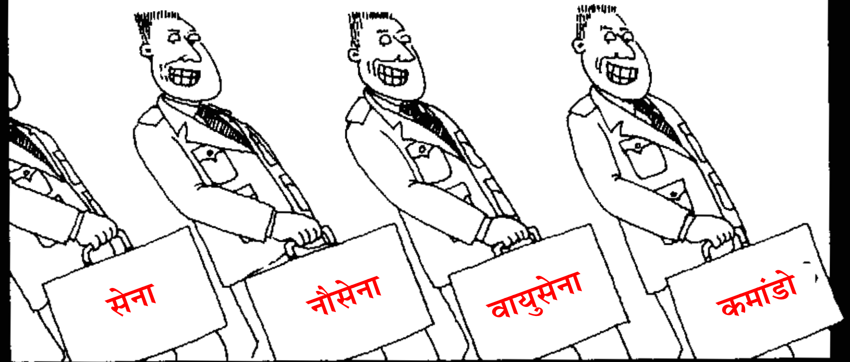
कोई भी इंसान अपमानित होने और युद्ध में मारे जाने के लिए पैदा नहीं होता है। इसलिए सैनिक शासन शुरू से ही उनके दिमाग में **जंग की संस्कृति** ठूंसता है।



टेलिविजन, सिनेमा, विडियो-गेम्स और खिलौने सभी मरने-मारने की संस्कृति को महान करार देते हैं।



एक ओर हाई स्कूल के प्रिंसिपल दरवाजे बंद कर बंदूकधारी चौकीदारों को तैनात करके छात्रों को ड्रग डीलर्स, दलालों और अन्य खतरनाक लोगों से बचाते हैं। दूसरी ओर वो सबसे खतरनाक लोगों – फौज के **भर्ती-अफसरों** का दिल खोल कर स्वागत करते हैं।



यह भर्ती-अफसर बच्चों से झूठ-फरेब भरे तमाम रंगीन वादे करते हैं।



इससे पहले कि नये रंगरूट फौज की असलियत को समझें वो उसमें बुरी तरह फंस जाते हैं।



जो लोग फ्रंट पर लड़ने जाते हैं वो अक्सर गरीब नौजवान होते हैं जो कॉलेज की फीस नहीं दे पाते। ज्यादातर के मां-बाप गरीब कामकाजी लोग होते हैं। उनमें से अधिकांश – **अफ्रीकी-अमेरिकन, मेक्सिकन, पियोरटो रिकन, मूल-अमरीकी आदिवासी** और अन्य **अल्पसंख्यक** होते हैं। इसका मतलब जंग में मरने वाले ज्यादातर गरीब लोग ही होते हैं।

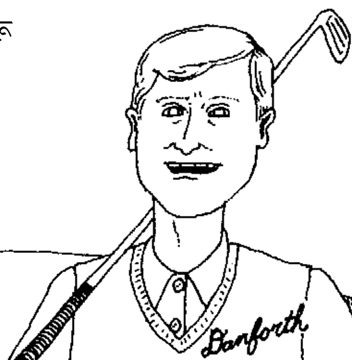
इसलिए वियतनाम के शहीदों में 22% **अफ्रीकी-अमेरिकन** सैनिक थे।



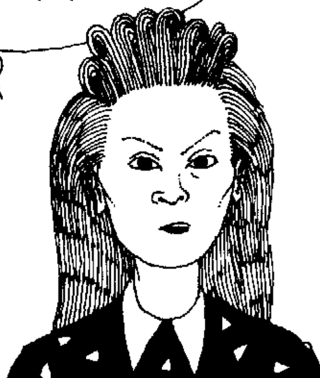
जबकि आबादी में उनका हिस्सा केवल 12% था।



सबसे बड़ा अन्याय तो यह है कि युद्ध शुरू करने वाले कभी खुद युद्ध में नहीं मरते।

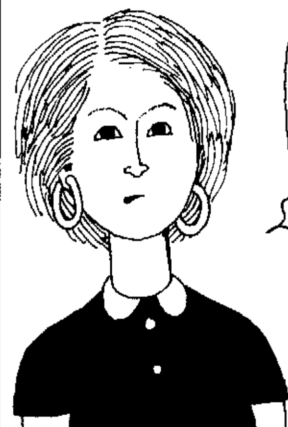


मारिया कौट्टो ने इस अन्याय के खिलाफ अपनी आवाज बुलंद की। उसका भाई खाड़ी के युद्ध में शहीद हुआ था।



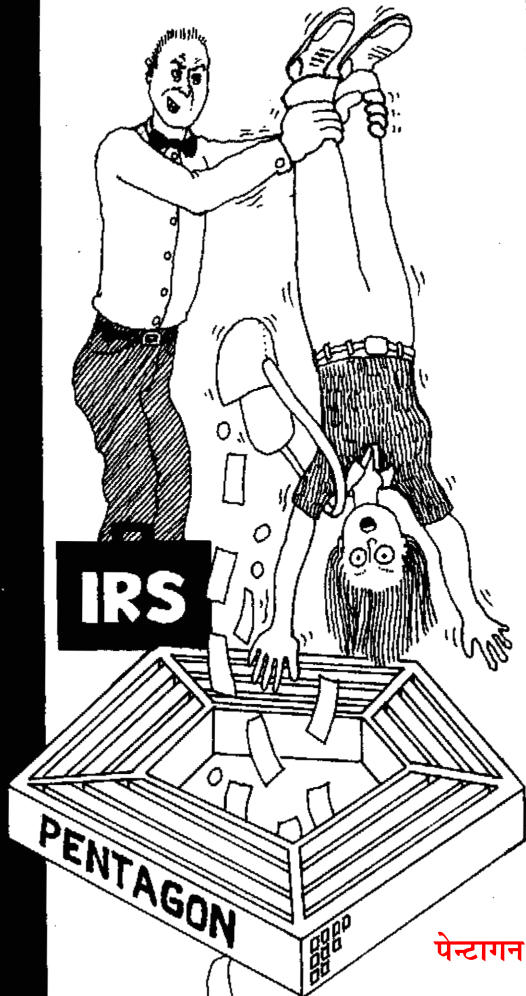


इस्माईल कौट्टो - सऊदी अरब में जनवरी 1991 में शहीद (उम्र 27 वर्ष) ब्रांक्स, न्यूयार्क





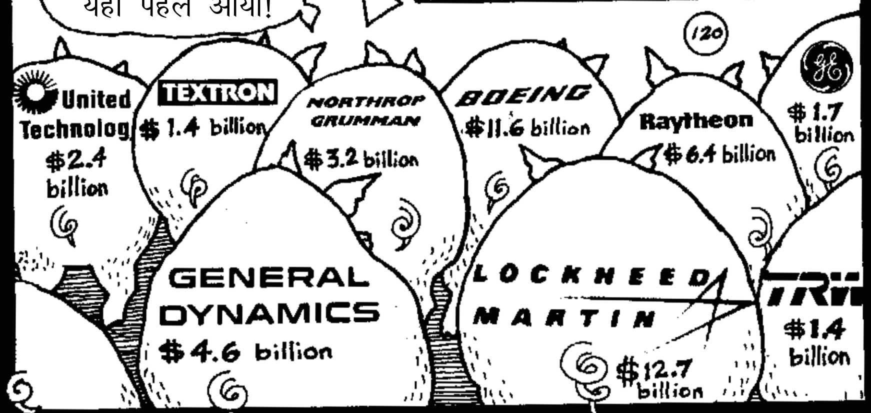
पेन्टागन के भीमकाय बजट के कारण आम लोगों की जेबों में कम पैसे ही बचते हैं।



पर इससे कुछ लोग मालामाल होते हैं।



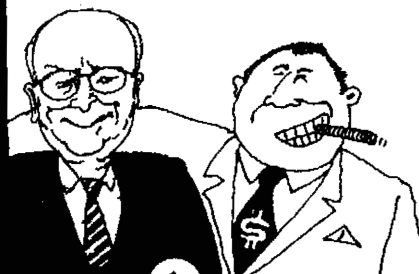
करीब एक लाख कंपनियों को पेन्टागन के ठेके मिलते हैं। परंतु इनमें से बड़े ठेके कुछ चुनिंदा बड़े कारपोरेशंस को ही मिलते हैं।



इन बड़े कारपोरेशंस के मालिक अपनी बेशुमार दौलत के लिए पेन्टागन के शुक्रगुजार हैं। यह सारा धन आपके टैक्स से आता है। इसलिए इसका कुछ हिस्सा वाशिंगटन में बैठे उनके मित्रों और आकाओं को भी मिलता है।



जार्ज बुश के उपराष्ट्रपति **डिक चेनी** उन सफल राजनेताओं में से हैं जिन्होंने मिलेट्री-उद्योग से बेहद मुनाफा लूटा। खाड़ी युद्ध के समय चेनी, जार्ज बुश के पिता के रक्षा-सचिव थे। उस समय उन्हें **हैलीबर्टन कारपोरेशन** का सीईओ नियुक्त किया गया। **हैलीबर्टन** तेल के धंधे में था और उसे खाड़ी युद्ध से बड़ा फायदा हुआ। एक बड़े मिलेट्री ठेकेदार की हैसियत से भी **हैलीबर्टन** ने खरबों डॉलरों की कमाई की। **डिक चेनी** के कार्यकाल में हैलीबर्टन को मिलने वाले सरकारी ठेकों में बढ़ौत्तरी हुई।



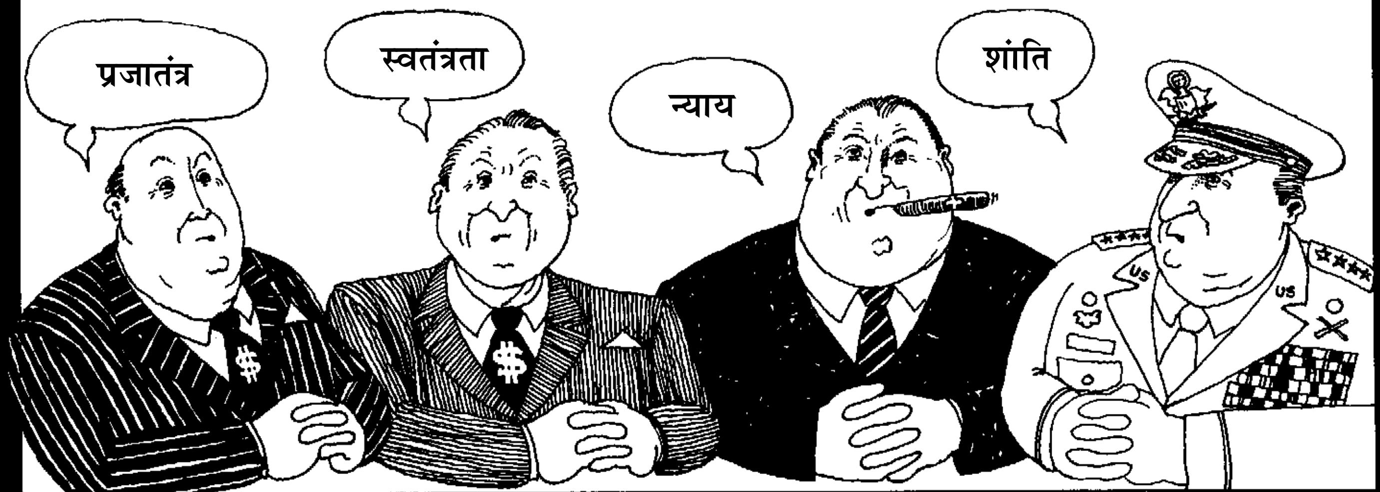
इसके लिए **चेनी** को भरपूर पुरुस्कार मिले – करोड़ों का वेतन और फिर हर साल कंपनी के स्टॉक में हिस्से। धीरे-धीरे वो **हैलीबर्टन** का सबसे बड़ा स्टॉकहोल्डर बना – चेनी के पास कुल 450 लाख डॉलर के स्टॉक थे। (123)



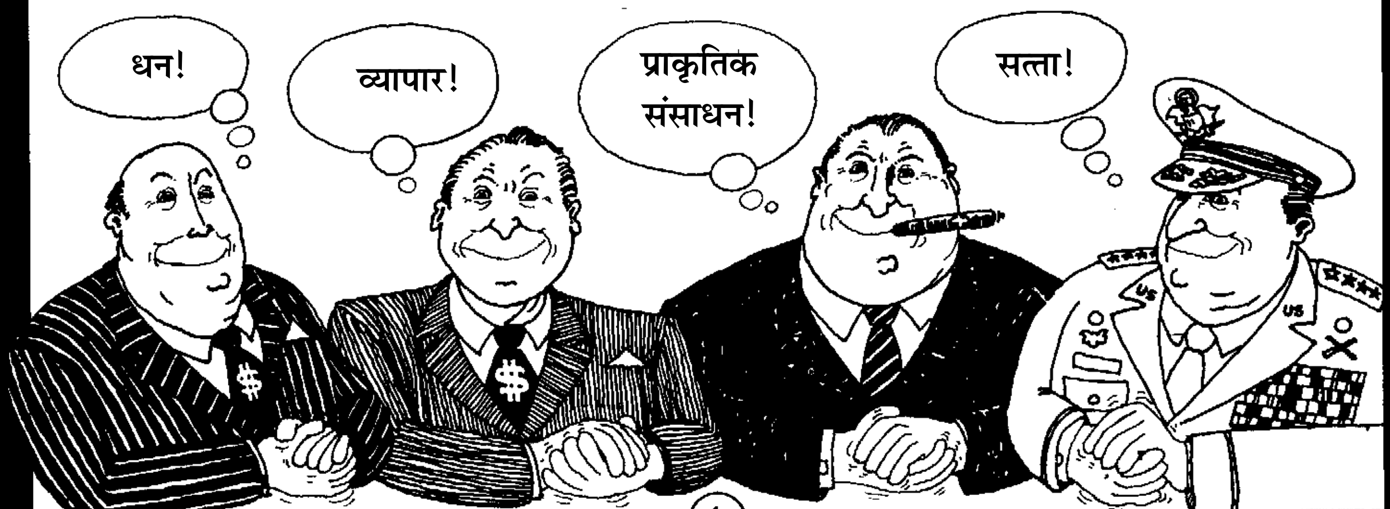
चेनी को मिलेट्री के दो अन्य बड़े ठेकेदारों – **टीआरवी** और **ईडीएस** ने अपने बोर्ड पर नियुक्त किया। चेनी की पत्नी **लॉकहीड-मार्टिन** के बोर्ड की सदस्य बनीं। जब 2001 में चेनी व्हाईट हाऊस में वापस लौटे तब **लॉकहीड-मार्टिन** को इतिहास का सबसे बड़ा ठेका मिला – जिसमें उसे अगली पीढ़ी के नवीनतम फाइटर-जेट बनाने थे। ठेका करोड़ों-खरबों डॉलर का था। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि डिक चेनी **आतंकवाद पर युद्ध** के सबसे उत्सुक समर्थक थे।



युद्ध को बढ़ावा देने में तमाम अग्रणी बैंकर, कारपोरेशंस, राजनेता और फौजी जनरल लगे हैं। अगर आप उनसे पूछें कि उन्हें युद्ध इतना पसंद क्यों है तो वो आपको तमाम महान और स्वार्थरहित कारण बतायेंगे।



पर युद्ध करने की उनकी असली प्रेरणा कुछ अलग ही है:



अध्याय पांच

सैनिक शासन और मीडिया

कुछ लोगों के लिए युद्ध **मुनाफे** और **निवेश** के अवसर खोलता है।



पर आम लोगों के लिए युद्ध का मतलब अधिक **टैक्स** और मृतकों के **शव** होते हैं।



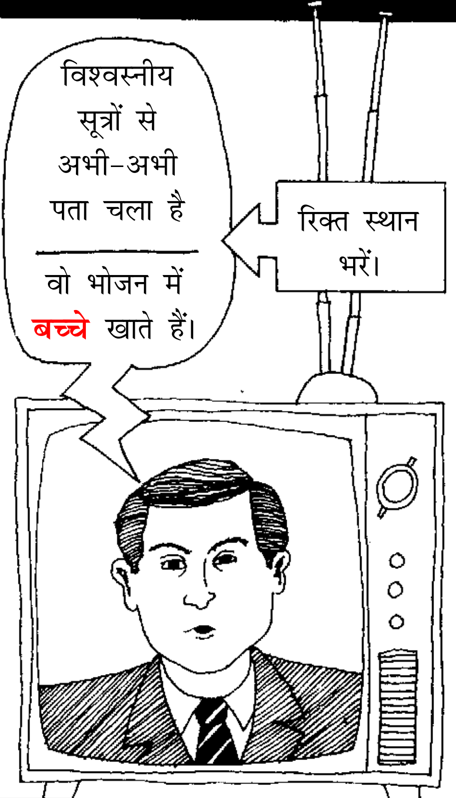
आम लोग मुनाफाखोरों से अलग होते हैं। वो युद्ध नहीं चाहते हैं।



क्योंकि लोग विदेशों में चल रहे युद्ध में जाने को तैयार नहीं होते हैं इसलिए सरकारी प्रवक्ता उन्हें मनवाने और राजी करने के भरसक प्रयास करते हैं। वो अपनी दलीलों को **राष्ट्रीयता** और **देशभक्ति** का जामा पहनाते हैं जिससे कि लोग उनमें फंसें।



मीडिया उस समय के दुश्मन का भयानक चित्रण करता है।



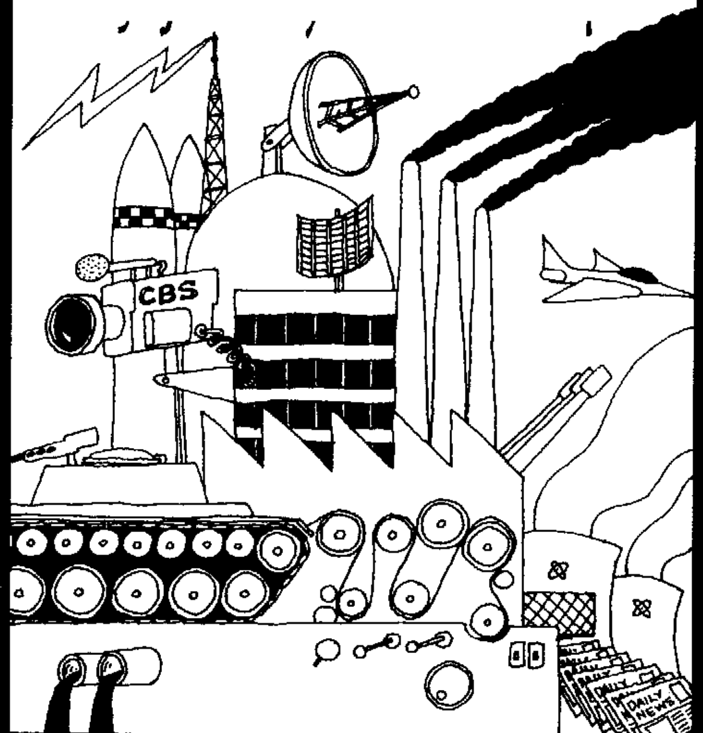
विलियम रैन्डौल्फ हियर्स्ट के दिनों से युद्ध समर्थकों ने अपना संदेश मीडिया के जरिए लोगों तक पहुंचाया है।

एक स्वतंत्रता बांड खरीदो युद्ध में अपना योगदान दो



हियर्स्ट का युद्ध संदेश (1917)

परंतु **द्वितीय महायुद्ध** के बाद अखबार, रेडियो और उभरते टेलिविजन नेटवर्क पूरी तरह से नये **मिलेट्री-उद्योग काम्पलेक्स** के एक अभिन्न अंग बन गये।



तभी **शीत-युद्ध** प्रारम्भ हुआ और उसमें मीडिया-जगत को अपना रोल साफ नजर आया। **चार्ल्स विल्सन** - जनरल इलेक्ट्रिक के चेयरमैन (जिन्हें ट्रूमैन ने सुरक्षा विभाग का प्रमुख नियुक्त किया था) ने 1950 में अखबारों के प्रकाशकों की एक मीटिंग में इस कार्य को स्पष्टता से बयां किया:



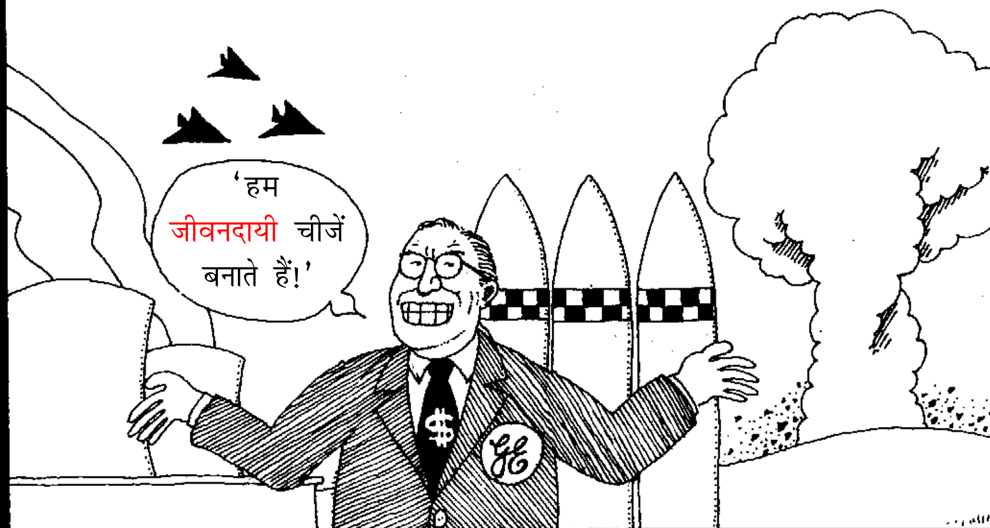
'अगर लोगों को समझ में नहीं आया (कि मुक्त दुनिया को खतरा है) तो कांग्रेस किसी भी हालत में इस खतरे से निपटने के लिए धनराशि नहीं दे पाएगी। परंतु प्रेस की मदद से हम जनता की **राय को ढाल** सकते हैं। यही हमारा काम है - आपका और मेरा - जनता को समझाना कि अमरीकी सैन्य ताकत को बढ़ा कर ही हम इस खतरे से अपने आपको बचा सकते हैं।'

जनरल इलेक्ट्रिक में **चार्ल्स विल्सन** और उसके साथी युद्ध को बढ़ावा देने के घोर समर्थक थे।

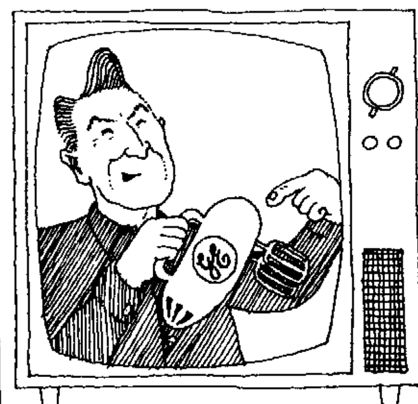
जीई कारपोरेशन के विश्व भर में भारी निवेश थे। वो चाहता था कि पेन्टागन उनकी सुरक्षा करे। इसलिए **जीई** इस **मिलेट्री-उद्योग -काम्पलेक्स** का एक अभिन्न सदस्य बना।



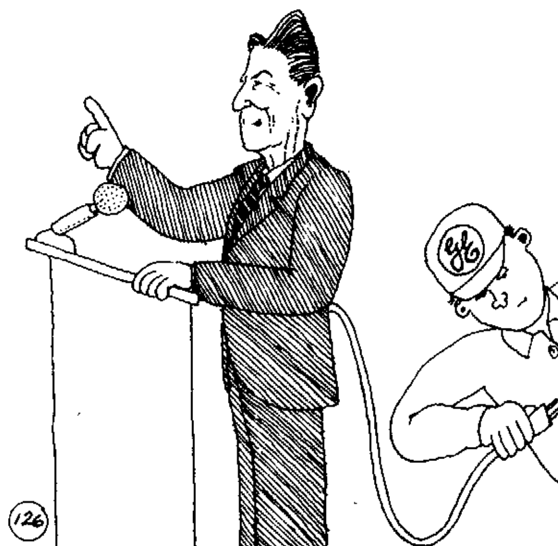
जीई कारपोरेशन देश में तीसरे नम्बर का **मिलेट्री ठेकेदार** है। वो हर साल करोड़ों-खरबों डॉलर का मुनाफा कमाता है। उसके द्वारा बनाये इलेक्ट्रानिक पुर्जे हर अमरीकी ऍटामिक मिसाइल, जेट इंजन, लड़ाकू जहाज और सैन्य शस्त्रों में लगते हैं। यही वो कम्पनी है जिसने गोपनीय तरीके से **हैनफोर्ड न्यूक्लियर** शस्त्र प्लांट से विषैली **रेडियोधर्मी किरणें** छोड़ीं। उसने ही पूरे देश में दोषी और खराब न्यूक्लियर प्लांट्स का निर्माण किया।



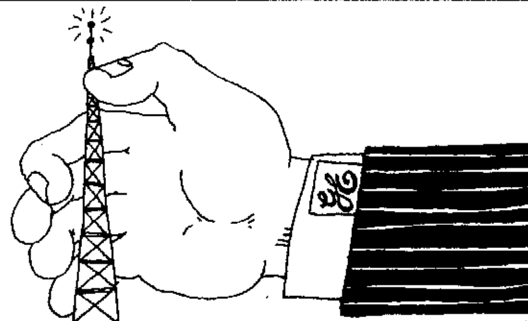
विल्सन के समय से ही **जीई** अपने हितों की रक्षा के लिए मीडिया का उपयोग कर रहा है। 1954 में उसने एक विफल एक्टर - **रोनेल्ड रीगन** को अपना कॉरपोरेट प्रवक्ता बनाया। उसने रॉन और नैन्सी को बिजली के सभी उपकरणों से सुसज्जित घर में बसाया और उनका अपना टीवी शो - **जीई थियेटर** शुरू किया।



जीई ने अपने राजनैतिक हितों के संरक्षण के लिए एक **भाषण** तैयार किया और रीगन को थमाया। रीगन ने देश भर में इसका प्रचार किया। तब से उनकी हरेक स्पीच इसी **भाषण** का रूपातंरण है।

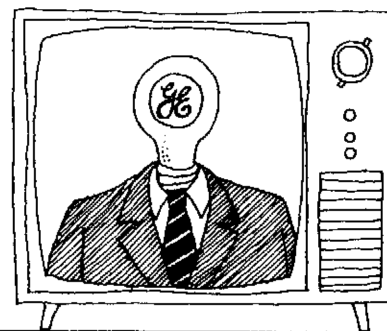


इस बीच **जीई** देश भर में नए टीवी और रेडियो चैनल खरीदने में व्यस्त था।



1986 में **जीई** ने अपना नेटवर्क – **एनबीसी** शुरू किया।

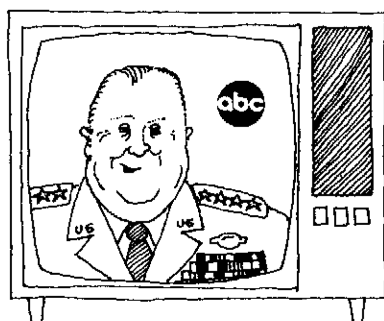
गुड ईवनिंग! मैं टॉम ब्रोकाव हूँ और यह **एनबीसी** की रात की खबरें हैं।



127

चार्ल्स विल्सन **एनबीसी** के कार्यक्रमों को देख बहुत खुश होता। यह नेटवर्क विल्सन के सुझाये तरीकों से जनता की राय मनवाने में बहुत सफल हुआ। और इसमें **एनबीसी** अकेला नहीं था। आपको सभी चैनलों पर वही संदेश सुनाई पड़ेगा।

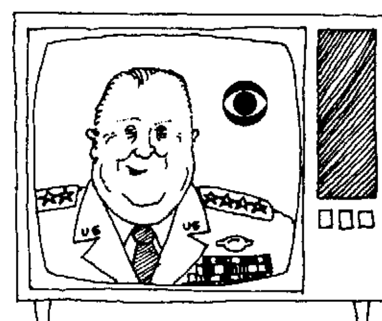
हमारी योजना 'एकदम सही तरह से लागू है।



हमारी योजना एकदम सही तरह से लागू है।



हमारी योजना एकदम सही तरह से लागू है।



खाड़ी के युद्ध के बाद बुश सरकार के एक उच्चस्तरीय योजनाकार ने प्रमुख पत्रकारों की एक बैठक बुलाई और उनकी मदद के लिए उनका शुक्रिया अदा किया।

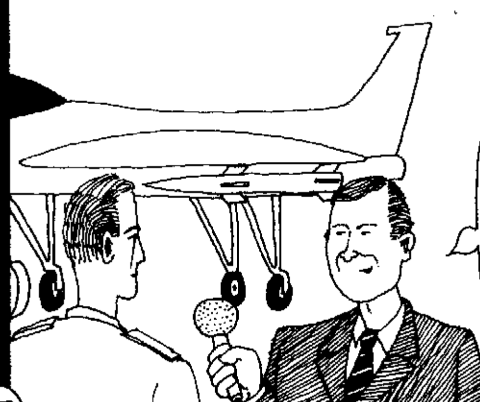


'अपनी नीतियों को जनता के गले उतारने का टेलिविजन हमारे लिए सबसे सशक्त माध्यम था।'

रिचर्ड हैस – राष्ट्रीय सुरक्षा काउंसिल (1991)

128

यह बिल्कुल सच है। टेलिविजन पर 24 घंटे युद्ध का कवरेज दिखाया गया जिसके प्रायोजक **जनरल इलेक्ट्रिक** और **एक्सान** थे और जिसे पेन्टागन ने मंजूरी दी थी।



कर्नल यह बतायें कि आपके हाई-टेक शस्त्र कुल कितनी जिंदगियों को बचा पायेंगे?

युद्ध के समय सभी टेलिविजन चैनल निष्पक्षता के मानकों को ताक पर रख देते हैं।

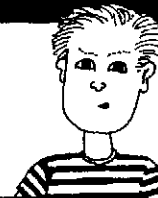


लौरेन्स क्रॉसमैन पीबीएस और एनबीसी न्यूज के बहुत सालों तक प्रमुख थे। उन्होंने प्रेस के रोल को इन शब्दों में समझाया:

'राष्ट्रपति का काम **एजेंडा** तय करना है और प्रेस का काम सरकारी एजेंडे का प्रचार-प्रसार करना है।'



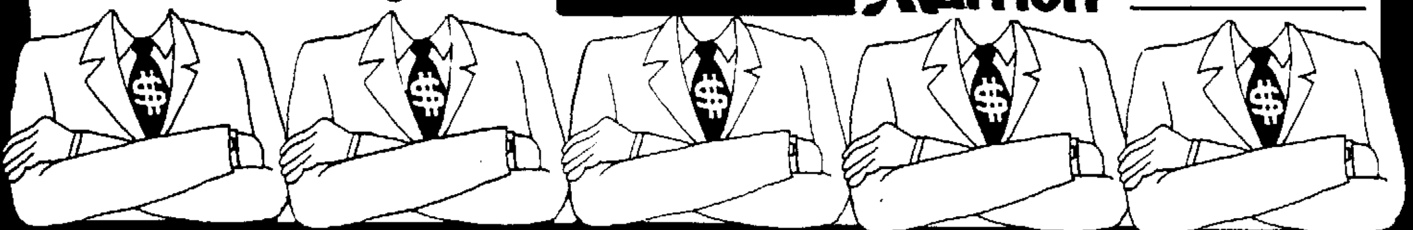
सारे नेटवर्क लगभग एक-जैसे क्यों नजर आते हैं? जैसे ही व्हाईट हाऊस सैनिकों को विदेशी आक्रमण के लिए भेजता है वैसे ही हर चैनल पर युद्ध का बुखार क्यों चढ़ जाता है?



चैनलों का कौन मालिक है? उत्तर शायद इस सच्चाई में छिपा हो।

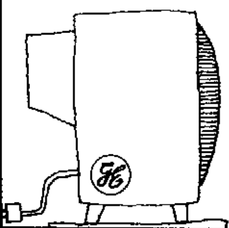
सारे टेलिविजन चैनलों के मालिक देश के बड़े-बड़े कारपोरेशंस हैं। एनबीसी – हमने अभी देखा **जीई** के आधीन है, सीबीएस का मालिक **वॉयोकॉम**, एबीसी का मालिक **डिस्ने**, और सीएनएन का मालिक **एओएल-टाइम वार्नर** है। इन शक्तिशाली कारपोरेशंस के उच्च अधिकारी साथ-साथ हथियार बनाने वाली कम्पनियों के बोर्ड – जैसे **सन-माइक्रो सिस्टम, ईडीएस, ल्यूसेन्ट टेक्नालोजीस, प्रूडेनशियल** आदि के बोर्ड पर भी आसीन हैं। शस्त्र बेंचने और युद्ध बढ़ाने में उनके निहित स्वार्थ हैं।

आप जो चाहेंगे नेटवर्क आप तक पहुंचायेगा!



हमें जो कुछ भी खबरें मिलती हैं – शांति और युद्ध के बारे में और हर विषय पर – वो सभी हमारे सामने **कारपोरेट हितों** के चश्मे द्वारा पेश की जाती हैं। सरकार और न्यूज मीडिया जनता की राय को ढालने में एक महत्वपूर्ण रोल निभाती है।

इन शक्तिशाली चैनलों का जनता पर प्रभाव कारपोरेशंस की उम्मीद से फिर भी कम है।



सभी लोग राष्ट्रपति के समर्थन में खड़े हैं।

हां



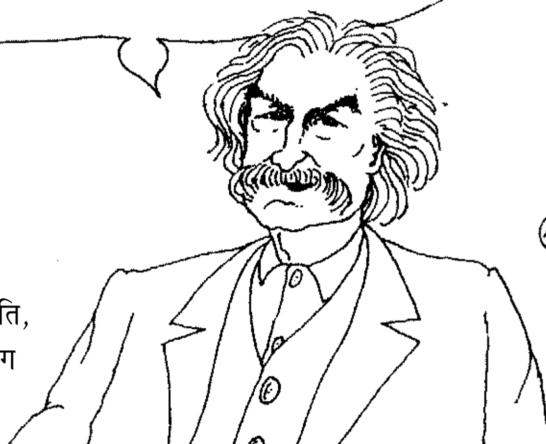


अध्याय सात

सैनिक शासन का प्रतिरोध

सच तो यह है अमरीका के स्पेन और मेक्सिको के साथ युद्ध के बाद से विदेशी आक्रमणों का जोरदार विरोध हुआ है। फिलिपीन्स के साथ जंग के दौरान **युद्ध-विरोधी** आंदोलन बहुत मजबूत हुआ।

'मैंने देखा है कि हमारा मकसद फिलिपीन्स को आजाद करना नहीं बल्कि उसे आधीन बनाना है। इसलिए मैं साम्राज्यवाद का विरोधी हूं। मैं नहीं चाहता कि चील अपने पंजों से दूसरे देशों पर झपटे। मुझे घृणा है कि हमारे होशियार लड़के बंदूक उठाकर विदेशों में एक कलुषित झंडे के आदर के लिए लड़ने जायें।'



मार्क ट्वेन – उपराष्ट्रपति, साम्राज्यवाद विरोधी लीग (1900)

जरा **चार्ल्स विल्सन** के युग में वापस चलें। उन्होंने मीडिया के साथ कोरियन युद्ध के पक्ष में समर्थन जुटाया था। शुरू में वो काफी सफल हुए। परंतु उनके अथक प्रयासों के बाद भी उन्हें बाद में समर्थन नहीं मिला। जब विदेशों से मृत सैनिकों के ताबूत अमरीका वापस आने लगे तो अधिकांश लोग युद्ध से घृणा करने लगे।



सरकार और मीडिया ने वियतनाम युद्ध के दौरान भी जनता का समर्थन जुटाने की कोशिश की। परंतु जैसे-जैसे युद्ध ने रौद्र रूप धारण किया वैसे-वैसे अमरीका में सबसे **बुलंद युद्ध-विरोधी आंदोलन** ने जन्म लिया। शुरू में युद्ध का विरोध करने वाले कुछ ही निष्ठावान लोग थे।



परंतु जैसे-जैसे लोगों को वियतनाम में हो रही घटनाओं का पता चला वैसे-वैसे युद्ध-विरोधी आंदोलन बल पकड़ने लगा। 1969 में युद्ध के विरोध में 750,000 लोगों ने वाशिंगटन की सड़कों पर प्रदर्शन किया और देश भर में लाखों लोग सड़कों पर उतर आये।



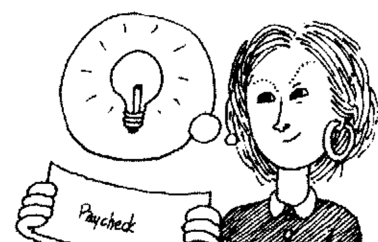
मई 1970 में पुलिस और नैशनल गार्ड्स ने **युद्ध-विरोधी आंदोलनकारियों पर गोली चलाई** जिसमें ओहायो की केन्ट स्टेट के चार छात्र और मिसिसिपी स्थित जैकसन यूनिवर्सिटी के दो छात्र मारे गए। उसके बाद 400 अमरीकी यूनिवर्सिटियों के छात्र हड़ताल पर गये। यह अमरीका के इतिहास में पहला सबसे बड़ा आंदोलन था।



जब पुलिस ने अगस्त 1971 में **शिकागो मौरेटोरियम** के दौरान तीन लोगों को गोलियों से भूना तब तीन दिनों तक पूर्वी लॉस-एंजेलस शहर विद्रोह की आग में धहकता रहा।



युद्ध के प्रतिरोध ने नये-नये रूप लिए। लोगों ने **युद्ध-टैक्स देने से इंकार** किया।



मिलेट्री सर्विस के पहचान पत्रों की लोगों ने होली जलाई।



मिलेट्री सर्विस का सबसे जोरदार प्रतिरोध **मोहम्मद अली** ने किया।



युद्ध में सैनिक और हथियार ले जा रही रेलगाड़ियों को रोकने के लिए लोगों ने नाकाबंदी की।



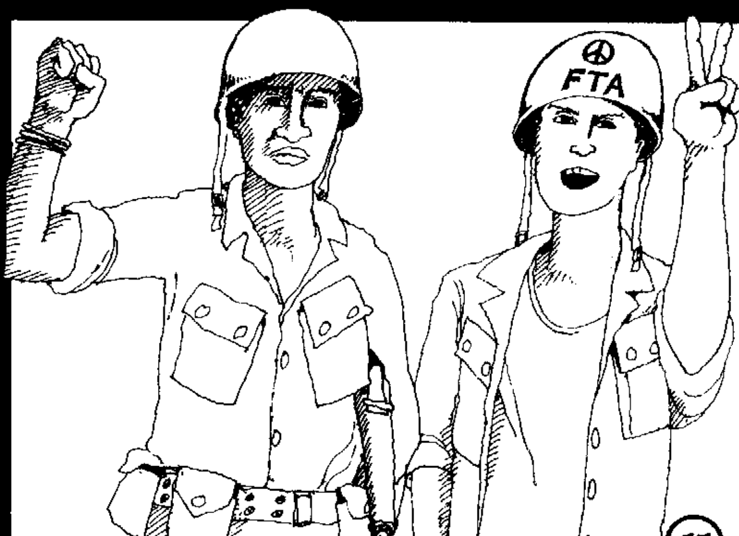
1971 में जब एक बड़ी भीड़ ने वाशिंगटन सरकार को तीन दिन के लिए ठप्प किया तो 14,000 लोगों को गिरफ्तार किया गया।



वियतनाम में सैनिकों का अनुशासन भंग हो रहा था। यह पेन्टागन के लिए सबसे गंभीर बात थी। सैनिकों के लिए लड़ने का कोई वाजिब कारण नहीं था। उन्होंने लड़ने से मना कर दिया। साठ के दशक के अंत में अफसरों और सैनिकों के बीच एक तरह का गृहयुद्ध जारी था। एक अमरीकी मिलेट्री विशेषज्ञ ने पेन्टागन को सेना की स्थिति के बारे में चेतावनी भी दी। (135) (136)



कर्नल रार्बट हाईनेल,
यू एस मरीन कोर्पस (1971)



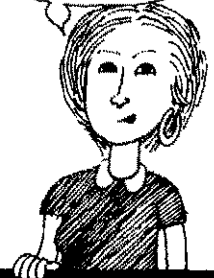
सैकड़ों-हजारों सैनिक और नाविक फौज छोड़ कर भागे। धीरे-धीरे सैनिकों का संगठित प्रतिरोध बढ़ने लगा। दुनिया भर के अमरीकी सैनिक अड्डों से सैकड़ों भूमिगत अखबार निकलने लगे। सैनिकों और नाविकों के दस्ते युद्ध-विरोधी मोर्चों की अगुवाई करने लगे।

वियतनाम से वापस लौटे सैनिकों ने पूरे देश को वहां हो रहे युद्ध की भयावह कहानियां सुनायीं और उसे बंद करने के लिए संगठित होने की अपील की। अप्रैल 1971 में वियतनाम से लौटे एक हजार सैनिकों ने वाशिंगटन की कैपिटल बिल्डिंग के सामने एकत्रित होकर युद्ध में मिले **मेडल्स और तमगों को वापस फेंका**।

(137)



दशक के अंत तक अमरीका में अधिकांश लोग युद्ध का विरोध करने लगे थे।



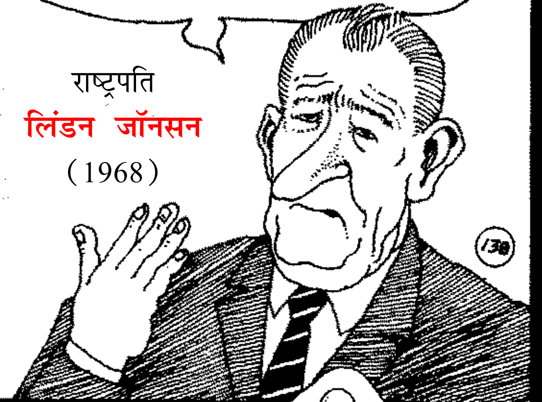
युद्ध-विरोधी आंदोलन के साथ-साथ अफ्रीकी-अमरीकन, लैटिनों, अमरीकी आदिवासियों, महिला आंदोलन और अन्य दलित आंदोलनों ने भी अन्याय के खिलाफ लोगों की आंखें खोलीं।

The NLF VIET CONG NEVER CALLED US NIGGER

युद्ध-विरोधी जोरदार आंदोलनों के कारण अमरीकी सरकार को वियतनाम से हटना पड़ा।

'आम अमरीकन की राय हमारी सबसे बड़ी कमजोरी है। अगर हमें लगातार नुकसान होता रहेगा तो लोग हमें समर्थन नहीं देंगे और हमारी सरकार को गिरा देंगे।'

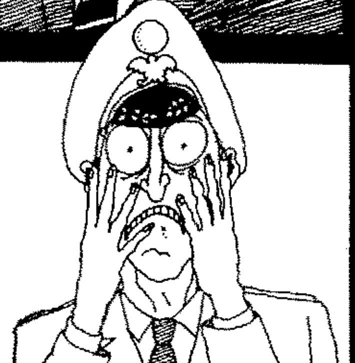
राष्ट्रपति **लिंडन जॉनसन** (1968)



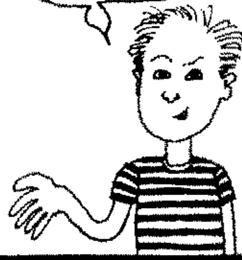
(138)

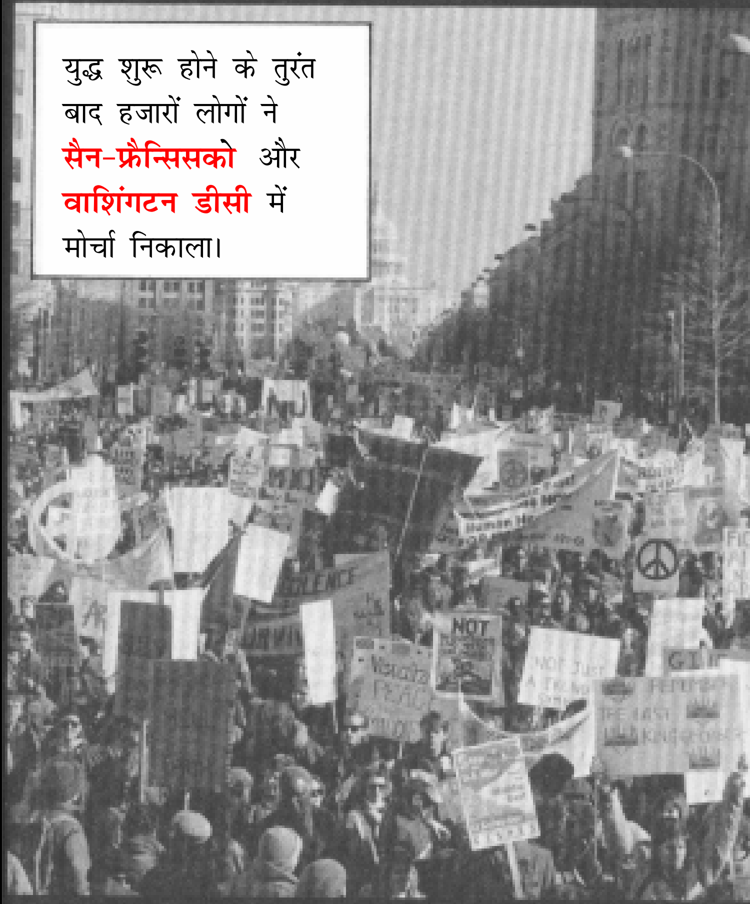
वियतनाम युद्ध के कारण अमरीकी लोगों में एक पुख्ता युद्ध-विरोधी भावना पनपी जिसे अधिकारियों ने **वियतनाम सिन्ड्रोम** का नाम दिया।

उस बीमारी का भूल कर भी नाम मत लेना!

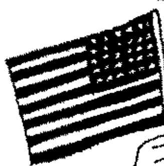


जब जार्ज एच बुश ने खाड़ी में सेना भेजी तो लोग पहले से ही भयभीत थे। अधिकांश लोग युद्ध के पक्ष में नहीं थे। इसलिए एक शक्तिशाली युद्ध-विरोधी आंदोलन बहुत तेजी से पूरी अमरीका में फैला।

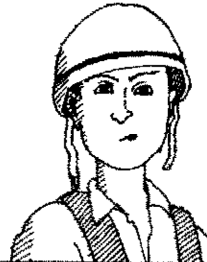




सरकार ने युद्ध के समर्थन में रैलियां आयोजित करीं परंतु उनमें बहुत कम लोग आये।

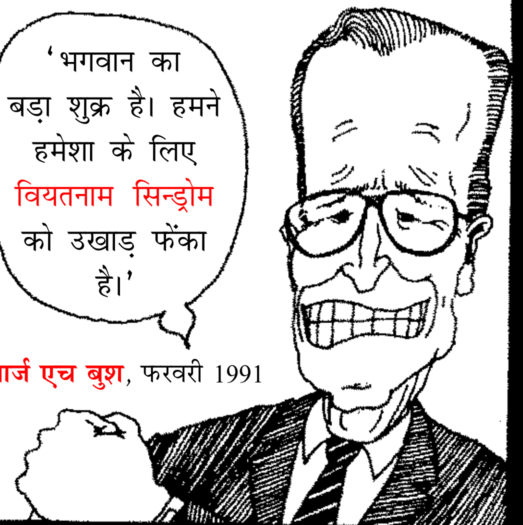


जब बम्ब गिरने लगे तब युद्ध को समर्थन देने वाला मीडिया बहुत से लोगों को यह मनवाने में सफल हुआ कि युद्ध के विरोध से अमरीकी सैनिक खतरे में पड़ जायेंगे।





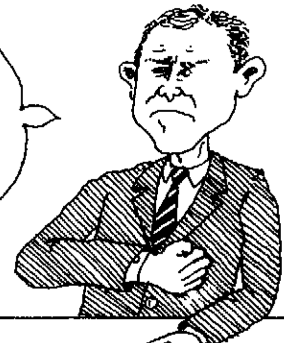
जार्ज बुश के पिता को पता था कि उन्हें युद्ध को कम-से-कम मृतकों की संख्या के साथ जल्दी खत्म करना पड़ेगा नहीं तो लोग उनके विरोध में उठ खड़े होंगे। जब इराक ने लड़ने के बजाए हथियार डाल दिए तब युद्ध में एक-तरफा नरसंहार हुआ तो उससे बुश बहुत प्रसन्न हुए।



जार्ज डब्लू बुश अपने पिता के प्रस्ताव का परीक्षण करना चाहते थे। उन्होंने लागों से आतंकवाद के खिलाफ एक लम्बे और भयावय युद्ध का वादा किया था जिसमें बहुत से लोगों के हताहत होने की आशंका थी। अफगानिस्तान में युद्ध आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई की बस शुरुआत थी।

140

'युद्ध कई प्रकार के होते हैं। जब कभी कोई किसी स्थापित सरकार को डराता-धमकाता है, तब युद्ध अनिवार्य हो जाता है।'



जार्ज डब्लू बुश (अक्टूबर 17, 2001)

141

अगर बुश इस कार्य को गम्भीरता से लेंगे तो हमें हमेशा चलने वाला युद्ध झेलना होगा। आतंकवादी गतिविधियां लगभग युद्ध जितनी ही पुरानी हैं और हमारे जीवन काल में उनका अंत होना सम्भव नहीं लगता। हो सकता है कि बुश के शब्द आडम्बर से परिपूर्ण हों। हो सकता है बुश और उसके सलाहकारों ने कभी न खत्म होने वाले युद्धों की एक लंबी श्रृंखला शुरू करने की योजना रची हो जिसमें वो एक के बाद दूसरे देश पर बम्ब बरसायेंगे।

इसके प्रतिकार में अमरीका को और हमले झेलने पड़ेंगे!



ऐसा लगता है कि डिक चेनी इस चुनौती के लिए पूरी तरह से तैयार हैं। अपने गोपनीय बंकर में से निकलकर उन्होंने कहा कि **आतंकवाद पर युद्ध** बहुत लम्बे अर्से तक चलेगा।



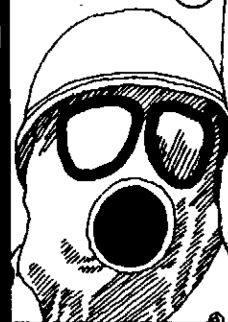
142

'वो हमारे जीवनकाल में तो खत्म नहीं होगा।'

चेनी, 2001

इस कभी न अंत होने वाले युद्ध के लिए चेनी के अनुसार हमें आतंकवादी हमले झेलने को तैयार रहना चाहिए।?

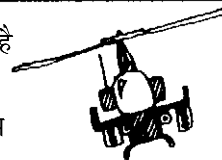
143



'इतिहास में शायद पहली बार हम विदेशों में अमरीकी सैनिकों की तुलना में अपने देश में ज्यादा लोगों को हताहत होते देखेंगे।'

चेनी, 2001

इसका मतलब साफ है – हमें और अधिक कड़े सुरक्षात्मक कदम उठाने पड़ेंगे और मानवाधिकारों को त्यागना होगा।



'इसके लिए हमें उपयुक्त कदम उठाने होंगे। वो धीरे-धीरे हमारी जीवनशैली का अभिन्न अंग बन जायेंगे।'



144

सितम्बर 11 के हिंसात्मक आतंकवादी आक्रमण ने अमरीकियों के दिलों को हिला कर रख दिया। बुश के लड़ाकू शब्द लोगों के कानों में गूंजने लगे। पर अगर **आतंकवाद पर युद्ध** बढ़ेगा तो कोरियाई और वियतनामी युद्धों की तरह उसको भी लोगों का कम समर्थन मिलेगा? बुश को इसका डर है।



'धीरे-धीरे लोग **आतंकवाद पर युद्ध** से तंग आ जायेंगे।'

जार्ज डब्लू बुश (अक्टूबर 17, 2001)

145

बुश और चेनी ने एक धूमिल भविष्य की कल्पना रची है जो युद्धों से भरा है। उसके प्रतिकार में और आतंकवादी आक्रमण होंगे, जिससे और युद्ध छिड़ेंगे, जिससे और आंतकवादी हमले होंगे। समझदार लोग कभी भी हिंसा और प्रतिकार के इस रास्ते को नहीं चुनेंगे।



अफगानिस्तान पर अमरीकी युद्ध के खिलाफ हजारों लोगों ने वाशिंगटन डीसी में मोर्चा संभाला (सितम्बर 2001)

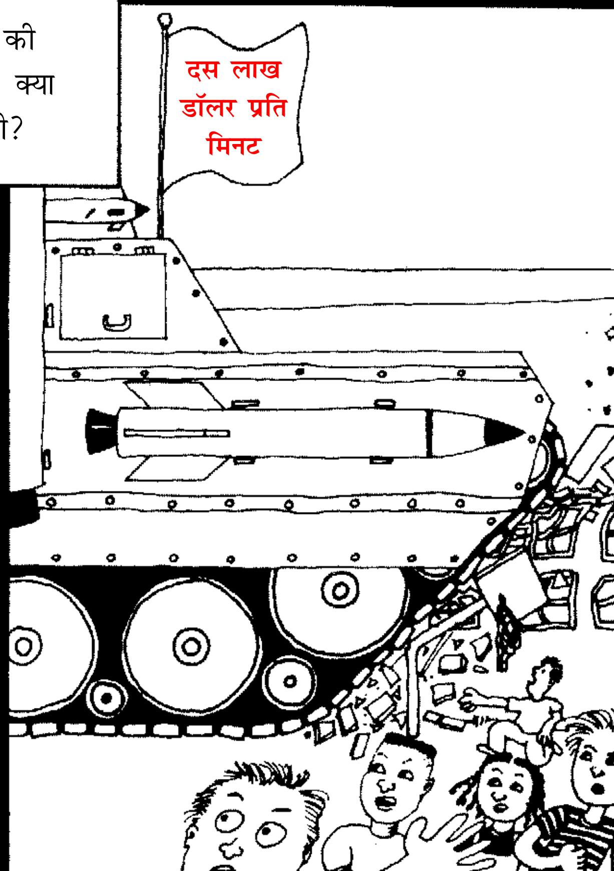
'आतंकवाद पर युद्ध' दरअसल लड़ाई जारी रखने का एक शर्मनाक बहाना है। इस प्रकार के लगातार युद्धों में साम्राज्यवाद की बू बसी है। क्या हम वास्तव में इस नीच परम्परा को जारी रखना चाहते हैं?

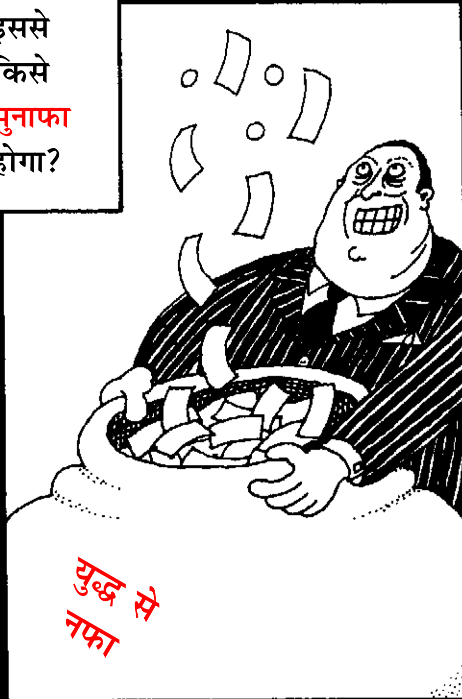


युद्ध से इस प्रकार का **घनिष्ठ लगाव** अमरीका और सारी दुनिया को कहां ले जायेगा?



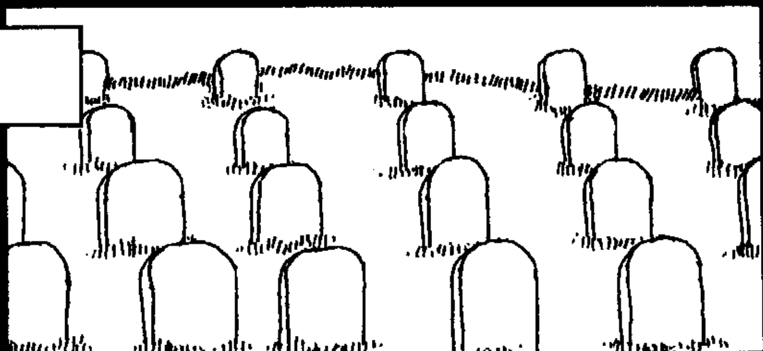
युद्ध की **कीमत** क्या होगी?







और इसमें कौन मरेगा?



इसके बारे में सोचें। इसके बारे में जल्द कुछ करें!



Listed below are some of the many groups conducting anti-militarist education and organizing anti-war activities in the U.S. Feel free to contact any of them.

American Friends Service Committee
1501 Cherry Street, Philadelphia, PA 19102
Tel: 215-241-7000; Fax: 215-241-7177
Email: afscinfo@afsc.org
Website: www.afsc.org
Founded in 1917, AFSC is a Quaker organization that includes people of various faiths committed to peace and humanitarian service.

Central Committee of Conscientious Objectors
1515 Cherry Street, Philadelphia, PA 19102
Tel: 215-563-8787; Toll Free: 1-800-NOJROTC
G.I Rights Hotline: 1-800-394-9544
Website: www.objector.org
The CCCO promotes individual and collective resistance to war and preparations for war. It has been active since 1948.

Global Peace Campaign
1047 Naka, Kamogawa, Chiba, Japan 296-0111
Tel: 81-470-97-1011; Fax: 81-470-97-1215
Email: yumik@awa.or.jp
Website: www.peace2001.org
GPC supports anti-war education in the United States and Japan.

Global Exchange
2017 Mission Street #303
San Francisco, CA 94110
Tel: 415-255-7296; Fax: 415-255-7498
Website: www.globalexchange.org
Global Exchange conducts corporate accountability campaigns, anti-war work, and green economy promotion.

International Action Center
39 W. 14th St. # 206, New York, NY 10011
Tel: 212-633-6646; Fax: 212-633-2889
Email: iacenter@iacenter.org
Website: www.iacenter.org
IAC provides information and organizes resistance to U.S. militarism, war, and corporate greed.

Not in Our Name
Tel: 212-969-8058
Email: info@notinourname.net
Website: www.notinourname.net
NION is a creative coalition of anti-war activists that has grown into one of the most formidable resistance efforts since the Vietnam War.

Peace Action
1819 H. Street NW, Suite #420 and #425, Washington, DC 20006
Phone: 202-862-9740; Fax: 202-862-9762
Website: www.peace-action.org
Peace Action (formerly SANE/Freeze) works to achieve the abolition of nuclear weapons, the development of a peace-oriented economy, and an end to the international weapons trade.

Teaching for Change
PO Box 73038; Washington, DC 20056
Toll Free: 1-800-763-9131
Tel: 202-588-7204; Fax: 202-238-0109
Email: tfe@teachingforchange.org
Website: www.teachingforchange.org
Teaching for Change promotes social and economic justice through public education.

Veterans for Peace
438 N. Skinker
St. Louis, MO. 63130
Tel: 314-725-6005
Email: vfp@igc.org
Website: www.veteransforpeace.org
VFP is an organization of men and women who served in the military and who now work toward abolishing war.

War Resisters League
339 Lafayette Street
New York, NY 10012
Tel: 212-228-0450
Email: wrl@warresisters.org
Website: www.warresisters.org
WRL is a pacifist organization founded in 1923. It produces educational resources (including 'The Nonviolent Activist' magazine) and works in coalition with other peace and justice groups.

Women's International League for Peace and Freedom
1213 Race Street, Philadelphia, PA 19107
Tel: 215-563-7110
Fax: 215-563-5527
Email: wilpf@wilpf.org
Website: www.wilpf.org
WILPF works to achieve world disarmament, full rights for women, racial and economic justice, and an end to all forms of violence.

Reference Notes

1. For updated information on the U.S. military budget, see Center for Defense Information, www.cdi.org/issues/budget.
2. Giles cited in Howard Zinn, *A People's History of the United States* (New York: Harper-Collins, 1980), p. 153.
3. Zinn, pp. 125–146; Dee Brown, *Bury My Heart at Wounded Knee: An Indian History of the American West* (New York: Holt, Rinehart and Winston, 1971).
4. Black Elk cited in Brown, p. 419.
5. Zinn, pp. 147–166.
6. Denby cited in David Healy, *U.S. Expansionism: The Imperialist Urge in the 1890s* (Madison, WI: University of Wisconsin, 1970), pp. 122–123.
7. Platt cited in Healy, p. 173.
8. Roosevelt cited in Zinn, p. 290.
9. Zinn, pp. 290–305; Beveridge cited in Zinn, p. 306.
10. Beveridge cited in Healy, p. 174.
11. Beveridge cited in Rubin Westin, *Racism in U.S. Imperialism* (Columbia, SC: University of South Carolina, 1972), p. 46.
12. Zinn, pp. 305–313; Michael Parenti, *The Sword and the Dollar* (New York: St. Martins Press, 1989), pp. 42–43.
13. Zinn, pp. 290–305.
14. Hawaii: Joseph Gerson, "The Sun Never Sets," in Joseph Gerson, ed., *The Sun Never Sets—Confronting the Network of Foreign U.S. Military Bases* (Boston: South End Press, 1991), pp. 6,10; Panama: T. Harry Williams, et al., *A History of the United States [Since 1865]*, 2nd edition (New York: Alfred A. Knopf, 1965), pp. 372–373.
15. David Cooney, *A Chronology of the U.S. Navy: 1775–1965* (New York: Franklin Watts, 1965), pp. 181–257.
16. Catherine Sunshine, *The Caribbean: Struggle, Survival and Sovereignty* (Boston: South End Press, 1985), p. 32.
17. George Black, *The Good Neighbor* (New York: Pantheon Books, 1988), pp. 31–58; Sunshine, pp. 28–34.
18. Taft cited in William Appleman Williams, *Americans in a Changing World: A History of the U.S. in a Changing World* (New York: Harper and Row, 1978), pp. 123–124.
19. Report cited in Westin, p. 226.
20. Sunshine, p. 83.
21. Butler cited in Joyce Brabner, "War Is a Racket," *Real War Stories, No. 2* (Forestville, CA: Eclipse, 1991).
22. Page cited in William Foster, *Outline Political History of the Americas* (New York: International Publishers, 1951), p. 362.
23. Foster, p. 360.
24. Butler cited in Brabner.
25. CFR/State Department policy statement cited in Lawrence Shoup and William Minter, *Imperial Brain Trust: The Council on Foreign Relations and U.S. Foreign Policy* (New York: Monthly Review, 1977), p. 130.
26. CFR memorandum cited in Shoup and Minter, p. 170.
27. *Hiroshima-Nagasaki: A Pictorial Record of the Atomic Destruction* (Tokyo: Hiroshima-Nagasaki Publishing Committee, 1978), p. 17.
28. Truman cited in Paul Boyer, *By the Bombs Early Light: American Thought and Culture at the Dawn of the Atomic Age* (New York: Pantheon, 1985).
29. The bombing was also intended to preempt Soviet involvement in the war against Japan: Zinn, pp. 413–415.
30. Welch cited in Victor Perlo, *Militarism and Industry: Arms Profiteering in the Missile Age* (New York: International Publishers, 1963), p. 144.
31. Gerson, p. 12.
32. Korea International War Crimes Tribunal, "Report on U.S. Crimes in Korea: 1945–2001," (Washington, D.C.: Korea Truth Commission Task Force, 2001), p. xi; *Encyclopedia Britannica*, 1967 ed., V. 13, p. 475; *Selected Manpower Statistics, Fiscal Year 1984* (Washington D.C.: Dept. of Defense, 1985), p. 111.
33. Sunshine, p. 142; Black, p. 118.
34. Noam Chomsky, "Patterns of Intervention," in Joseph Gerson, ed., *The Deadly Connection: Nuclear War and U.S. Intervention* (Philadelphia: New Society, 1986), p. 66; Zinn, p. 469; Sean Murphy et al, *No Fire, No Thunder: The Threat of Chemical and Biological Weapons* (New York: Monthly Review, 1984), pp. 22–24, 64, 78–79; Parenti, p. 44; *Selected Manpower Statistics;* Marilyn Young, *The Vietnam Wars: 1945–1990* (New York: Harper-Collins, 1991).
35. Robert Fisk, *Pity the Nation: Lebanon at War* (Oxford University Press, 1992); Sandra Mackey, *Lebanon: Death of a Nation* (New York: Congdon & Weed, 1989).
36. Black, p. 156.
37. Schultz cited in Black, p. 156.
38. Noam Chomsky, *The Culture of Terrorism* (Boston: South End Press, 1988), p. 29; Associated Press "Libyan Court Wants Americans Arrested for 1986 Bombing," March 22, 1999.
39. Noam Chomsky, *Fateful Triangle: The United States, Israel & The Palestinians* (Cambridge, MA: South End Press, 1999).

40. William Blum, *Killing Hope: U.S. Military and CIA Interventions Since World War II* (Monroe, ME: Common Courage Press, 1995).
41. Jack Nelson-Pallmeyer, *School of Assassins* (Maryknoll, NY: Orbis Books, 1999)
42. Charles Bergquist, et al., *Violence in Colombia: The Contemporary Crisis in Historical Perspective* (Wilmington, DE: Scholarly Resources, 1992); W. M. LeoGrande and K. Sharpe, "A Plan, But No Clear Objective," *Washington Post*, April 1, 2001, p. B02; Mark Cook, "Colombia, the Politics of Escalation," *Covert Action Quarterly*, Fall/Winter 1999, No. 68.
43. Peter Wyden, *Bay of Pigs: The Untold Story* (New York: Simon and Schuster, 1979).
44. Richard Leonard, *South Africa at War: White Power and the Crisis in Southern Africa* (Westport, CT: Lawrence Hill, 1983); Richard Bloomfield, ed., *Regional Conflict and U.S. Policy: Angola and Mozambique* (Algonac, MI: Reference Publications, 1988); Alex Vines, *RENAMO: Terrorism and Mozambique* (Bloomington, IN: Indiana University Press, 1991); Joseph Hanlon and James Currey, *Mozambique: Who Calls the Shots?* (London: Zed, 1991).
45. Reagan cited in Black, p. 170.
46. John K. Cooley, "*Unholy Wars: Afghanistan, America and International Terrorism*," (London: Pluto Press, 2000).
47. David Barsamian interviews Eqbal Ahmad, *The Progressive*, Nov. 1998.
48. NSC document cited in *New York Times*, Feb. 23, 1991.
49. Doug Ireland, "Press Clips," *Village Voice*, Nov. 13, 1990.
50. Tim Wheeler, "Reagan, Noriega and Citicorp," *People's Daily World*, Feb. 25, 1988, p. 14A.
51. Kenneth Sharpe and Joseph Treaster, "Cocaine Is Again Surging Out of Panama," *New York Times*, Aug. 13, 1991, p. A1.
52. Tom Wicker, "What Price Panama?," *New York Times*, June 15, 1990; Nathaniel Sheppard, Jr., "Year Later, Panama Still Aches," *Chicago Tribune*, Dec. 16, 1990, p. 1; Associated Press, "Ex-Senator Says U.S. Massacred Panamanians" *Chicago Tribune*, Nov. 15, 1990.
53. Unnamed advisor cited in *Time*, Aug. 20, 1990.
54. State Department statement cited in Joseph Gerson, et al., "The U.S. in the Middle East," *Deadly Connection*, p. 167.
55. Michael Tanzer, *The Energy Crisis: World Struggle for Power and Wealth* (New York: Monthly Review, 1974).
56. Kissinger cited in Hans von Sponek and Denis Halliday, "The Hostage Nation," *The Guardian*, Nov. 29, 2001.
57. Carter cited in Michael Klare, *Beyond the "Vietnam Syndrome:" U.S Intervention in the 1980's* (Washington, D.C.: Institute for Policy Studies, 1980), p. 30.
58. Clyde Farnsworth, "Military Exports to Iraq Under Scrutiny, Congressional Aides Say," *New York Times*, June 24, 1991; Michael Klare, "Behind Desert Storm: The New Military Paradigm," *Technology Review*, May-June 1991, p. 36; Philip Shenon, "Declaration Lists Companies That Sold Chemicals to Iraq," *New York Times*, Dec. 21, 2002; Christopher Dickey and Evan Thomas, "How Saddam Happened," *Newsweek*, Sept. 23, 2002.
59. Philip Green "Who Really Shot Down Flight 655," *The Nation*, Aug. 13–20, 1988, pp. 125–126.
60. Glaspie cited in Christopher Hitchins, "Real Politics in the Gulf: A Game Gone Tilt," in Micah Sifry and C. Cerf, eds., *Gulf War Reader: History, Documents, Opinions* (New York: Times Books / Random House, 1991), pp. 116–117.
61. Hitchins; Bush cited in *Newsweek*, Jan. 7, 1991, p.19.
62. Michael Klare, "High Death Weapons of the Gulf War," *The Nation*, June 3, 1991; Malcolm Browne, "Allies Are Said to Choose Napalm for Strikes on Iraqi Fortifications," *New York Times*, Feb. 23, 1991; John Donnelly, "Iraqi cancers offer clues to Gulf War Syndrome: Uranium residue a prime suspect," *Miami Herald*, April 6, 1998
63. Mark Fireman, "Eyewitnesses Report Misery, Devastation in the Cities of Iraq," *Seattle Times*, Feb. 5, 1991; George Esper, "500 Die in Bombed Shelter in Baghdad," *Chicago Sun Times*, Feb. 13, 1991; David Evans, "Study: Hyperwar Devastated Iraq," *Chicago Tribune*, May 29, 1991.
64. "War Summary: Closing the Gate," *New York Times*, Feb. 28, 1991, p. A6; Associated Press, "Army Tanks Buried Iraqi Soldiers Alive," *Greeley Tribune*, Sept. 12, 1991.
65. Bush cited in Robert Borosage, "How Bush kept the guns from turning into butter," *Rolling Stone*, Feb. 21, 1991, p. 20.
66. Ramsey Clark, *The Fire This Time: U.S. War Crimes in the Gulf* (New York: International Action Center, 2002) pp. 64–64, 209; Thomas J. Nagy, "The Secret Behind the Sanctions: How the U.S. Intentionally Destroyed Iraq's Water Supply," *The Progressive*, Sept. 2001.
67. John Pilger, "Collateral Damage," in Anthony Arnove, ed., *Iraq Under Siege: The Deadly Impact of Sanctions and War* (Cambridge, MA: South End Press, 2000) pp. 59–66.
68. Thomas Hayes, "Oil's Inconvenient Bonanza," *New York Times*, Jan. 27, 1991, p. F4.
69. Tanzer.

सक्षिप्त इतिहास... सटीक, स्पष्ट और शक्तिशाली!

(गहरे शोध पर आधारित, 145 संदर्भों के साथ)

– 'लड़ाई से लगाव अमरीकी मिलेट्री मनसूबों का दिल दहलाने वाला दस्तावेज है।'

– हावर्ड झिन – लेखक – *ए पीपल्स हिस्ट्री ऑफ द युनायटेड स्टेट्स*

'द्वितीय महायुद्ध, वियतनाम जैसे तीन युद्धों के अनुभव और 33 वर्ष फौजी नौकरी करने के बाद मैं दावे से कह सकता हूं कि यह पुस्तक अमरीकी मनसूबों का सबसे सच्चा और सटीक वर्णन है।'

– कर्नल जेम्स बुर्कहोल्डर, भूतपूर्व अमरीकी फौजी

'अमरीका की आपराधिक सैनिक कार्यवाही की कल्पना भी करना मुश्किल है। यह किताब उसे समझने में मदद देती है। अब हमें उस पर कुछ ठोस कार्यवाई करनी चाहिए।'

– रैमसे क्लार्क, अमरीका के भूतपूर्व अनर्टी जनरल एवं *द फॉयर ऑफ दिस टाइम* के लेखक

'अमरीकी आबादी दुनिया की केवल साढ़े चार प्रतिशत है फिर भी यह अहंकारी देश अपने खर्चीले तरीकों के लिए दुनिया भर के संसाधनों और संस्कृतियों को लूट रहा है। यह पुस्तक दिखाती है कि अमरीकी उपभोक्ता संस्कृती के पोषण के लिए युद्ध एकदम अनिवार्य और जरूरी है।'

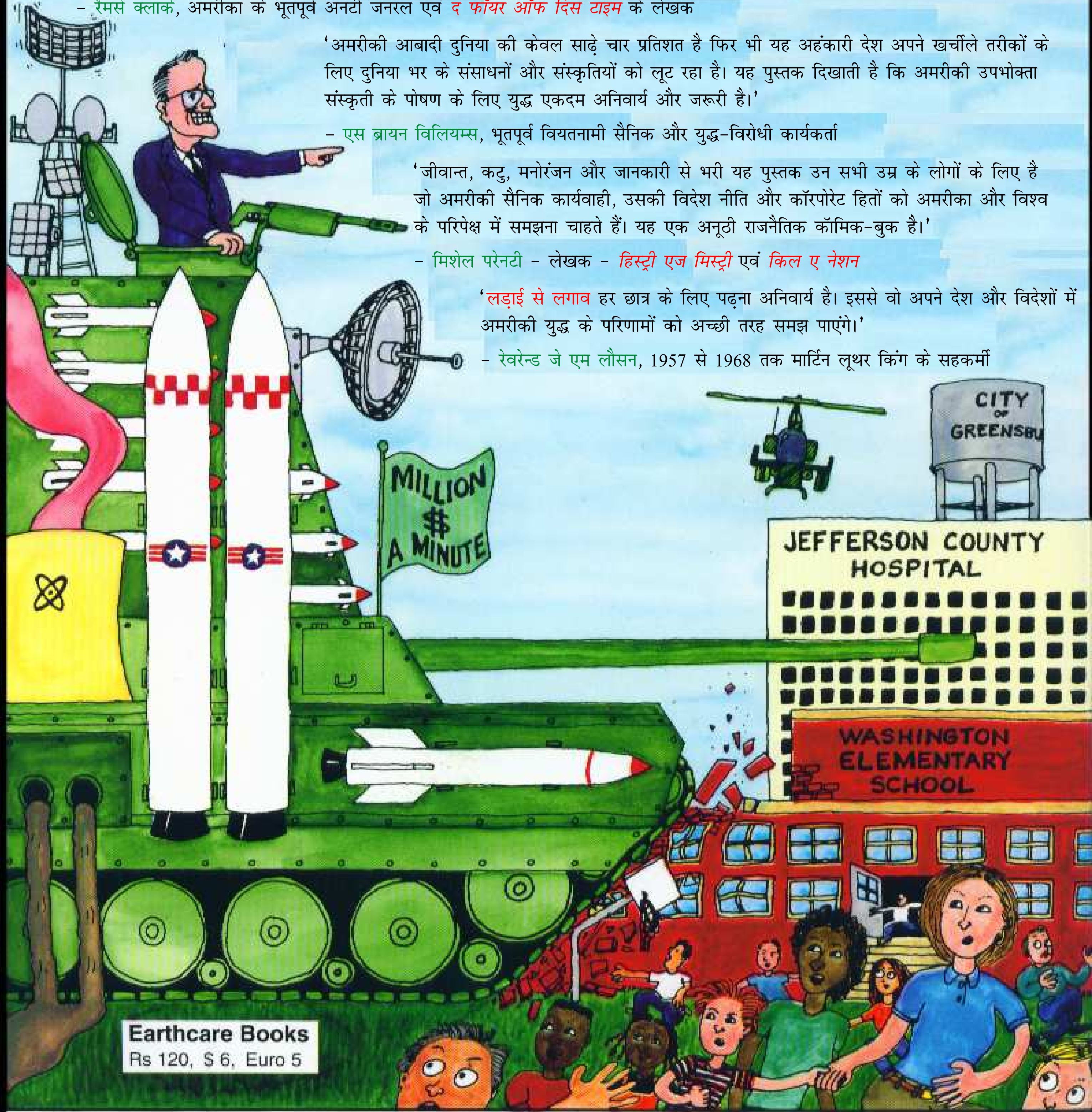
– एस ब्रायन विलियम्स, भूतपूर्व वियतनामी सैनिक और युद्ध-विरोधी कार्यकर्ता

'जीवान्त, कटु, मनोरंजन और जानकारी से भरी यह पुस्तक उन सभी उम्र के लोगों के लिए है जो अमरीकी सैनिक कार्यवाही, उसकी विदेश नीति और कॉरपोरेट हितों को अमरीका और विश्व के परिपेक्ष में समझना चाहते हैं। यह एक अनूठी राजनैतिक कॉमिक-बुक है।'

– मिशेल परेनटी – लेखक – *हिस्ट्री एज मिस्ट्री* एवं *किल ए नेशन*

'लड़ाई से लगाव हर छात्र के लिए पढ़ना अनिवार्य है। इससे वो अपने देश और विदेशों में अमरीकी युद्ध के परिणामों को अच्छी तरह समझ पाएंगे।'

– रेवरेन्ड जे एम लौसन, 1957 से 1968 तक मार्टिन लूथर किंग के सहकर्मी



Earthcare Books
Rs 120, $ 6, Euro 5